नई दिल्ली RNI NO. DELHIN/2010/37009

वर्षः 12

अंकः 35

सोमवार, 26 सितंबर-2 अक्टूबर, 2022

मूल्यः 5 रु प्रति

रु 250 वार्षिक

सागर में नगरीय निकाय चुनाव में भाजपा के 326 में से 262 स्थानों पर विजय 03

पीएफआई पर प्रतिबंध लगने से जो नेता आंसू बहा रहे हैं, देश उन्हें माफ नहीं करेगा 08

NCR समाचार

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार संगठन में चीन, रूस को लेकर पश्चिमी देशों की कड़ी परीक्षा 10

एलड्रिन ने श्रीशंकर को पछाड़कर लंबी कूद का स्वर्ण जीता, अमलान और ज्योति 100 मीटर के चैम्पियन 11

इस्माईल खान

www.ncrsamacharlive.in

BY C.R.O. TEAM

twitter-@ncrsamacharlive

भारत का नं 1 साप्ताहिक समाचार पत्र

'रामायण' फेम अरुण गोविल को भगवान राम समझकर भावुक हुई महिला, एयरपोर्ट पर छूने लगी पैर 12

देश में 5जी सेवा की हुई शुरुआत

प्रधानमंत्री ने बताया नए युग की शुरुआत

एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अत्यधिक तीव्र गति की इंटरनेट सुविधा देने वाली 5जी सेवा की शनिवार को शुरुआत करते हुए कहा कि यह एक नए युग की शुरुआत होने के साथ व्यापक अवसरों को भी प्रदर्शित करता है। प्रधानमंत्री ने यहां आयोजित इंडियन मोबाइल कांग्रेस 2022(आईएमसी) में देश के कुछ चुनिंदा शहरों में 5जी इंटरनेट सेवाओं का उद्घाटन किया। अगले दो साल में इस सेवा का विस्तार समूचे देश में किए जाने की योजना है। देश की दूसरी बड़ी दूरसंचार कंपनी भारती एयरटेल ने दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु एवं वाराणसी समेत आठ शहरों में 5जी सेवाओं की पेशकश करनी शुरू कर दी है। वहीं देश की सबसे बड़ी दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो दीपावली तक चार मेट्रो शहरों में 5जी सेवा शुरू करेगी जबकि वोडाफोन आइडिया ने इसकी शुरुआत की अभी कोई समयसीमा नहीं दी है। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम

को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि देश दूरसंचार की 2जी, 3जी एवं 4जी प्रौद्योगिकी के लिए दूसरे देशों पर निर्भर था लेकिन 5जी सेवा के मामले में देश ने इतिहास रच दिया है। उन्होंने कहा, ''5जी एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है और इससे बेशुमार अवसर पैदा होने की संभावना है।'' प्रधानमंत्री ने कहा कि उनकी सरकार का डिजिटल इंडिया का संकल्प चार स्तंभों- उपकरण की लागत, डिजिटल कनेक्टिविटी, डेटा लागत एवं डिजिटल-फर्स्ट दृष्टिकोण पर आधारित था। उन्होंने कहा कि इस नजरिये की ही वजह से आज देश में मोबाइल फोन बनाने वाले संयंत्रों की संख्या 200 से अधिक हो चुकी है जबकि वर्ष 2014 में सिर्फ दो संयंत्र थे। उन्होंने भारत में डेटा शुल्क को दुनिया भर में सबसे कम बताते हुए कहा कि वर्ष 2014 में एक जीबी डेटा के लिए 300 रुपये खर्च करने पड़ते थे लेकिन अब उसी डेटा का शुल्क 10 रुपये तक आ चुका है। उन्होंने कहा कि एक व्यक्ति औसतन 14 जीबी डेटा की मासिक खपत करता है जिस पर उसकी लागत 125-150 रुपये तक आती है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री ने कहा कि देश अब करोड़ों रुपये मूल्य के मोबाइल फोन का निर्यात भी कर रहा है जबकि पहले उसे आयात करना पड़ता था। इसके साथ ही उन्होंने डिजिटल भुगतान में आई तेजी का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी अब सही मायने में विकेंद्रित हो चुकी है। उन्होंने पूर्ववर्ती संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि मौजूदा सरकार के सही मंशा से उठाए गए कदमों की वजह से ही ऐसा संभव हो पाया। प्रधानमंत्री ने 2जी स्पेक्ट्रम आवंटन को लेकर हुए विवाद की तरफ इशारा करते हुए कहा, ''2जी की नीयत और 5जी की नीयत में यही फर्क है।'' पांचवीं पीढ़ी की मोबाइल सेवा यानी 5जी प्रौद्योगिकी की मदद से अत्यधिक तीव्र गति वाली इंटरनेट सुविधा मुहैया कराई जा सकेगी। इससे दूरदराज के इलाकों तक नई तरह की आर्थिक एवं सामाजिक सुविधाएं पहुंचाई जा सकेंगी। प्रधानमंत्री ने एक बटन दबाकर 5जी सेवा की शुरुआत की। इस मौके पर 5जी सेवाएं देने वाले तीनों दूरसंचार सेवा प्रदाताओं ने भारत में इस प्रौद्योगिकी के संभावित लाभों के बारे में प्रस्तुति भी दी।

'गाय माता के रखरखाव के लिए हर दिन देंगे 40 रुपये': केजरीवाल

एजेंसी

आगामी गुजरात विधानसभा चुनाव को लेकर दिल्ली के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल लगातार राज्य का दौरा कर रहे हैं। वह हर वर्ग के लोगों को अलग-अलग गारंटी दे रहे हैं। जैसे युवाओं को रोजगार की गारंटी। इसके अलावा महिलाओं को पेंशन की गारंटी। साथ ही साथ मुफ्त बिजली, पानी और शिक्षा की गारंटी। अब केजरीवाल ने गाय माता को लेकर भी गारंटी दे दी है।

केजरीवाल ने साफ तौर पर ऐलान किया है कि गुजरात में आम आदमी पार्टी की सरकार बनने के बाद गाय माता के रखरखाव के लिए सरकार की ओर से प्रति गाय के हिसाब से 1 दिन का 40 रुपये देंगे। इसके साथ ही केजरीवाल ने कहा कि जो गाय दूध देना बंद कर देती हैं और सड़कों पर घूमने लगती हैं उनके लिए पंजारा पोल मनाएंगे। उन्होंने आरोप लगाया कि गुजरात में गायों की अनदेखी हो रही है। हम गायों की देखभाल के लिए हर कदम उठाएंगे। इसके साथ ही अरविंद

केजरीवाल ने दावा किया कि आईबी की रिपोर्ट में बड़ा खुलासा हुआ है। उन्होंने कहा है कि सूत्रों ने बताया है कि आज अगर गुजरात में चुनाव हो तो आम आदमी पार्टी की सरकार बन रही है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि रिपोर्ट से बुरी तरह बौखलाई भाजपा-कांग्रेस के साथ है। सेक्रेट मीटिंग कर रही है। केजरीवाल ने दावा किया कि भाजपा का प्रयास कांग्रेस को मजबूत कर एंटी बीजेपी वोटों को बांटना है। इसके अलावा कांग्रेस की जिम्मेदारी है कि आप के वोट को काटना है। इसके साथ ही केजरीवाल ने उससे ऑटो रिक्शा वाले को लेकर भी अपना जवाब दिया। उन्होंने कहा कि अच्छी बात यह है कि बीजेपी वाले भी मुझे खाने के लिए बुलाते हैं। अपने नेता को नहीं। हम सब से प्यार करते हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि अगर हमारी सरकार बनती है तो कांग्रेस-बीजेपी वालों का भी बिजली माफ करेंगे। उनके बच्चों के लिए भी स्कूल बनाएंगे। कांग्रेस पर हमला करते हुए केजरीवाल ने कहा कि गोवा में कांग्रेस के 11 विधायक थे 8 भाजपा में शामिल हो गए। आम आदमी पार्टी के 2 विधायक हैं और दोनों आम आदमी पार्टी में ही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस तो बीजेपी की जेब में बैठी है। जब बीजेपी चाहती है उतने एमएलए खरीद लेती है। बाकी स्टॉक में रखती हैं।

ऐसे समाज का निर्माण करें जिसमें महिलाओं का अधिक सम्मान हो: मुर्मू

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने दुर्गापूजा के पावन अवसर पर रविवार को देशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए उनसे एक ऐसे समाज के निर्माण की अपील की, जिसमें महिलाओं को और अधिक सम्मान मिले तथा ये (महिलाएं) राष्ट्रनिर्माण में समान रूप से योगदान करने में सक्षम हों।

मुर्मू ने अपने संदेश में कहा, ''दुर्गा पूजा के पावन अवसर पर, मैं, भारत और विदेश में रह रहे सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूं।'' उन्होंने कहा कि मां दुर्गा शक्ति स्वरूपा हैं और इनकी पूजा नारी-शक्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने का अवसर भी है तथा सही अर्थों में उसी समाज को आधुनिक, विकसित और न्याय पूर्ण माना जा सकता है, जहां हर स्तर पर नारी सशक्तीकरण का वातावरण हो। उन्होंने कहा कि देवी दुर्गा के नौ रूप,

प्रकृति की असीम शक्ति का प्रतीक हैं।'' उन्होंने कहा, ''मेरी कामना है कि दुर्गा पूजा के माध्यम से हमारे समाज में एकता और भाईचारे की भावना सुदृढ़ हो। हम एक ऐसे समाज का निर्माण करें, जिसमें महिलाओं का और अधिक सम्मान हो और वे राष्ट्र निर्माण में समान रूप से योगदान करने में सक्षम हों।'' राष्ट्रपति ने कहा, ''जगत जननी मां दुर्गा से मेरी प्रार्थना है कि उनकी कृपा हम सभी पर बनी रहे और सभी देशवासी खुशहाली और समृद्धि का जीवन जीते रहें।

महात्मा गांधी की विरासत को हथियाना बहुत आसान, लेकिन उनके पदचिह्नों पर चलना मुश्किलः राहुल

एजेंसी

बदनवालु (कर्नाटक)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को महात्मा गांधी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी और कहा कि सत्ता में बैठे लोगों के लिए महात्मा गांधी की विरासत को ''हथियाना'' आसान है, लेकिन उनके पदचिह्नों पर चलना मुश्किल है।

राहुल ने एक खादी ग्रामोद्योग केंद्र का दौरा करने के बाद कहा कि महात्मा गांधी की हत्या करने वाली विचारधारा ने पिछले आठ वर्षों में असमानता, विभाजन और कड़ी मेहनत से हासिल की गई आजादी का क्षरण किया है। महात्मा गांधी ने 1927 में इस केंद्र का दौरा किया था। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष ने एक बयान में कहा, ''हम भारत के महान सपूत को याद करते हैं तथा उन्हें श्रद्धांजलि देते हैं। हमारे इस स्मरण ने इस बात को और मर्मस्पर्शी बना दिया है कि हम भारत जोड़ो यात्रा के

25वें दिन में यात्रा पर हैं, ऐसी पदयात्रा जिसमें हम उनके अहिंसा, एकजुटता, समानता और न्याय के पथ पर चल रहे हैं।'' उन्होंने कहा, ''जिस तरह से गांधी जी ने ब्रिटिश राज से लड़ाई लड़ी, वैसे ही हमने गांधी की हत्या करने वाली विचारधारा से लड़ने की शुरुआत की है। इस विचारधारा ने पिछले आठ वर्ष में असमानता, विभाजन और कड़ी मेहनत से हासिल की गयी आजादी का क्षरण किया है। हिंसा तथा असत्य की इस राजनीति के खिलाफ, भारत जोड़ो यात्रा कन्याकुमारी से कश्मीर तक अहिंसा और स्वराज के संदेश को फैलाएगी।'' राहुल ने कहा कि कांग्रेस की यात्रा भय, घृणा और विभाजन की राजनीति के खिलाफ भारतीय लोगों की शांत और दृढ़ आवाज है। उन्होंने कहा, ''सत्ता में बैठे लोगों के लिए गांधी जी की विरासत को हथियाना आसान है लेकिन उनके पदचिह्नों पर चलना कहीं ज्यादा मुश्किल है।'' कांग्रेस नेता ने एक प्रार्थना सभा में भी भाग लिया और खादी ग्रामोद्योग केंद्र में महिला बुनकरों से बातचीत की।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा-

पाकिस्तान जैसा आतंकवाद कोई और देश नहीं फैलाता

एजेंसी

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शनिवार को कहा कि कोई दूसरा देश उस तरह का आतंकवाद नहीं फैलाता, जैसा पाकिस्तान करता है। उन्होंने यहां ''राइजिंग इंडिया एंड द वर्ल्डः फॉरेन पॉलिसी इन मोदी एरा'' विषय पर कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार की कूटनीति ने अन्य देशों को आतंकवाद के मुद्दे को गंभीरता से लेने के लिए प्रेरित किया। जयशंकर ने कार्यक्रम के बाद दर्शकों के साथ बातचीत में कहा, ''कोई अन्य देश उस तरह से आतंकवाद का प्रसार नहीं करता, जैसा पाकिस्तान ने किया है। आप मुझे दिखा दें कि पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ इतने सालों में जो किया है, क्या दुनिया के किसी अन्य हिस्से में हुआ है? 26/11 के मुंबई हमले के बाद, हमारे लिए यह स्पष्ट हो जाना महत्वपूर्ण है कि इस तरह का व्यवहार और कार्रवाई अस्वीकार्य है और इसके परिणाम भुगतने ही होंगे।'' उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि भारत को 'आईटी (सूचना प्रौद्योगिकी) में विशेषज्ञ' माना जाता है, जबकि पड़ोसी देश को 'अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद में विशेषज्ञ' के रूप में जाना जाता है।

जयशंकर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने सफलतापूर्वक अन्य देशों को यह अहसास कराया कि अगर आतंकवाद पर अभी काबू नहीं पाया गया तो भविष्य में यह उन्हें भी नुकसान पहुंचा सकता है। विदेश मंत्री ने कहा, ''हम आतंकवाद के खिलाफ इस लड़ाई में दुनिया को साथ जाने में काफी हद तक सफल रहे हैं। पहले, अन्य देश इस मुद्दे को यह सोचकर नजरअंदाज कर देते थे कि इससे उन पर कोई असर नहीं पड़ेगा, क्योंकि यह कहीं और हो रहा है। आज आतंकवाद का समर्थन करने वालों पर दबाव है। यह हमारी कूटनीति का एक उदाहरण है।''

संक्षिप्त समाचार

पुलवामा में आतंकी हमला, एक पुलिसकर्मी शहीद, सर्च ऑपरेशन जारी

जम्मू कश्मीर के पुलवामा में एक बार फिर से आतंकवादियों ने अपनी नापाक साजिश को अंजाम देने की कोशिश की है। पुलवामा में आतंकवादियों ने एक बार फिर से आतंकी हमले की कोशिश की है। इस हमले में एक पुलिसकर्मी शहीद हुआ है जबकि सीआरपीएफ का एक जवान घायल हो गया है। फिलहाल पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। इलाके की घेराबंदी कर दी गई है। जम्मू कश्मीर पुलिस और सुरक्षाबलों के जवान आतंकवादियों की जांच कर रहे हैं। जानकारी में बताया गया है कि पुलवामा के पिंगलाना में CRPF और पुलिस की संयुक्त पार्टी पर आतंकियों ने फायरिंग की। इस आतंकी हमले में एक पुलिस कर्मी शहीद हो गया और CRPF का एक जवान घायल हो गया। अतिरिक्त सैन्य को भेजा गया है। क्षेत्र की घेराबंदी की जा रही है। आपको बता दें कि आतंकवादियों के खिलाफ जम्मू कश्मीर में इस वक्त ऑपरेशन ऑल आउट चल रहा है। इसके अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के दौरे को लेकर जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा के पुख्ता बंदोबस्त किए गए हैं। हालांकि, आतंकवादी लगातार इस कोशिश में है कि कहीं ना कहीं से उन्हें अपने नापाक मंसूबों को अंजाम देने का मौका मिल जाए।

मल्लिकार्जुन खड़गे को शशि थरूर की चुनौती

उनके जैसा नेता कांग्रेस पार्टी में नहीं ला सकता बदलावः शशि थरूर

एजेंसी

कांग्रेस अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर सरगर्मियां बढ़ती जा रही है। वर्तमान में मैदान में 2 उम्मीदवार इस वक्त दिखाई दे रहे हैं। एक ओर शशि थरूर हैं तो दूसरी ओर वरिष्ठ नेता मल्लिकार्जुन खड़गे हैं। अगर दोनों की ओर से नामांकन वापस नहीं लिया जाता है तो 17 अक्टूबर को कांग्रेस अध्यक्ष पद का मुकाबला इन्हीं दोनों के बीच होगा और उसके नतीजे 19 अक्टूबर को आएंगे।

लेकिन दोनों की ओर से प्रचार शुरू कर दिया गया है। आज शशि थरूर ने अपने चुनावी प्रचार की शुरुआत करते हुए साफ तौर पर कहा है कि मल्लिकार्जुन खड़गे पार्टी में बदलाव नहीं ला सकते हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से समर्थन की अपील करते हुए कहा कि आपकी उम्मीद के

मुताबिक पार्टी में बदलाव लाऊंगा। अपने बयान में शशि थरूर ने साफ तौर पर कहा हम दुश्मन नहीं हैं, यह युद्ध नहीं है। यह हमारी पार्टी के भविष्य का चुनाव है। खड़गे जी कांग्रेस पार्टी के टॉप 3 नेताओं में आते हैं। उनके जैसे नेता बदलाव नहीं ला सकते और मौजूदा व्यवस्था को जारी रखेंगे। पार्टी कार्यकर्ताओं की उम्मीद के मुताबिक बदलाव लाऊंगा। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने नागपुर में था कि मल्लिकार्जुन खड़गे का आत्मविश्वास अच्छा है। मुझे विश्वास है कि कुछ लोग भी हैं जो मेरी बात भी सुनेंगे। बड़े नेता स्वाभाविक रूप से पार्टी में अन्य बड़े नेताओं के साथ खड़े हो सकते हैं, लेकिन मेरे साथ विभिन्न राज्यों के पार्टी के कार्यकर्ता हैं। उन्होंने कहा कि हम बड़े नेताओं को सम्मान देते हैं लेकिन पार्टी में युवाओं को सुनने का समय आ गया है। हम पार्टी के संगठनात्मक ढांचे को बदलने के लिए काम करेंगे और पार्टी के कार्यकर्ताओं को यह महत्व दिया जाना चाहिए। वहीं, मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि पार्टी के कई वरिष्ठ नेताओं ने कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए मेरे नामांकन का समर्थन किया है। पार्टी के कई नेताओं ने मुझसे कहा कि मुझे चुनाव लड़ना चाहिए. उन्हीं के प्रोत्साहन से मैं आज चुनाव लड़ रहा हूं। उन्होंने कहा कि अब कोई G23 शिविर नहीं है। सभी नेता (G23 के) एकजुट रहने और भाजपा-आरएसएस के खिलाफ लड़ने के लिए मिलकर काम करना चाहते हैं। यही कारण है कि वे मेरा समर्थन कर रहे हैं। खड़गे ने कहा कि जिस दिन मैंने अपना नामांकन दाखिल किया, मैंने उदयपुर में लिए गए पार्टी के 'एक व्यक्ति एक पद' के फैसले के अनुरूप अपने पद से इस्तीफा दे दिया। मैं आज आधिकारिक तौर पर कांग्रेस पार्टी अध्यक्ष पद के लिए अपना अभियान शुरू करता हूं।

एनसीआर समाचार, साप्ताहिक समाचार पत्र में विज्ञापन के लिए संपर्क करें।

कार्यालयः
12/276, संगम विहार
नई दिल्ली-62

फोनः
8888883968,
9811111715

एनसीआर समाचार पत्र के
स्वामित्व/ प्रकाशन परिवर्तन के संबंध में

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अतः भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

संक्षिप्त समाचार

डीग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वर्षो से चाली आ रही पानी की समस्या का किया निवारण

राजस्थान जलदाय विभाग डीग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा वर्षो से चाली आ रही पानी की समस्या का किया गया निवारण डीग विगत कई महीनों से डींग में चली आ रही पानी की समस्या का जल जलदाय विभाग डींग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पुरानी बंद पड़ी पाइप लाइनों का पुन टेंडर कर नई पाइप लाइन डालकर निवारण किया जा रहा है। जलदाय विभाग के अधिशाषी अभियंता विजय सिंह, सहायक अभियंता इशू नारंग, सहायक अभियंता रविंद्र सिंह एवं कनिष्ठ अभियंता सोनू सैनी एवं अन्य कर्मचारी दानसिंह, अतर सिंह, ने अपना पूर्ण सहयोग कर डीग की जानता के लिए पानी की व्यवस्था की कुछ दिन पहले ही बयाना से ट्रांसफर होकर आए कनिष्ठ अभियंता सोनू सैनी ने बहुत जल्दी डीग शहर की पानी की व्यवस्था को अपने संज्ञान में लेकर प्रत्येक वार्ड से पानी की स्थिति का जायजा लिया। डीग के वार्ड नं 29 चौधरी का कटरा में सालों से चली आ रही समस्या का नई पाइप लाइन डालकर समस्या को दूर किया गया। इस मौक़े पर वार्ड 29 के लोगो भानु जोशी, मंगल सिंह धोबी, बंटी तंवर, पूरन चंद जोशी, राजेश चौहान, मुकेश चौहान, बृजेश तिवारी, हरेंद्र जैन, थलेश जोशी, हरदेव जोशी, राजेश जैन आदि ने जलदाय विभाग के कर्मचारियों को माला पहनाकर स्वागत किया गया।

रामपुर के पूर्व माध्यमिक विद्यालय बुनियाडीह में शौचालय सीट के सेट ही बिजली मोटर लगा

वीरेन्द्र सिंह यादव / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश जिला महराजगंज के स्थानीय ब्लाक धानी के ग्राम पंचायत रामपुर के पूर्व माध्यमिक विद्यालय बुनियाडीह में शौचालय सीट के सेट ही बिजली मोटर लगा हुआ है अगर कोई किसी छात्रा को शौचालय जाना पर अगर कोई छात्र बदमाशी कर दिया शौचालय सीट के सेट ही मोटर में बिजली उतर गया तो उसका जिम्मेदार कौन होगा। जब प्रभारी प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि प्रयोग करके बंद कर दिया जाएगा। मीडिया कर्मी पुन सवाल किया संयोग बस आप भूल गए दुर्घटना घट सकता हैं इसके जिम्मेदार विद्यालय परिवार की होगा। क्योंकि शौचालय सीट से सेट बिजली मोटर नही होना चाहिए क्योंकि किसी छात्र के साथ दुर्घटना घट सकता हैं प्रभारी प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार ने बताया कि कोरौना के समय ग्राम प्रधान रामपुर के द्वारा शौचालय सीट के सेट ही बिजली मोटर लगा हुआ है इसकी जानकारी के लिए संपर्क के लिए खंड शिक्षा अधिकारी से मो नम्बर 9473777278 पर सम्पर्क करने पर था।

ग्राम पंचायत पावटा हर एक परिवार मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना से जुड़ने हेतु किया जागरूक

राजस्थान राजीव गांधी युवा मित्र कानाराम सिंघल ने आज ग्राम पंचायत पावटा में जन संवाद करते हुए राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। वह नरेगा स्थल पर जाकर श्रमिकों को मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ्य बीमा योजना के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी देते हुए बताया कि इस योजना में प्रदेश का हर एक परिवार जुड़ सकता है चिरंजीवी योजना 2021 राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा शुरू की गई एक योजना है। यह योजना समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए किफायती स्वास्थ्य बीमा पैकेज प्रदान करती है। सिंघल ने बताया कि निःशुल्क लाभ प्राप्त करने वाली श्रेणी राज्य सरकार द्वारा निर्धारित ऐसी श्रेणी के पात्र परिवारों के प्रीमियम का 100 प्रतिशत भुगतान सरकार द्वारा किया जाता है। वर्तमान में खाद्य सुरक्षा अधिनियम के अर्न्तगत पात्र परिवार, सामाजिक आर्थिक जनगणना (एसईसीसी) 2011 के पात्र परिवार, राज्य के सरकारी विभागों / बोर्ड / निगम / सरकारी कम्पनी में कार्यरत संविदा कार्मिक, लघु सीमांत कृषक एवं गत वर्ष कोविड-19 अनुग्रह राशि प्राप्त करने वाले निराश्रित एवं असहाय परिवार निःशुल्क श्रेणी में सम्मिलित है। इस दौरान सरपंच तेज सिंह बालोत ग्राम विकास अधिकारी विनीता मीना, रेवत सिंह पंचायत सहायक, फूलाराम बोस पंचायत सहायक, सेवंती कुमारी, कैलाश कंवर, रसाल कंवर, शारदा गर्ग आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, बाबूलाल गोमतिवाल, आदा राम मेघवाल राशन डीलर, ललिता कुमारी, प्रीती कुमारी मेट उपस्थित रहे।

पटना बाढ़ में दिखेगा केदारनाथ मंदिर का नजारा, भव्य पंडाल का आयोजन

बाढ़ में इस बार नगर परिषद चुनाव को लेकर स्थानीय दिग्गज प्रतिद्वंदी के रूप में अपने प्रत्याशियों के साथ चुनावी मैदान में दमखम दिखा रहे हैं। वही मां दुर्गा की उपासना के पर्व नवरात्र में सभी विरोधी गुट एकजुट होकर पूजा के आयोजन को सफल बनाने में जुटे हुए हैं। बाढ़ मोकामा रोड के काजीचक में भव्य पंडाल बनाया जा रहा है। काजीचक बाढ़ में भव्य पंडाल का निर्माण अंतिम चरण में है। यहां केदारनाथ मंदिर जैसा ही भव्य पंडाल बनाया जा रहा है। यहां बाढ़ बाजार, गुलाब बाग, मलाही भेटगांव, राणा बीघा, परसावां बिहारी, नवादा, ढीवर, सहनौरा रैली, पंडारक और आसपास के इलाकों के हजारों श्रद्धालुओं यहां मां के दर्शन के लिए आते हैं। पिछले लगभग 10 वर्षों से यहां पूजा का आयोजन किया जा रहा है। यहां कलाकारों द्वारा पिछले 15 दिनों से इस पंडाल का निर्माण किया जा रहा है। कलाकारों की टीम दिन रात भव्य केदारनाथ मंदिर के प्रतिरूप पंडाल में उतारने में लगी हुई है। कलश स्थापना के साथ पूजा की शुरुआत हो चुकी थी। पुजारियों द्वारा यह बताया जा रहा है कि 2 अक्टूबर को सप्तमी, 3 अक्टूबर को महा अष्टमी एवं 4 अक्टूबर को नवमी को माता रानी का छप्पन भोग, कन्या पूजन एवं भक्तजनों के लिए खिचड़ी का वितरण किया जाता है।

उ. प्र हरदोई SP राजेश द्विवेदी द्वारा पुलिस लाइन ग्राउंड पर कराई गई परेड

उत्तर प्रदेश हरदोई पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी पुलिसकर्मियों को सक्रिय रखने के लिए लगातार प्रयास कर रहे है। 30 सितंबर को प्रात: काल शुक्रवार की परेड रिज़र्व पुलिस लाइन परेड ग्राउंड पर कराई साथ ही सलामी ली गई। सलामी लेने के बाद समस्त पुलिस बल की दौड़ करवाई उसके बाद यूपी 112 पीआरवी वाहनों का करा समस्त वाहन चालकों को आवश्यक उपकरणों को अपने पास रखने हेतु निर्देश दिए। इसके साथ ही समस्त थानों पर शुक्रवार की परेड करने को दिशा निर्देश दिए शारीरिक मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के सुझाव दिए अनुशासन वा एकरूपता बनाए रखने के लिए एक टोली बार ग्राउंड परेड ड्रिल करवाया।

नेहरू को विभाजन का पितामह बताने पर कांग्रेस ने भाजपा की निंदा की

एजेंसी

कांग्रेस ने शनिवार को कर्नाटक के कुछ स्थानीय दैनिकों में पहले पन्ने पर दिए गए विज्ञापन में देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को 'भारत के विभाजन का पितामह' बताए जाने पर भाजपा की निंदा की। राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा के कर्नाटक में प्रवेश के दूसरे दिन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की प्रदेश इकाई ने कुछ कन्नड़ अखबारों में एक विज्ञापन छपवाया, जिसमें लिखा है कि क्या प्रपौत्र भारत विभाजन के पितामह द्वारा तोड़ी गई चीज को जोड़ सकता है। नेहरू और मोहम्मद अली जिन्ना की तस्वीरों के बीच में भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश के नक्शे के साथ, विज्ञापन में सवाल किया गया है, क्या भारत की एकता उस पार्टी से संभव है, जिसने केवल सत्ता में आने के लिए लोगों का रक्तपात कराया? भाजपा ने आरोप लगाया कि भारत जोड़ो यात्रा का एजेंडा भारत को खंडित करने का है। कांग्रेस ने आरोप पर कड़ी आपत्ति जताते हुए कहा कि दक्षिणपंथी हमेशा इतिहास के गलत मोड़ पर रहे हैं। पार्टी की मीडिया और प्रचार इकाई के अध्यक्ष पवन खेड़ा ने संवाददाताओं से कहा, ''भाजपा ने विज्ञापन दिया है। दक्षिणपंथी विचारधारा हमेशा इतिहास के गलत मोड़ पर रही है। चूंकि वे इतिहास नहीं लिख सके, इसलिए वे इतिहास को फिर से लिखने की कोशिश कर रहे हैं।'' उन्होंने आरोप लगाया कि द्विराष्ट्र सिद्धांत को पहली बार हिंदू महासभा ने 1937 में अपने अहमदाबाद सम्मेलन में रखा था, जिसकी अध्यक्षता हिंदुत्व विचारक सावरकर ने की थी। कांग्रेस नेता ने कहा कि पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना ने भी 1942 में मुस्लिम लीग के लाहौर सम्मेलन में यही दोहराया। उन्होंने दावा किया कि 1942 में जब विरोध में और 'भारत छोड़ो आंदोलन' में शामिल होने के लिए कांग्रेस सभी प्रांतीय सरकारों से अलग हो गई, तो महासभा ने तीन प्रांतीय विधानसभाओं - पश्चिम बंगाल, एनडब्ल्यूएफपी और सिंध में मुस्लिम लीग के साथ गठबंधन किया, जहां पाकिस्तान के लिए पहला प्रस्ताव पारित किया गया। खेड़ा ने कहा, ''मैं चुनौती देकर कहता हूं कि वे (दक्षिणपंथी) मुस्लिम लीग से मिले हुए थे और उन्होंने इसे नहीं रोका। यह स्पष्ट है कि भारत का विभाजन किसने किया। वे (भाजपा) एक ऐसे व्यक्ति से बात कर रहे हैं, जिसकी दादी ने पाकिस्तान का बंटवारा किया था। वे (भाजपा) 1947 और 1971 से पहले का इतिहास नहीं जानते हैं। वे खुद अपना इतिहास नहीं जानते हैं।'' कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने कहा कि भाजपा उन लोगों को इतिहास पढ़ा रही है, जो स्वतंत्रता लेकर आए। उन्होंने कहा, ''किस दल ने सभी प्रांतों को एक कर एक राष्ट्र बनाया? यह कांग्रेस है। आरएसएस के किस नेता ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था? क्या आरएसएस के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार या दूसरे सरसंघ चालक माधव सदाशिवराव गोलवलकर ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया था?

गुजरात में बोले केजरीवाल, स्विस बैंकों से वापस लाएंगे अवैध पैसा

एजेंसी

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने शनिवार को आरोप लगाया कि गुजरात में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) शासन के दौरान भ्रष्टाचार में लिप्त लोगों ने अपना पैसा स्विस बैंक में रखा है, जिसे आम आदमी पार्टी (आप) सत्ता में आने पर वापस लाएगी। उन्होंने पूरे गुजरात में दिल्ली की तर्ज पर 20,000 मोहल्ला क्लीनिक, राज्य के प्रत्येक गांव में सरकारी विद्यालय के निर्माण का भी वादा किया। इसके अलावा आप के राष्ट्रीय संयोजक ने सभी के लिए "मुफ्त और असीमित" स्वास्थ्य सेवाओं का भी आश्वासन दिया। उल्लेखनीय है कि दिसंबर में गुजरात विधानसभा चुनाव होने हैं। राज्य के अपने दो दिवसीय दौरे के पहले दिन, केजरीवाल ने दावा किया कि भाजपा सरकार की एक खुफिया जानकारी के मुताबिक, आम आदमी पार्टी भारी बहुमत से चुनाव जीत कर राज्य में सरकार बनाने वाली है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के साथ चुनाव के मद्देनज़र पार्टी का प्रचार करते हुए केजरीवाल ने कच्छ जिले के गांधीधाम शहर और जूनागढ़ में दो रैलियों को संबोधित किया। केजरीवाल ने गुजरात के सभी निवासियों को उनकी वित्तीय स्थिति के इतर दवाएं, चिकित्सकीय जांच और सर्जरी सहित मुफ्त और असीमित स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने का वादा किया। केजरीवाल ने जूनागढ़ में कहा, "हम पूरे गुजरात में 20,000 मोहल्ला क्लीनिक बनाएंगे। अमीर हों या गरीब, गुजरात के लोगों को मुफ्त इलाज दिया जाएगा। सब कुछ मुफ्त होगा, चाहे वह दवा हो, जांच हो या ऑपरेशन, भले ही इसकी लागत 20 लाख रुपये हो।" उन्होंने कहा कि यदि आप सत्ता में आती है तो दिल्ली की तर्ज पर गुजरात के निजी विद्यालयों का भी ऑडिट किया जाएगा। इन विद्यालयों द्वारा एकत्र किया गया अतिरिक्त पैसा लोगों को लौटाया जाएगा।

पुलिस का बड़ा खुलासा- सीमा पार बैठा है मास्टरमाइंड, ड्रोन से पहुंचा था स्टिकी बम, एक गिरफ्तार

एजेंसी

जम्मू कश्मीर के उधमपुर में 8 घंटे के भीतर दो बसों में हुए शक्तिशाली बम धमाकों की गुत्थी अब सुलझती नजर आ रही है। पुलिस ने इस मामले में एक को गिरफ्तार कर लिया है। इसके साथ ही इस धमाके के विस्तार पाकिस्तान से जुड़ रहे हैं। पुलिस ने साफ तौर पर कहा है कि आतंकी साजिश रचने वाला मुख्य साजिशकर्ता पाकिस्तान में बैठा हुआ है। इसके साथ ही जिसे गिरफ्तार किया गया है उसमें अपने गुनाह कुबूल कर लिए हैं। जम्मू के ADGP मुकेश सिंह ने बताया कि 28 सितंबर को उधमपुर में दो अलग-अलग जगह बस में ब्लास्ट हुए थे। दोषी को पकड़ लिया गया है। मोहम्मद अमीन भट्ट जो पाकिस्तान में रहता है उसने बसंतगढ़ उधमपुर के असलम शेख नामक आतंकवादी से सोशल मीडिया पर संपर्क किया। असलम शेख ने IED लगाए। 5 IEDs भी बरामद की गई हैं। जम्मू-कश्मीर डीजीपी ने बताया कि हमने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है और उसने कबूल कर लिया है। इससे पहले पीएम मोदी के दौरे के दौरान पुलिस की सतर्कता के चलते जैश के 2 आतंकियों को मार गिराया गया था।

'मैं नकली गांधी की बात क्यों करूं': बसवराज बोम्मई

एजेंसी

कर्नाटक में कांग्रेस और भाजपा के बीच लगातार जुबानी जंग जारी है। गांधी जयंती के अवसर पर भी दोनों पार्टी के बीच जुबानी जंग देखने को मिली। इस वक्त एक ओर जहां कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई थे तो वहीं दूसरी ओर कर्नाटक कांग्रेस के प्रमुख डीके शिवकुमार थे। सबसे पहले हम आपको यह बताते हैं कि आखिर कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने क्या कहा। इसके बाद से कांग्रेस की ओर से पलटवार किया गया। बसवराज बोम्मई ने कहा कि आज गांधी जयंती है, मैं नकली गांधी की बात क्यों करूं? उन्होंने तंज करते हुए कहा कि राहुल गांधी, सोनिया गांधी और डीके शिवकुमार पूरी कांग्रेस पार्टी जमानत पर बाहर हैं। कर्नाटक राज्य कांग्रेस पार्टी के लिए एटीएम था, जो अब चला गया है। कर्नाटक के मुख्यमंत्री के इस आरोप का डीके शिवकुमार की ओर से पलटवार किया गया है। उन्होंने कहा कि हां, मैं जमानत पर हूं। सोनिया गांधी और राहुल गांधी भी जमानत हैं। पर उनके (भाजपा) दर्जनों हैं जो जमानत पर हैं। येदियुरप्पा के खिलाफ कोई मामला नहीं? बोम्मई ने मेरे खिलाफ मामले दर्ज किए। वह मुझे परप्पन अग्रहारा (सेंट्रल जेल) भेज दें, मैं थोड़ा आराम करूंगा। आपको बता दें कि फिलहाल कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा कर्नाटक में है। कर्नाटक में राहुल गांधी इस वक्त भाजपा पर जबरदस्त तरीके से हमलावर हैं। कर्नाटक में कांग्रेस लगातार भाजपा पर 40% कमीशन वाली सरकार होने का आरोप लगा रही है। कांग्रेस की ओर से दावा किया जा रहा है कि कर्नाटक में भ्रष्टाचार बढ़ गया है। सरकार हर मामले में 40% कमीशन ले रही है। इससे पहले राहुल गांधी ने कहा था कि कर्नाटक कॉन्ट्रैक्ट एसोसिएशन ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखा कि कर्नाटक में 40% कमीशन की चोरी हो रही है। PM ने कोई कार्रवाई नहीं की। 13,000 स्कूल एसोसिएशन से लिया गया 40% कमीशन पर न तो पीएम ने और न ही सीएम ने कोई कार्रवाई की। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को महात्मा गांधी को उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि दी और कहा कि सत्ता में बैठे लोगों के लिए महात्मा गांधी की विरासत को "हथियाना" आसान है।

पुलिस हिरासत से फरार गैंगस्टर टीनू मूसेवाला केस में होनी थी पूछताछ, लॉरेंस का है करीबी

एजेंसी

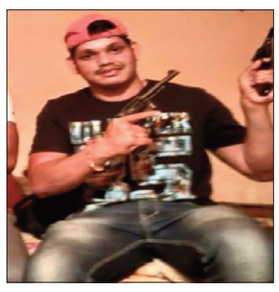

पंजाबी गायक के सिद्धू मूसेवाला हत्याकांड का आरोपी दीपक टीनू एक बार फिर से पुलिस हिरासत से फरार हो गया है। यह चौथा मौका है जब दीपक टीनू पुलिस को चकमा देने में कामयाब रहा है और पुलिस हिरासत से फरार हुआ है। दीपक टीनू लॉरेंस बिश्नोई गैंग का गुर्गा है। इसे गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का काफी करीबी भी माना जाता है। दीपक टीनू से सिद्धू मूसेवाला मर्डर केस में पूछताछ की जानी थी। पूछताछ के लिए रिमांड पर पुलिस लेकर इसे जा रही थी। दीपक टीनू इस समय कपूरथला जेल में बंद था। हालांकि, अब वह पुलिस हिरासत से फरार हो गया है। फिलहाल उसकी तलाशी अभियान शुरू कर दी गई है बताया जा रहा है कि दूसरी ओर भाजपा ने जबरदस्त तरीके से भगवंत मान की सरकार पर निशाना साधा है। भाजपा प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने ट्वीट कर लिखा कि प्रॉक्सी सीएम भगवंत मान के लिए 42 कार काफिला, आप के वीवीआईपी नेताओं के लिए सुरक्षा लेकिन बिश्नोई गिरोह के सहयोगी दीपक टीनू - जिनकी मूसेवाला हत्या में प्रमुख भूमिका थी, पंजाब पुलिस की हिरासत से फरार हो गया! उन्होंने आरोप लगाया कि आप गिरोहों पर कार्रवाई सुनिश्चित नहीं कर रहे है बल्कि उनकी मदद कर रही है! क्या हमें और सबूत चाहिए? माना जा रहा है कि दीपक टीनू के पास सिद्दू मूसेवाला मर्डर केस में कई बड़े रहस्य छिपे हैं। घटना शनिवार की रात की है। मनसा के सीआईए इंचार्ज अपनी प्राइवेट गाड़ी से गैंगस्टर दीपक तीनों को मंशा लेकर जा रहे थे तभी वह मौका देखकर फरार हो गया। दीपक टीनू 2017 से जेल में बंद था। इस घटना के बारे में पूछे जाने पर पटियाला रेंज के महानिरीक्षक (आईजी) मुखविंदर सिंह छिना ने पीटीआई-से फोन पर कहा, "पुलिस की टीम प्रयास कर रही है और हम उसे जल्द ही पकड़ लेंगे। छिना के पास वर्तमान में बठिंडा रेंज के महानिरीक्षक का भी अतिरिक्त प्रभार है। पंजाब के मानसा जिले में 29 मई को मूसेवाला के नाम से मशहूर पंजाबी गायक शुभदीप सिंह सिद्धू की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मूसेवाला की हत्या के बाद बिश्नोई गिरोह के सदस्य गोल्डी बराड़ ने हत्या की जिम्मेदारी ली थी।

एकनाथ शिंदे की जान को खतरा

एजेंसी

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को जान का खतरा है। खुफिया विभाग की रिपोर्ट के बाद उनकी सुरक्षा को बढ़ा दी गई है। खुफिया विभाग के ही रिपोर्ट में एकनाथ शिंदे की जान को खतरा बताया गया है।

महाराष्ट्र के खुफिया आयुक्त आशुतोष डुंबरे ने भी इस बात की पुष्टि कर दी है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री की सुरक्षा और सख्त तौर पर बढ़ा दी गई है। उन्होंने कहा कि जो हमें इनपुट मिले हैं उसी के आधार पर कार्रवाई की गई है। दूसरी ओर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने साफ तौर पर कहा है कि वह इस तरह की धमकियों से डरने वाले नहीं हैं और अपना काम करते रहेंगे। अपने बयान में एकनाथ शिंदे ने साफ शब्दों में कहा कि महाराष्ट्र | मैं उस पर ध्यान नहीं देता। हमारे गृह विभाग और गृह मंत्री देवेंद्र फडणवीस सक्षम हैं और हमें उन पर भरोसा है। मैं ऐसी धमकियों से नहीं डरूंगा, मुझे जनता के लिए काम करने से कोई नहीं रोक सकता। मैं उनके लिए काम करता रहूंगा। हालांकि, खुफिया विभाग की रिपोर्ट के बाद ठाणे में एकनाथ शिंदे की निजी आवास तथा उनके आधिकारिक आवास वर्षा की भी सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

बिहार के मंत्री का इस्तीफा, दिया था 'चोरों के सरदार' वाला बयान

एजेंसी

बिहार के कृषि मंत्री सुधाकर सिंह ने आज इस्तीफा दे दिया है। सुधाकर सिंह राजद कोटे से बिहार सरकार में मंत्री थे। सुधाकर सिंह बिहार जिला राजद के वरिष्ठ नेता और उसके अध्यक्ष जगदानंद सिंह के बेटे हैं। बताया जा रहा है कि सुधार कर सिंह ने अपना इस्तीफा तेजस्वी यादव को सौंप दिया है। बेटे सुधाकर सिंह के इस्तीफे की खबर पर जगदानंद सिंह ने कहा कि किसी को किसानों और उनके साथ हो रहे अन्याय के लिए खड़े होने की जरूरत है। कृषि मंत्री ने इसे उठाया। मंडी कानून की हत्या (कृषि उत्पाद विपणन समिति अधिनियम) ने राज्य के किसानों को तबाह कर दिया है। सुधाकर सिंह लगातार नीतीश सरकार की आलोचना कर रहे थे। 2 माह के भीतर बिहार सरकार के दूसरे मंत्री ने इस्तीफा दे दिया है। इससे पहले राजद कोटे से कार्तिकेय सिंह ने भी इस्तीफा दे दिया था। उनके इस्तीफे को लेकर इस बात की भी चर्चा हो रही है कि उन्होंने अपना इस्तीफा तेजस्वी यादव को भेजा ना कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को। इसके पीछे सुधाकर सिंह की नीतीश कुमार से नाराजगी भी मानी जा रही है। सुधाकर सिंह इस बात को कई बार दोहरा चुके हैं कि उनके नेता लालू यादव और तेजस्वी यादव हैं। उनकी वजह से ही वह बिहार में मंत्री बने हैं। उनके नेता नीतीश कुमार नहीं हैं। मंत्री पद में शामिल होने के साथ ही सुधाकर सिंह विवादों में आ गए थे। भाजपा ने उन पर कई बड़े आरोप भी लगा दिए थे। इसके साथ ही सुधाकर सिंह ने एक विवादित बयान देते हुए खुद को चोरों का सरदार भी बता दिया था। अपने बयान में सुधाकर सिंह ने कहा था कि हमारे (कृषि) विभाग में कोई ऐसा नहीं है जो चोरी नहीं करता हो और हम उन चोरों के सरदार हैं। मेरे ऊपर और भी कई लोग हैं.. सरकार नई तो बन गई है लेकिन ये सरकार है वही पुरानी और इसके चाल चलन भी पुराने हैं। इसके बाद उनकी इस बयान की खूब चर्चा हुई थी। नीतीश कुमार ने कैबिनेट की बैठक में उनसे उनके इस बयान पर जवाब मांगा। सुधाकर सिंह उठकर वहां से चल दिए थे। सूत्रों ने बताया कि 17 सालों में नीतीश कुमार को किसी ने इस तरीके से जवाब नहीं दिया था। इसके बाद लगातार नीतीश कुमार कृषि सुधार को लेकर सुधाकर सिंह से रिपोर्ट मांगते रहे। दूसरी ओर सुधाकर सिंह ने नीतीश कुमार के मंडी व्यवस्था को खत्म करने का विरोध जता रहा थे।

इस्तीफे पर भाजपा का तंज, 2 महीने में गिरा दूसरा विकेट, अभी नीतीश कुमार की फजीहत बाकी है

बिहार सरकार के कृषि मंत्री सुधाकर सिंह ने आज इस्तीफा दे दिया है। सुधाकर सिंह बिहार राजद के अध्यक्ष जगदानंद सिंह के बेटे हैं। सुधाकर सिंह लगातार मंत्री रहने के बावजूद भी नीतीश सरकार के खिलाफ हमलावर थे। सुधाकर सिंह के इस्तीफे पर भाजपा ने जबरदस्त तरीके से तंज कसा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता और पूर्व उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि 2 महीने में बिहार सरकार का दूसरा विकेट गिर गया है। उन्होंने आगे कहा कि अभी नीतीश कुमार की और फजीहत होनी बाकी है। मोदी ने दावा किया कि यह लड़ाई अब जगदानंद सिंह और नीतीश कुमार के बीच की लड़ाई में बदल गई है। अगला विकेट जगता बाबू का हो सकता है। अपने बयान में सुशील मोदी ने कहा कि उन्होंने कहा कि जगदानंद सिंह ने जो 2 दिन पहले बयान दिया था कि 2023 में तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाना है। नीतीश कुमार दिल्ली की राजनीति में जाएंगे। कहीं ना कहीं उसकी कीमत जगता बाबू को अपने बेटे के बलिदान के रूप में चुकानी पड़ी है।

संक्षिप्त समाचार

उत्तर प्रदेश अनूपशहर में विजयदशमी श्री काली मेला के त्योहारों को लेकर शांति समिति का हुआ आयोजन

उत्तर प्रदेश अनूपशहर में तहसील सभागार में बीके गुप्ता उप जिलाधिकारी की अध्यक्षता में विजयदशमी रामनवमी श्री काली मां के त्योहारों के उपलक्ष में शांति समिति मीटिंग का आयोजन हुआ। विवेक कुमार मिश्रा एडीएम ने कहा डीजे धीमी आवाज में बजेंगे यदि डीजे वालों ने कानून का उल्लंघन किया, तो कठोर कानूनी कार्यवाही की जाएगी और जुर्माना वसूला जाएगा। श्री काली मां के मेला में अष्टमी और नवमी एवं विजयदशमी के अखाड़ों में अस्त्र शास्त्र का प्रयोग नहीं होगा। यदि कोई पकड़ा गया तो उसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी। इस अवसर पर बजरंगबली चौरसिया पुलिस एसपी आर ओ नीरज द्विवेदी, तहसीलदार अनविता उपाध्याय, पुलिस क्षेत्राधिकारी यज्ञदत्त शर्मा, पुलिस प्रभारी निरीक्षक अवधेश खलीफा, विजय सिंह खलीफा, इंद्र मोहन शर्मा, योगेश शर्मा, डीजे वाले जावेद एडवोकेट सौरव वार्ष्णेय विकास गर्ग, कंछी पंडित आदि लोग उपस्थित रहे।

राजस्थान धनाऊ में नवरात्री के अवसर पर पडालों में जमा गरबे का रंग, शक्ति की भक्ति में थिरक रहे कदम

संजय पंवार: राजस्थान धनाऊ नवरात्रि मे माता की आराधना में लीन छोटी बड़ी बालिकाओं की ओर से गरबा पडालो पर मनमोहक गरबो की प्रस्तुति देकर माता की आराधना की जा रही हैं। छोटी छोटी बालिकाओं के साथ बड़ी बालिकाओं ने सज धज के आकर्षक गरबो की प्रस्तुति देकर माता की आराधना की इन 9 दिनों में कोई नंगे पांव तो कोई व्रत उपवास रखकर भक्ति के इस पर्व पर अपने अपने तरीके से माता को प्रशंन्न करते दिखाई दे रहे है।

उत्तर प्रदेश कानपुर देहात में हुआ रामलीला का आयोजन, ग्राम प्रधान ने फीता काट कर किया उद्घाटन

उत्तर प्रदेश खोजाफूल सिकंदरा कानपुर देहात में पूर्वजों से चली आ रही रामलीला अच्छी करवाई जाती है। वर्तमान में रामलीला अध्यक्ष अविनाश कटियार की अध्यक्षता में ग्राम प्रधान ने फीता काट कर उद्घाटन किया और साथ ही ग्राम प्रधान जी द्वारा बताया गया कि खोजाफूल में रामलीला बहुत पुरानी रामलीला है। इस रामलीला को आगे आने वाले समय में और भी अच्छी रामलीला करवाने का प्रयास करेंगे। नवयुवक प्रधान द्वारा सभी रामलीला समिति के सदस्यों का हौसला बढ़ाया गया।

सिद्धार्थ नगर में पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राजा जय प्रताप सिंह ने किया क्षेत्र का दौरा

अवधराम भारती

उत्तर प्रदेश जिला सिद्धार्थ नगर पूर्व स्वास्थ्य मंत्री राजा जय प्रताप सिंह वर्तमान में विधायक राजा जय प्रताप सिंह बांसी विधायक के नित्य में आज बकाया लाभाश की मांगा व खाधात्र तौल और कोटे की दुकान तक राशन पहुंचाने की मांगो को लेकर जिलाधिकारी को कोटेदार संघ के जिलाध्यक्ष सिद्धांत यादव द्वारा 9 मांगो को लेकर ज्ञपन सौंपा। इस दौरान पूर्व स्वस्थ्य मंत्री व बांसी विधानसभा के विधायक जय प्रताप सिंह ने उक्त कार्यक्रम को देखरेख कर मामले को सज्ञन में लेकर उच्चाधिकारियों से वार्ता कर कार्यवाही के लिए कहा। मौके पर जिलाधिकारी के प्रत्यनिधि द्वारा ज्ञपन लिया गया और मांगो को जल्द पूरा करने का आश्वासन दिया गया।

सहकारी समिति का चुनाव संपन्न, छपरा से कार्यसमिति से ओमप्रकाश कंजर को किया गया निर्विरोध नियुक्त

राजस्थान के 12 जिले की छबड़ा तहसील में सहकारी समिति का चुनाव हुआ, जिसमें शंकर कॉलोनी चाचौड़ा ओम प्रकाश कंजर को अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध नियुक्त किया। किसानों ने और स्थानीय लोगों ने नए अध्यक्ष ओमजी कंजर का भव्य जुलूस निकाला, किसी के साथ ही बैंक के अधिकारी ओम यादव ने प्रमाण पत्र दिया। किसानों और अधिकारियों ने नए अध्यक्ष को माला पहनाकर स्वागत किया नए सहकारी समिति अध्यक्ष ओम प्रकाश जी कंजर ने कहा है कि अब किसानों का शोषण नहीं होगा किसानों की हर तरह से संभव मदद की जाएगी सरकार से जो भी योजनाएं आएंगी उनको सीधे किसानों के पास पहुंचाया जाएगा ओम ने बताया कि मैं भी एक गरीब किसान ही हूं। मैं किसान का दुख दर्द समझ सकता हूं। इसीलिए किसानों के साथ कोई भेदभाव नहीं होगा नए किसानों के साथ तत्पर तैयार रहूंगा।

भिनाय उपखंड मुख्यालय की ग्राम पंचायत कैरोट में ग्राम सेवा सहकारी समिति के चुनाव संपन्न हुए

घनश्याम दास / एनसीआर समाचार

राजस्थान भिनाय उपखंड मुख्यालय की ग्राम पंचायत कैरोट में ग्राम सेवा सहकारी समिति के चुनाव संपन्न हुए। जिसमें चुनाव के निर्वाचन अधिकारी गायत्री रहड़िया ने शान्ति पूर्ण चुनाव सम्पूर्ण कराए, इस दौरान नेमीचंद शर्मा ने 6 मत प्राप्तकर विजय हासिल की। वहीं उपाध्यक्ष पद पर जोरावर सिंह केनई को 5 मत प्राप्त कर विजय हासिल किया और उपाध्यक्ष बनें। कैरोट स्थित ग्राम सेवा सहकारी समिति के अध्यक्ष बने नेमीचंद शर्मा और उपाध्यक्ष जोरावर सिंह कनेई का क्षेत्रवासियों ने माला व साफा पहनाकर भव्य स्वागत सत्कार किया गया और ढोल नगाड़े के साथ जुलूस निकाला गया।

ग्वालियर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए इंडस्ट्रियल विजिट संपन्न हुई

मध्य प्रदेश में 23 सितम्बर 2022 को सीमा सुरक्षा बल द्वारा संचालित रुस्तमजी प्रौद्योगिकी संसथान, ग्वालियर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए इंडस्ट्रियल विजिट का आयोजन किया गया, जिसमें मैकेनिकल इंजीनियरिंग के छात्रों को मालनपुर इंडस्ट्रियल एरिया भिंड ग्वालियर में क्रॉम्पटन ग्रीव्स कम्पनी में ले जाया गया। जहाँ पर छात्रों ने विभिन्न मशीनों की कार्यप्रणाली को देखा व समझा इस तरह के आयोजन से छात्रों की सैद्धांतिक पढ़ाई को वास्तविकता से जोड़ा जा सकता है।

सागर में नगरीय निकाय चुनाव में भाजपा के 326 में से 262 स्थानों पर विजय

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश सागर भारतीय जनता पार्टी द्वारा धर्म श्री स्थित जिला कार्यालय में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया। पत्रकार में भाजपा जिला अध्यक्ष गौरव सिरोठिया ने आज पार्टी कार्यालय में पत्रकारों महामंत्री एवं नगर निगम अध्यक्ष व्रन्दावन अहिरवार, श्याम तिवारी जिला मीडिया प्रभारी श्रीकान्त जैन उपस्थित रहें। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए जिला अध्यक्ष गौरव सिरोठिया ने चर्चा करते हुये कहा कि भाजपा की विचारधारा एवं देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चैहान की जनकल्याण की योजनाओं का जनमानस में स्वीकारिता स्पष्ट नजर आ रही है। भाजपा आज देश की सर्वव्यापी, सर्वस्पर्शी पार्टी बनकर लोगों के सर्वकल्याण के लिये कार्य कर रही है, जिससे भाजपा के सर्वकल्याण के ध्येय वाक्य से जनमानस में भाजपा की स्वीकारता स्पष्ट दिख रही है। उन्होंने कहा कि, लोकतंत्र में किसी दल के प्रति स्वीकार्यताभाव के चलते ही प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित होते है जिसके चलते सागर जिले में भी भाजपा की जनमानस में स्वीकारभाव के चलते ही 6 नगर पालिका, 10 नगर परिषदों में कुल 75 भाजपा प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित हुये है, जिसमें प्रमुखता से खुरई नगर पालिका में 21 पार्षद, मालथौन में 15, बांदरी में 15, बरोदिया में 15, सुरखी में 2, बिलहरा में 2, शाहपुर में 1 पार्षद, बीना में 2, देवरी में 2 प्रत्याशी नगरीय निकाय चुनाव के प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण में सागर जिले से भाजपा के पार्षद प्रत्याशी के रूप में निर्विरोध निर्वाचित हुये। साथ ही श्री सिरोठिया ने कहा कि सागर जिले में नगर निगम, नगर पालिका, नगर परिषद के कुल 326 वार्डो में से 262 वार्डों में भाजपा ने एवं 37 वार्डो में कांग्रेस एवं 27 वार्डो में निर्दलीय प्रत्याशियों ने जीत हासिल की। जीते हुये लगभगत सभी निर्दलीय प्रत्याशियों ने भारतीय जनता पार्टी की जनकल्याणकारी नीतियों को दृष्टिगत रखते हुये अपना समर्थन भाजपा को दिया है। वहीं शाहपुर नगर परिषद के कुल 3 कांग्रेस के जीते हुये पार्षदों ने भी अपना समर्थन भाजपा को देकर शाहपुर को कांग्रेस मुक्त बनाया है इसी प्रकार खुरई गढ़ाकोटा नगर पालिका एवं बांदरी, बरोदिया, मालथौन भी कांग्रेस मुक्त हुयी है। जिसके लिए भाजपा नगरीय निकाय चुनाव में सागर जिले में मिली ऐतिहासिक जीत पर सभी मतदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करती है। सिरोठिया ने कहा कि, आगामी चुनाव में सागर जिले को कांग्रेस मुक्त करने के लिये सभी कार्यकर्ता पूर्णतः तैयार है और हम निश्चित ही सागर जिले की आठो विधानसभा सीटों को केन्द्र एवं राज्य सरकार की विकासशील एवं जनकल्याणकारी नीतियों एवं बूथस्तर पर देवदुर्लभ कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम जनमानस में भारतीय जनता पार्टी के प्रति अपार विश्वास से जीतेंगे। साथ ही सिरोठिया ने बताया की कल दिनांक 2-10-2022 को सागर विधानसभा का कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया है।

दुर्गा चौधरी पाटेश्वरी प्रसाद इंटरमीडिएट कॉलेज में प्रशिक्षण शिविर संपन्न

वीरेन्द्र सिंह यादव / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश के जिला सिद्धार्थनगर में समापन समारोह के मुख्य अतिथि वरिष्ठ सेवानिवृत्त शिक्षक केदारनाथ जा रहे। मुख्य अतिथि ने सर्वप्रथम स्काउट गाइड द्वारा बनाए गए टेंट का अवलोकन किया व स्काउट गाइड की सराहना की, कैंफायर के उपरांत स्काउट गाइडों को संबोधित करते हुए केदारनाथ वरुण ने कहा स्काउट गाइड छात्रों को अनुशासित व नैतिक बनाता और राष्ट्र के विकास में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वरिष्ठ शिक्षक हरी प्रसाद पाठक ने अपने उद्बोधन में आपदा के समय स्काउट गाइड की जिम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है और हर मौके पर स्काउट गाइड को मुस्तैदी के साथ देखा गया है। विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉक्टर शेष नारायण पांडे ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया कार्यक्रम में स्काउट गाइड जिला प्रशिक्षकों हरिश्चंद्र यादव वन्य प्रशिक्षक विशाल वर्मा, अंकुर चौरसिया, मनीषा, गौरी से छात्र-छात्राओं ने बहुत कुछ सीखा इसके लिए विद्यालय परिवार उनको धन्यवाद देता है। विद्यालय स्काउट मास्टर विजय कुमार व गाइड सुनीता वर्मा सक्रिय रूप से लगे रहे कार्यक्रम का संचालन राज दीपक अवस्थी ने कार्यक्रम के दौरान विद्यालय शिक्षकगण सुरेंद्र लाल, हरी प्रसाद पाठक, प्रमोद कुमार चौधरी, अरुण कुमार, पंकज यादव, संतोष कुमार मिश्रा अनिल मौजूद रहे।

मध्य प्रदेश में कान्हा टाइगर रिजर्व में वन्यप्राणी संरक्षण सप्ताह 2022 का शुभारम्भ

इन्द्रमेन मार्को

मध्य प्रदेश मंडला जिले में 1 अक्टूबर को वन्यप्राणी संरक्षण सप्ताह का शुभारंभ कान्हा टायगर रिजर्व प्रबंधन द्वारा किया गया। वन्यप्राणी संरक्षण सप्ताह तक मनाया जाएगा। इस अवसर वन एवं वन्यप्राणी संरक्षण हेतु जागरूकता रैली नगर पालिका प्रांगण से प्रारंभ होकर बड़ चौराहा-स्टेट बैंक चौराहा-नेहरू स्मारक होते हुये कान्हा टायगर रिजर्व कार्यालय प्रांगण में समाप्त हुई।

इस रैली में कान्हा टायगर रिजर्व एवं अन्य क्षेत्रीय वनमंडलों के अधिकारियों/कर्मचारियों तथा विश्व प्रकृति निधि-भारत, मंडला शाखा एवं जिला ईको क्लब के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त एन.सी.सी. के कैडेट्स तथा महाविद्यालयीन छात्र/छात्राओं द्वारा भाग लिया। रैली का शुभारंभ सुश्री ऋषिभा सिंह नेताम, भा.व.से., उप संचालक, कान्हा टायगर रिजर्व द्वारा हरी झंडी दिखाकर किया गया। वन्यप्राणी संरक्षण सप्ताह का मुख्य उद्धेश्य जन सामान्य, विशेषतः शालेय एवं महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं में वन एवं वन्यप्राणियों के महत्व एवं उनके प्रभावकारी संरक्षण का प्रचार-प्रसार करना है। इसके पश्चात कान्हा टायगर रिजर्व कार्यालय के प्रांगण में अधिकारियों द्वारा समस्त उपस्थितों को वन्यप्राणी संरक्षण हेतु शपथ दिलाया गया। कान्हा टायगर रिजर्व के क्षेत्र संचालक सुनील कुमार सिंह, भा.व.से., कान्हा टायगर रिजर्व के निर्देशानुसार एवं योजनानुसार वन्यप्राणी संरक्षण सप्ताह के दौरान कान्हा टायगर रिजर्व कार्यालय के प्रांगण में वन्यप्राणी संरक्षण से संबधित गतिविधियों एवं वन्यप्राणी के छायाचित्रों का जन सामान्य हेतु प्रर्दशनी तथा वन्यप्राणी से संबधित चलचित्र दिखाये जाने का आयोजन किया जाएगा।

इस सप्ताह के दौरान कान्हा टायगर रिजर्व द्वारा महाविद्यालय एवं शालेय स्तर पर वन्यप्राणी संरक्षण से संबधित निबंध, चित्रकला, पोस्टर, क्विज, वाद-विवाद, विविध वेशभूषा, रंगोली एवं बर्ड वाचिंग तथा फोटोग्राफी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जावेगा। इन प्रतियोगिताओं के विजेता छात्र/छात्राओं को कान्हा टायगर रिजर्व द्वारा पुरस्कृत किया जायेगा एवं विजेताओं को निकट भविष्य में कान्हा राष्ट्रीय उद्यान का भ्रमण भी कराया जाएगा।

महिला एवं बाल परियोजना कार्यालय में राष्ट्रीय पोषण मिशन के तहत पंचम पोषण मेले का आयोजन

एनसीआर समाचार

राजस्थान अलवर में पंचायत समिति उमरैन के सभागार में महिला एवं बाल परियोजना कार्यालय में राष्ट्रीय पोषण मिशन के तहत पंचम पोषण मेले का आयोजन किया गया, जिसमें गर्भवती महिलाओं की गोद भराई कार्य के साथ 0 से 6 माह के शिशुओं का अन्नप्राशन करवाया गया और पोषण के लाभों के बारे में जानकारी दी गई। सुबह बालिकाओं द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा साइकिल रैली का आयोजन किया गया, जिसमें रैली को महिला एवं बाल विकास सीडीपीओ अतुल नैनावत के द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। सितंबर माह से पोषण माह के रूप में 1 सितंबर से 30 सितंबर तक प्रतिदिन अलग-अलग आंगनबाड़ी केंद्रों पर गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें गर्भवती महिलाओं व धात्री माताओं को पोषण के लाभ के बारे में विस्तार से बताया गया। कार्यक्रम के तहत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं ने विभिन्न प्रकार के अलग-अलग प्रकार के व्यंजन बनाकर प्रदर्शनी लगाई गई। पंचायत समिति उम्रेन के प्रधान दौलत राम ने मेले में व्यंजनों का निरीक्षण किया, जिसमें कार्यकर्ताओ के द्वारा बनाये गए व्यंजनों की तारीफ की तथा मोटे अनाज के व्यंजन बनाए गए व हरी सब्जियों से भी बनाए व्यंजनों के लाभ बताएं। कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती माता की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया। कार्यक्रम के दौरान जिन कार्यकर्ताओं ने उत्कृष्ट कार्य किया उन्हें भी सम्मानित किया। कार्यक्रम में उमरैण पंचायत समिति प्रधान दौलतराम, पंचायत समिति विकास अधिकारी वीरेंद्र शर्मा, अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी कमलेश गुरु, सीडीपीओ अतुल नैनावद, राष्ट्रीय पोषण मिशन के ब्लॉक समन्वयक रोहिताश शर्मा तथा BPA गुड्डू राम तथा समस्त महिला पर्यवेक्षक कैलाश सैनी व गजेंद्र अलवर एवं समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

स्थायी समितियों के सदस्यों का चुनाव मोहगांव मुख्यालय सभा कक्ष किया गया

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश सुड़गांव जनपद पंचायत मोहगांव की मुख्यालय सभा कक्ष में स्थायी समितियों के सदस्यों की निर्वाचन प्रकिया को निरस्त करते हुए शून्य घोषित किया गया था। आज पुन्हे दोबारा चुनाव कराया गया जिला निर्वाचन अधिकारी ने जनपद पंचायत मोहगांव में स्थायी समितियों के सदस्यों की निर्वाचन प्रकिया को पुनः संम्पन्न कराने के लिए 29 सितंबर की तिथि नियत कर दी है। उक्त निर्वाचन प्रकिया को नियमानुसार एवं पारदर्शिता के साथ सम्पन्न कराने के लिए हरिओम ठाकुर नायब तहसीलदार घुघरी को पीठासीन अधिकारी नियुक्त किया गया है पंचायत इंस्पेक्टर मोहन सिंह परस्ते जनपद सीईओ के के पांडे उपस्थिति में जनपद पंचायत मोहगांव में समिति का चुनाव किया गया जिसमें निम्न क्षेत्र बांटे गए। सामान्य प्रशासन समिति गत सिंह भवेदी पदेन सभापति,शिव कुमार मिश्रा गोंदिया बाई परते, ज्योति मार्को, मयूरी खड़गारे दूसरी कृषि समिति गोंदिया परते सभापति, श्रवण परते, महेंद्र मरकाम, ज्योति मार्को, प्रेमलता उइके, तीसरी शिक्षा समिति शिव कुमार मिश्रा, पदेन सभापति, ज्योति मार्को, श्रवण परते, प्रेमलता उइके, संतरी बाई चौथी संचार तथा संकर्म समिति, ज्योति मार्को सभापति, श्रवण परते, प्रेमलता उइके, गोंदिया परते, महेंद्र मरकाम, पांचवी समिति सहकारिता और उद्योग समिति मयूरी ने हर्ष व्यक्त किया गया।

मध्य प्रदेश मझगवा जनपद में पोषण एवं खाद्य मेला का हुआ आयोजन

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश मझगवा जनपद अंतर्गत कुपोषण की भारी शिकायतें आने की वजह से बाल कल्याण विकास विभाग ने मझगवां जनपद अंतर्गत आने वाले सभी आंगनबाड़ी केंद्र की सहायिका और कार्यकर्ता एवं समूहों की मदद से मझगवां में पोषण मेला का आयोजन किया गया। इस मेले का प्रमुख उद्देश्य है मझगवा जनपद को कुपोषण मुक्त बनाना है। इस मेले में उन समस्त चीजों का प्रदर्शन किया गया, जिससे जच्चा बच्चा के स्वास्थ्य को सुरक्षित किया जा सकता है और शरीर को आवश्यक पोषण उपलब्ध करवाया जा सकता है। मंच पर उपस्थित कई अधिकारी कर्मचारी समाजसेवी लोगों ने मेले में उपस्थित लोगों में जागरूकता पैदा करने की कोशिश की, कि किस तरह जच्चा बच्चा और सामान्य मनुष्य के स्वास्थ्य को सुरक्षित किया जा सकता है। इस दौरान इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से एसडीएम पीएस त्रिपाठी, जनपद अध्यक्ष रेणुका जायसवाल, जनपद सीईओ सुलाब सिंह, सांसद प्रतिनिधि निरंजन जायसवाल, बाल कल्याण विकास विभाग से उपस्थित संजय उरमलिया जी एवं कई समाजसेवी गण उपस्थित थे। इनमें उन समूहों और वालेंटियारो की महत्वपूर्ण भूमिका थी, जिन्होंने पोषण संबंधी आवश्यक चीजों का संग्रह करके इस पोषण मेले में प्रदर्शनी के रूप में रखा। इस प्रदर्शनी में बहुत सारी ऐसी चीजें भी थी, जो सामान्य मनुष्य के दिमाग से विलुप्त हो चुके हैं यहां पर देखकर उन्हें पूछना पड़ रहा था यह कौन सी चीज है वहां पर उपस्थित वालंटियर इन सभी की जानकारी उपलब्ध करवा रहे थे और निश्चित रूप से यहां पर आए हुए समस्त अधिकारी कर्मचारी एवं समाजसेवी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से उपस्थित महिला पुरुष प्रदर्शनी को देखकर जागरूक हुए।

मध्य प्रदेश सिवनी में सेवानिवृत्त होने पर शिक्षक एस एल उइके को दी गई विदाई

इन्द्रमेन मार्को

मध्य प्रदेश सिवनी जिले मुख्यालय से विकास खण्ड घंसौर ग्राम पंचायत कटिया में शासकीय माध्यमिक शाला कटिया में शुक्रवार को विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसमें सेवानिवृत्त हेडमास्टर शिक्षक सुम्मी लाल उइके को विदाई दी गई। समारोह के मुख्य अतिथि शिक्षक चौधरी, दुबे, मरकाम, उइके ने कहा कि शिक्षक को राष्ट्र निर्माता की उपाधि दी गई है। हम उइके से आग्रह करेंगे कि वे सेवानिवृत्ति के बाद भी छात्र-छात्राओं को शिक्षा दान करते रहेंगे। माध्यमिक शिक्षक जनशिक्षक लखेरा ने कहा कि शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होते हैं। वे हमेशा सेवानिवृत्त के बाद उन्हें गुरुजी या मास्टर जी ही बोलते है समाज के लोगों को एक नई दिशा प्रदान करते हैं, जिससे समाज सशक्त और मजबूत होता है। सेवानिवृत्त शिक्षक सुम्मी लाल उइके ने विद्यालय परिवार व स्थानीय ग्रामीणों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि विद्यालय के शिक्षक, छात्र-छात्राओं व ग्रामीणों ने जो सम्मान दिया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता है। मौके पर अतिथियों व विभिन्न शिक्षकों ने उइके को शासकीय माध्यमिक शाला कटिया शिक्षकों ने मंडला जिले सहस्त्रधारा का स्मृति चिन्ह, शाल, बड़े देव, रानी आवंती बाई, श्रीफल आदि भेंटकर सम्मानित किया। इस दौरान घर में भी किया गया सम्मान समारोह आयोजित हुई उइके की पुत्री संगीता सरोते उपस्थित हुए।

संक्षिप्त समाचार

यातायात सुरक्षा एवं जागरूकता अभियान के तहत वाहन चालकों को दी गई जानकारी

सुप्रीम कोर्ट द्वारा जारी दिशा-निर्देशों से स्कूली वाहन चलाने वाले चालकों को अवगत कराया जिले में बेहतर एवं सुचारू यातायात व्यवस्था के लिए जिला पुलिस अधीक्षक अवधेश कुमार गोस्वामी के निर्देशन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मनकामना प्रसाद जिला राजगढ़ के मार्गदर्शन में यातायात पुलिस द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। अभियान के दौरान नवाचार के माध्यम से यातायात के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। जिला मुख्यालय सहित अन्य थाना क्षेत्रों में यातायात पुलिस द्वारा चेकिंग के दौरान क्षेत्र में संचालित स्कूल बसों को चेक किया गया व बस चालकों को बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा स्कूल बसों के लिए जारी दिशा निर्देशों की जानकारी दी गई। साथ ही चालकों के लाइसेन्स भी चेक किए गए। वहीं बस से संबंधित दस्तावेजों की जांच की गई एंव चेकिंग के दौरान बसों में वीडियो कैमरा, अटेंडर, अग्निशमन यंत्र, फर्स्ट ऐड बॉक्स आदि की उपलब्धता के साथ वैधता भी जांच किये गये और क्षमता अनुसार परिवहन करने की समझाईश दी गई।

मध्य प्रदेश शुजालपुर में एक बार फिर विकास पुरुष जसवंत सिंह के गूंजे चर्चे

मध्य प्रदेश शुजालपुर में एक बार फिर विकास पुरुष जसवंत सिंह हाडा द्वारा मध्य प्रदेश वेयर हाउसिंग लाजिस्टिक कारपोरेशन के पूरे प्रदेश के कर्मचारियों के बीच खुशी की लहर आई है। डेलीविजेस पर कार्य करने वाले 4000 से 5000 कर्मचारी को विभाग से हटाए जाने की बात सामने आ रही थी। वहीं कुछ कर्मचारी घबराए हुए थे कुछ कर्मचारी 20 साल से अपनी सेवा दे रहे थे। अब वह सोच रहे थे अब हम क्या करेंगे। वहीं कुछ शुजालपुर के कर्मचारियों ने जसवंत सिंह हाडा को अपनी समस्या बताई हाड़ा सोयम समस्या को लेकर भोपाल गए और मध्य प्रदेश वेयरहाउसिंग लॉजिस्टिक कार्पोरेशन के एमडी सहाब से मिलकर मुलाकात की कर्मचारियों की बात सामने रखी। वहीं एमडी साहब ने भरोसा दिलाया जो कर्मचारी जहां काम कर रहा है। वह वहीं यथावत रहेगा हम उसे नहीं हटाएंगे ऐसे में मदद के लिए पूरे प्रदेश के कर्मचारी हाड़ा को बहुत-बहुत धन्यवाद करते है। ऐसे ही विकास पुरुष नहीं कहलाते है हर व्यक्ति की समस्या को समझना और निराकरण करना इनकी खुबिया इसलिए ये विकास पुरुष कहलाते हैं।

भरतपुर डीग निवासी भानू जोशी को सौंपा गया युवा मोर्चा प्रदेश मीडिया का अतिरिक्त प्रभार: सोनू जाटौली

राजस्थान भरतपुर डीग राष्ट्रीय परशुराम सेना के युवा प्रदेशाध्यक्ष सोनू पंडित जाटौली ने डीग निवासी मीडिया क्षेत्र के उभरते सितारे भानू जोशी को सँगठन के युवा मोर्चा में प्रदेश मीडिया प्रभारी के अतिरिक्त प्रभार पद पर मनोनीत किया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष सुनील पीढ़ी ने बताया कि, भानू जोशी सदैव मीडिया के माध्यम से राजनैतिक और सामाजिक पकड़ रखते हुए समाज के लोगों की मदद के लिए हर संभव प्रयासरत रहते है। इस मौके पर प्रदेश प्रभारी रोहिताश चतुर्वेदी, प्रदेश महामंत्री श्याम सुंदर कटारा,प्रदेश कोषाध्यक्ष मनीष कलसाडा, प्रदेश महासचिव डॉक्टर गुलाब चंद शर्मा, प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष नीतीश कौशिक, प्रदेश प्रवक्ता रविन्द्र मोहन शर्मा, युवा मोर्चा महासचिव मनोज मिश्रा रायपुर, संभाग प्रभारी प्रधानाचार्य ब्रजभूषण शर्मा, महिला जिला अध्यक्ष दीपशिखा शर्मा, अलवर जिला अध्यक्ष सुनील मसारी और कुम्हेर अध्यक्ष हेमू पाहुआ, डीग अध्यक्ष दिनेश शर्मा ने बधाइयां प्रेषित करते हुए शुभकामनाएं दी।

उत्तर प्रदेश हरदोई प्रवर्तन दल उप निरीक्षक के नेतृत्व में चला चेकिंग अभियान

हरदोई शाहाबाद EDD शाहाबाद छेत्र के ग्राम भदेउरा थाना हरियावां में प्रवर्तन दल के उप निरीक्षक सोवरन सिंह के कुशल नेतृत्व में टीम द्वारा विधुत चेकिंग अभियान चलाया गया, जिसमें संयोजन के अतिरिक्त कटिया डालकर विधुत चोरी से उपयोग करते पाए गए उपभोक्ताओं के विरूद्ध अभियोग पंजीकृत कराए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है। धारा 135 1. मेवाराम पुत्र सेवाराम 2. राजन पाण्डे पुत्र सेवाराम 3. अवधेश कुमार पुत्र रघुवीर 4. राजन द्विवेदी पुत्र ओम प्रकाश 5. रिज़वान पुत्र असगर 6. मो० शरीफ़ पुत्र मौसम अली 7. उस्मान पुत्र लडडन 8. वसीम पुत्र करीम 9. चंद्रप्रकाश पुत्र शिवप्रकाश 10. खुशीराम पुत्र रामभजन 11. लल्ला सिंह पुत्र शिवकुमार 12. कान्ति लाल पुत्र भिट्टी लाल 13. चंद्र प्रकाश पुत्र शिव कुमार।

सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत के बावजूद भी नहीं हो रही कार्रवाई

मध्य प्रदेश खरगोन जिले के ग्राम देवली में मुख्यमंत्री भले ही सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत का निराकरण होने की बात कहते हुए ढिंढोरा पीट रहे हैं, लेकिन जिले में यह सीएम हेल्पलाइन सुविधा खोखली साबित हो रही है। अधिकारियों को शिकायतों के निराकरण की और तनिक भी ध्यान नहीं है। वहीं कई अधिकारी एक दूसरे का हवाला देकर शिकायतों को टाल रहे हैं। अब शिकायत कर्ताओ का विश्वास उठता नजर आ रहा है, जहां कसरावद तहसील के ग्राम देवली के ग्रामीणों ने शिकायत की हुई है, लेकिन अभी तक इसका कोई निराकरण नहीं हुआ। क्रमांक 1 के गोविंद भालसे द्वारा अपने घर के पास गंदा पानी इकट्ठा होने और गंदगी जमा होने के संबंध में शिकायत की है, ना तो कोई साफ सफाई करने आया और ना ही गंदा पानी निकालने की कुछ व्यवस्था ग्राम पंचायत देवली द्वारा की गई क्रमांक 2 हरि सिंह, धन सिंह के द्वारा अपने घर पर शौचालय का निर्माण सरकार की योजना में जो प्रोत्साहन राशि मिलती है कर्ज लेकर इस उम्मीद में करवा लिया गया 2 महीने रास्ता देखा गया अभी तक राशि नहीं डाली। क्रमांक 3 दशरथ राठौर के द्वारा नल जल योजना में चेंबर निर्माण में भ्रष्टाचार की शिकायत की।

रांची पुलिस स्पेशल टीम ने किया दूध में मिलावट करने वाली गैंग का खुलासा

नवनीत कुमार पांडे: रांची पुलिस की स्पेशल टीम ने सफेद दूध में मिलावटखोरी एवं फर्जीवाड़े के गोरखधंधे का खुलासा किया है। स्पेशल टीम ने दूध से भरे टैंकर से दूध निकालते हुए 2 लोगों को हिरासत में लिया है। रांची के बुंडू में एनएच 33 के बगल में अवस्थित लाइन होटल में दूध भरे टैंकर से चोरी कर ड्राम में दूध निकालते होटल संचालक एवं सहयोगी को पुलिस ने रंगेहाथ लिया। रांची एसएसपी कौशल किशोर के निर्देश पर रांची के बुंडू से दूध के टैंकर से दूध चोरी कर मिलावट करते 2 लोग पकड़े गए।

दिव्यांग बच्चों के लिए परामर्श दात्री कार्यक्रम का आयोजन

घनश्याम दास

राजस्थान मसूदा समग्र शिक्षा अभियान के तहत मसूदा ब्लॉक के तत्वाधान में समावेशी शिक्षा के अंतर्गत दिव्यांग बालक बालिकाओं एवं उनके अभिभावकों हेतु प्रथम अभिभावक परामर्श दात्री कार्यक्रम का आयोजन बिजयनगर के राजकीय नारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय में संपन्न हुआ। आयोजन समारोह में मसूदा उपखंड अधिकारी संजु मीणा व प्रधानाचार्य पुरुषोत्तम शर्मा राजकीय नारायण उच्च माध्यमिक विद्यालय बिजयनगर, सुरेंद्र सिंघवी अध्यक्ष प्राज्ञ जैन युवा मंडल बिजयनगर, व राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाड़ी प्रमीला और रासलोत प्रधानाचार्या लॉयन अमित लोढ़ा क्षेत्रीय अध्यक्ष लायंस इंटरनेशनल, लॉयन ज्ञानचंद कोठारी अध्यक्ष लायंस क्लब बिजयनगर रॉयल मौजुद रहे। कार्यक्रम प्रभारी महावीर व्यास ने कार्यक्रम का परिचय एवं इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में चर्चा की गई और सरकार की ओर से दिव्यांग बच्चों को मिलने वाली आर्थिक सहायता देने वाली योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। विशेष शिक्षक कैलाश चंद्र छीपा ने 21 प्रकार की दिव्यांगताओं के बारे में विस्तृत जानकारी बताई गई एवं दिव्यांग का प्रमाण पत्र बनाने की प्रक्रिया को विस्तृत रूप से बताया गया। वही अभिभावक परामर्श दात्री कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला गया। प्रमीला रासलोत प्रधानाचार्या ने बताया कि दिव्यांग बालकों को हीन भावना नहीं आने दे इसके लिए अभिभावकों को उन्हें हमेशा प्रोत्साहन करते रहना चाहिए एवं एक उत्कृष्ट प्रसंग के माध्यम से बालकों में सकारात्मक सोच विकसित करने का भाव पैदा किया। इस दौरान पुरुषोत्तम शर्मा प्रधानाचार्य ने कहा कि, दिव्यांग विद्यार्थियों के माता-पिता को चाहिए कि, वे अपने बच्चों को हमेशा आगे बढ़ाना चाहिए। कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी संजू मीणा ने कहा कि, समस्त दिव्यांग बच्चों एवं अभिभावकों को यह समझना चाहिए कि, दिव्यांग का कोई अभिशाप नहीं है। इसे कमजोरी नहीं समझे, साथ ही समस्त दिव्यांग बालकों अभिभावकों का उत्साह वर्धन किया गया और व्यक्तिगत तौर पर सभी से आग्रह किया कि मैं आप सभी के साथ हूँ कोई भी काम हो तो मुझे सूचित करें। शिक्षा विभाग द्वारा प्राप्त दिव्यांग विधार्थियो को अंग उपकरण के रूप मे व्हील चैयर, ट्राई साइकिल, सी पी चैयर, कान मे सुनने की मशीन, ब्रेल किट एवं अन्य सामग्री का वितरण सम्माननीय अतिथियों द्वारा किया।

इंदिरा रसोई योजना में बढ़ रही है खाने वाले लोगों की संख्या

घनश्याम दास

राजस्थान में पिछले दिनो 18 सितंबर 2022 को राजस्थान में 750 इंदिरा रसोई का उद्घाटन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने किया। इस क्रम में कोटपूतली में कृषि मंडी व बीडीएम अस्पताल में इंदिरा रसोई योजना का उद्घाटन गृह राज्य मंत्री राजेंद्र सिंह यादव ने किया।

पहले ही दिन दोनों रसोइयों में लगभग 400 से ज्यादा लोगों ने खाना खाया आज 11वें दिन 600 से ज्यादा लोग रोज खाना खा रहे हैं रसोई संचालक ओपन फॉर स्माइल एन.जी.ओ के संयोजक अर्जुन सक्सेना ने बताया कि 1 हफ्ते के भीतर इस रसोई को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है। अकेले कृषि मंडी में 400 से ज्यादा लोग रोज खाना खा रहे हैं। बता दें कि यह सरकार की फ्लैगशिप योजना के अंतर्गत संचालित है, जिसे स्वायत शासन विभाग द्वारा संचालित किया जा रहा है। नगर परिषद कमिश्नर फतेह सिंह मीणा का कहना है कि जिस तरह लोगों को कम लागत पर भोजन उपलब्ध करा रही है वह प्रशंसनीय है। मंत्री राजेंद्र सिंह यादव ने पिछले सप्ताह रसोई का उद्घाटन करते हुए इस योजना की प्रशंसा की थी सहायक राजस्व निरीक्षक सौरभ गुप्ता ने कहा कि 8 रुपे में लोगों को सम्मान पूर्वक स्वादिष्ट भोजन दोनों समय दिया जा रहा है। कोई भी व्यक्ति वहां आकर खाना खा सकता है खाने की गुणवत्ता काफी अच्छी व पौष्टिक है। संचालक अरुण सक्सेना ने बताया कि रसोई में वे कभी-कभी हलवा, खीर, पनीर की सब्जी, पूरी इत्यादि भी परोसते है। भोजन में पांच रोटी सब्जी दाल व चार परोसा जाता है। खाना खाने वालों लोगों ने उनका रसोई के खाने की तारीफ की तथा सरकार की इस योजना की प्रशंसा की है।

मप्र में निकली चुनरी यात्रा, पुष्प वर्षा कर जगह-जगह किया स्वागत

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश में खुशहाली की कामना के साथ शहर में निकली चुनरी यात्रा पुष्प वर्षा कर जगह-जगह किया स्वागत पूर्व कृषि मंत्री एवं कसरावद विधायक के नेतृत्व में कसरावद कृषि उपज मंडी से शुरू हुई विशाल भव्य चुनरी यात्रा में पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं मध्य प्रदेश के पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष अरुण यादव हुए शामिल।

मध्य प्रदेश के पूर्व कृषि मंत्री एवं कसरावद विधायक के नेतृत्व में कसरावद की कृषि उपज मंडी प्रांगण से शुरू हुई भव्य विशाल चुनरी यात्रा। यात्रा देश की खुशहाली व समृद्धि के लिए गुरुवार को चुनरी यात्रा निकाली गई। इसमें हजारों महिला एवं पुरुष हुए शामिल। पूजा नावडातौडी के मां रेवा नर्मदा नदी तट पर स्थित शालीवाहन मंदिर में शिवलिंग की पूजा के साथ यात्रा शुरू हुई। पुरुष एवं महिलाएं कृषि उपज मंडी प्रांगण में पहुंची। इस दौरान सिर में साफा बांधे महिलाओं ने बैंड बाजे के धुन पर जमकर डांस किया। शहरवासियों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। मुस्लिम समुदाय के शहर सदर एवं मुस्लिम जनों ने भी में स्वागत किया। आयोजन कसरावद विधायक के नेतृत्व में मां रेवा नर्मदा की चुनरी यात्रा निकाली गई जिसमें पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव, कसरावद ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष शेरू यादव, कसरावद जनपद पंचायत अध्यक्ष सारिका राजेश बागदरे, जनपद पंचायत के उपाध्यक्ष, कसरावद नगर परिषद अध्यक्ष विमल राजेंद्र सिंह यादव, भी मौजूद रहे।

मां नर्मदा चुनरी यात्रा शुरू हुई कसरावद कृषि उपज मंडी से विजय स्तंभ चौराहा इंदौर रोड छोटा नाका होते हुए नगर के विभिन्न मार्गो से होते हुए बड़े धूमधाम हर्षोल्लास के साथ भव्य विशाल चुनरी यात्रा विजय स्तंभ पहुंची यातायात व्यवस्था बनाने में कसरावद थाना प्रभारी पुष्प करण मुवेंल सहित बड़ी संख्या में जवान मुस्तैद किए गए थे।

हिमाचल प्रदेश पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र साबित होगा 'देव लोक': जय राम ठाकुर

एनसीआर समाचार

हिमाचल प्रदेश मुख्यमंत्री ने मनाली के निकट 46 करोड़ रुपये से निर्मित पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर ने आज मनाली के निकट बड़ाग्रां बिहाल में सार्वजनिक निजी भागेदारी के अन्तर्गत 46 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र का लोकार्पण किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि मनाली विश्व प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है और एशियन डेवल्पमेंट बैंक की परियोजना पारम्परिक कला एवं शिल्प केन्द्र 'देव लोक' यहां आने वाले कला प्रेमियों और पर्यटकों के लिए उत्कृष्ट स्थल साबित होगा। यह महत्वाकांक्षी परियोजना प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रदर्शित करेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश न केवल प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए जाना जाता है, बल्कि पर्वतारोहण, रॉक क्लाइबिंग, रिवर राफ्टिंग और पैराग्लाइडिंग जैसे साहसिक खेलों के लिए भी यह आदर्श स्थल है। जय राम ठाकुर ने कहा कि इस केंद्र के माध्यम से स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को अपने उत्पाद के प्रोत्साहन, प्रदर्शन और बाजार उपलब्ध करने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि 22 एकड़ में फैली यह परियोजना साहसिक पर्यटन प्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र साबित होगी। शिक्षा मंत्री गोविन्द सिंह ठाकुर ने कहा कि 'देव लोक' इस क्षेत्र में आने वाले पर्यटकों के लिए एक बड़ा आर्कषण होगा। उन्होंने कहा कि इसके माध्यम से पर्यटकों को हिमाचल प्रदेश की समृद्ध और विविध इतिहास के बारे में जानने का अवसर प्राप्त होगा। उन्होंने इस महत्वाकांक्षी योजना में स्थानीय लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए दीपा साही का आभार व्यक्त किया। प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक और देव लोक के प्रोमोटर दीपा साही और केतन मेहता ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए कहा कि यह प्रोजेक्ट हिमाचल प्रदेश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को प्रोत्साहित तथा संरक्षित करने में मील पत्थर साबित होगा। उपायुक्त कुल्लू आशुतोष गर्ग, पुलिस अधीक्षक गुरूदेव शर्मा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे।

राजस्थान भिनाय के नागोला में फिर से लहराएगा भगवा, मेले के दौरान वॉलीबॉल टूर्नामेंट का हुआ आयोजन

घनश्याम दास

राजस्थान अजमेर के भिनाय उपखंड की ग्राम पंचायत नागोला कस्बे में चमत्कारी भेरुजी महाराज के मेले का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय मेले के आयोजन में दर्शनार्थी चमत्कारी भैरव नाथ के दर्शन कर अपना जीवन सफल करेंगे। आयोजन मेले के दौरान विगत रात्रि विशाल भजन संध्या में कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियां दी। भजन संध्या का शुभारंभ भजन सम्राट दीपक तिजारा ने गणपति वंदना से किया। उसके बाद म्हारा सतगुरु आया पावणा, सियाराम जी का डंका बजा दिया लंका में आदि भजनों की प्रस्तुतिया दी। वहीं मैंने भेरुजी के जाबा की मन में लगी, व घुमा दे मारा बालाजी घमर घमर घोटो नागोला में फिर से भगवा लहराएंगे आदि भजनों पर श्रोताओं को झूमने पर मजबूर कर दिया। (भजन गायिका जय श्री नीमच ने देना है तो दीजिए जन्म-जन्म का साथ), भेरुजी मतवाला, तेरे दर्शन को जी ललचावे भेरू नाथ आदि भजनों पर श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। नृत्यांगना सोनू सैनी सिमरन कपूर के बेटे ने जलवा बिखेरा। कॉमेडी व जादूगर कलाकार सांवर सेन में चुटकुलों से श्रोताओं को लोटपोट कर दिया। मुख्य अतिथि के रूप में भिनाय थानाधिकारी महावीर प्रसाद मीणा व विशिष्ट अतिथि के रूप में मंगल चंद जैन भीलवाड़ा ने मां सरस्वती के छायाचित्र पर दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि थानाधिकारी ने कहा कि मेले हमारी भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं।

शराब माफिया के विरूद्ध गोण्डा पुलिस की बड़ी कार्यवाही, 65 लाख की सम्पत्ति हुई जब्त

एनसीआर समाचार

पुलिस अधीक्षक गोण्डा आकाश तोमर ने ऑपरेशन गैंगेस्टर के तहत गैंगस्टरों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षों को दिए थे। उक्त निर्देश के अनुक्रम में क्षेत्राधिकारी मनकापुर के निर्देशन में थाना को० मनकापुर पुलिस ने मु0अ0स0- 249/21, धारा 3(1) उत्तर प्रदेश गिरोहबंद एवं समाज विरोधी क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1986 बनाम- संजय जायसवाल पुत्र पलझन निवासी ददुआ बाजार मकार्थीगंज थाना कोतवाली नगर जनपद गोंडा पंजीकृत किया था। इसी परिपेक्ष्य में जिला मजिस्ट्रेट गोंडा के वाद संख्या- 2267/2022 सरकार बनाम संजय जायसवाल के विरुद्ध धारा-14(1) के तहत संपत्ति कुर्की आदेश पारित किया गया था, जिसके अनुपालन में 29 सितंबर 2022 को क्षेत्राधिकारी मनकापुर व प्रभारी निरीक्षक मनकापुर व तहसीलदार गोण्डा के नेतृत्व में थाना मनकापुर पुलिस द्वारा गैंगस्टर संजय जायसवाल की अपराध से अर्जित ग्राम सभा इमिलिया गुरुदयाल में स्थित दो मंजिला मकान कीमती ₹65,00000/-(65 लाख) की सम्पत्ति कुर्क की गयी।

उत्तर प्रदेश अनूपशहर में त्रिदिवसीय क्षेत्रीय माध्यमिक विद्यालय खेलकूद प्रतियोगिता का हुआ शुभारंभ

एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश बुलंदशहर एलडी ए वी इंटर कॉलेज अनूपशहर के द्वारा खेल मैदान में अनूपशहर क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों की त्रिदिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारंभ उप जिला अधिकारी अनूपशहर वी के गुप्ता ने फीता काटकर तथा आठ सौ मीटर दौड़ को हरी झंडी दिखाकर किया। उप जिलाधिकारी वी के गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि खेलों में विकास की असीम संभावनाएं निहित है। खेल के माध्यम से विद्यार्थी अपने उज्जवल कैरियर का निर्माण कर सकते हैं। खेल में हार जीत नहीं बल्कि खेल भावना का महत्व होता है। सभी विद्यार्थी खेल की सच्ची भावना के साथ खेलों में प्रतिभाग करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय की प्रधानाचार्य शशि बाला पंत ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि, खेल से विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में खेलों का स्थान सर्वोपरि होता है। विद्यार्थी अधिक से अधिक संख्या में खेलों में भाग लेना चाहिए। एक दर्जन से अधिक माध्यमिक विद्यालयों के सैकड़ों छात्र छात्राओं ने खेलों में प्रतिभाग किया। संचालन अखंड प्रताप सिंह ने किया। इस अवसर पर अभय सिन्हा, अखण्ड प्रताप सिंह, धर्मेंद्र कुमार, बलवीर सिंह भाटी, अनिरुद्ध सिंह, बहादुर सिंह, मनोज यादव, संजय सिंह, गजनेश सिंह, कौटिल्य चौहान, अजय कुमार, अजय कुमार सोम, सुशील शर्मा, बृजेश कुमार राजेश उपाध्याय, दिगंबर सिंह, कु.इकरा कु. पूजा, कु.राधिका शर्मा आज व्यायाम शिक्षकों का विशेष सहयोग रहा। सब जूनियर बालक वर्ग 600 मीटर दौड़ में रिंकू एलडीएवी प्रथम, गौरीशंकर एलडीएवी द्वितीय, अंकुश एसकेआईसी जहांगीराबाद तृतीय, जूनियर बालक वर्ग 100 मी दौड़ में सागर एलडीएवी प्रथम, दिनेश कुमार बीपीएस जहांगीराबाद द्वितीय, अरुण कुमार शिक्षा सदन इंटर कॉलेज जटपुरा तृतीय, 800 मीटर सीनियर बालक वर्ग में चेतन शिवकुमार कॉलेज प्रथम, लविश चौधरी शिक्षा सदन इंटर कॉलेज जटपुरा द्वितीय, पंकज श्योदान सिंह इंटर कॉलेज तालिविवियाना तृतीय, जूनियर बालिका वर्ग 800 मीटर दौड़ में कुमारी तनिका परदादा परदादी प्रथम, कुमारी मधु परदादा परदादी द्वितीय, यशिका टैगोर मेमोरियल शिवाली तृतीय, 800 मीटर जूनियर बालक वर्ग में दीपक ताल विवियाना प्रथम, मनीष जहांगीराबाद द्वितीय, अभय जटपुरा तृतीय स्थान पर रहे। 800 मीटर दौड़ बालिका सीनियर वर्ग में काजल पी पी आई सी प्रथम, संजना एलडीएवी द्वितीय, कनक बीपीएस तृतीय स्थान पर रहे।

संक्षिप्त समाचार

इटावा सुशीला हॉस्पिटल में पिता की गलती से हुई नवजात की मौत

उत्तर प्रदेश अस्पताल संचालक डॉक्टर डी.के. सिंह ने बताया कि नवजात की हालत गंभीर थी और ऑक्सीजन लगने के बाद बच्चे की हालत में सुधार हो रहा था और इलाज के लिए बच्चे को कुछ दिन और भर्ती रखना था लेकिन बच्चे के पिता ने जिद्द कर जबरदस्ती बच्चे को अस्पताल से डिस्चार्ज करवाकर अपनी मर्जी से अस्पताल से ले गए थे जिसके तीन घंटे बाद बच्चे की मौत हो गई और बाद में बच्चे के पिता ने शराब के नशे में अपने दो दर्जन से अधिक साथियों के साथ अस्पताल में आकर अस्पताल में मौजूद स्वास्थ्यकर्मियों के साथ बदसलूकी की जिससे अस्पताल में तीन से चार घंटे तक स्वास्थ्य सेवाए बाधित हुई बाद में मृतक नवजात के पिता ने पुलिसकर्मियों से बदतमीजी की है। साथ ही उन्होंने कहा की इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सीनियर पदाधिकारियों से वार्ता करने के बाद आरोपी नवजात के पिता के खिलाफ विधिक कार्यवाही के लिए पुलिस को आवेदन दिया जाएगा।

कुत्ते को दिल्ली जिला अधिकारी के दफ्तर में सोता देख व्यवस्था पर उठे सवाल

दिल्ली के जिला अधिकारी के दफ्तर में जहां लोगों की आवाजाही लगी रहती है वहां कुछ ऐसा देखने को मिला जिसे देखने के बाद लोग हैरान हो गए। दरअसल जिला अधिकारी के दफ्तर में कुत्ता फर्श पर सोता हुआ मिला, जिसको देखने के बाद लोगों ने दफ्तर की व्यवस्था पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। इस तस्वीर में साफ़ देखा जा सकता है कि किस तरह लोगों का एक तरफ से दूसरी तरफ आना जाना हो रहा है और इसी बीच बड़ी ही तसल्ली से एक कुत्ता फर्श पर सो रहा है। वहां मौजूद लोगों को इससे कोई आपत्ति नहीं है और न ही कोई परेशानी, फिर भी लोग इसलिए हैरान रह गए की इतने बड़े दफ्तर में कोई आवारा पशु कैसे आकर सो सकता है, क्या व्यवस्था ठीक तरह से नहीं चलाई जा रही ?

पुलिस चौकी की नाक के नीचे गुमटी में अवैध गांजा बेचने वालो का वीडियो वायरल

वीरेन्द्र सिंह यादव / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश के जिला बहराइच में बिक रहा अवैध गाजा चिपड खुले आम मेन रोड पर यह मामला बहराइच झिंगहा बस स्टैण्ड पर खुले गुमटी मे रखकर बेचा जा रहा पुलिस बनी अनजान नई नस्ल को कर रहे हैं बर्बाद खुलेआम बेच रहे हैं गांजा चिपड मेन रोड पर पुलिस की नाक के नीचे चंद कदमों की दूरी पर है चौकी फिर भी फिर भी इनको डर और खौफ नहीं है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक केशव कुमार चौधरी की छवि को कर रहे धुमिल एक तरफ एसपी साहब ईमानदारी का पाठ पढा रहे दूसरी तरफ उनकी ही छवि को डुमिल सूत्रों की माने तो बेचने वाले का नाम विक्रम यादव बताया जा रहा है। वीडियो हुआ सोशल मीडिया पर वायरल गुमटी में गांजा बेचने का क्या इनको किसी बात का डर और खौफ नहीं है खबर प्रकाशित होने पर क्या होगी कार्रवाई कि ऐसे ही चलता रहेगा इनका मेन रोड पर कारोबार कोई नहीं है पूछने वाला।

मध्य प्रदेश शुजालपुर परशुराम सेना महिला प्रकोष्ठ जिला कार्यकारणी का गठन

मध्य प्रदेश शुजालपुर परशुराम सेना प्रदेशाध्यक्ष देवकरण शर्मा और मुख्य प्रबन्धन समिति सदस्यों की सहमति एवं प्रदेश संयोजक आराधना शर्मा की अनुशंसा से जिला शाजापुर की जिला कार्यकारणी महिला प्रकोष्ठ का गठन हुआ जिसमें शुजालपुर की सामाजिक कार्यकर्ता रश्मि अवस्थी को जिलाध्यक्ष, प्रीति उपाध्याय को जिला उपाध्यक्ष, कृष्णा पाठक को नगर अध्यक्ष शुजालपुर नियुक्त किया साथ ही शाजापुर की सामाजिक कार्यकर्ता आराधना मेहता को जिलसंयोजक के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया गया। नियुक्तिपत्र प्रदान करने वालो में ब्राह्मण समाज शाजापुर अध्यक्ष विनीत वाजपेयी, मुख्य प्रबन्धन समिति सदस्य ललीत तिवारी, मुख्य प्रबंधन समिति सदस्य ओम पंचोली, जिलाध्यक्ष अनिल पाठक, नगर अध्यक्ष शाजापुर सीमा शर्मा, महामंत्री कपिल व्यास, महेंद्र शर्मा, संजय शर्मा, शैलेन्द्र शर्मा, पंकज उपाध्याय, महेंद्र आचार्य, रिंकू तिवारी, गुड्डा राम, उमंग शर्मा, रामस्वरूप शर्मा, मनोज दीक्षित, जाय शर्मा आदि उपस्थित थे।

उ. प्र हरदोई DM, SP और ज़िला जज ने ज़िला कारागार का औचक निरीक्षण किया

उत्तर प्रदेश हरदोई जिला अधिकारी मंगला प्रसाद सिंह, पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी तथा जिला जज राज कुमार सिंह ने संयुक्त रुप से जिला पुरुष एवं महिला कारागार का निरीक्षण किया सभी अधिकारियों ने बैरक में जाकर कैदियों की समस्याओं संबंधित जानकारी ली पुरुष व महिला कैदियों को मीनू के अनुसार प्रत्येक दिन गुणवत्ता पूर्वक भोजन उपलब्ध कराने को कहा जिलाधिकारी ने कैदी महिलाओं के बच्चों को रोज़ फल व दूध देने को कहा साथ ही कारागार अस्पताल के चिकित्सकों को निर्देश दिए कि गंभीर कैदियों को ज़िला अस्पताल में भर्ती कराया जाए तथा समय-समय पर सभी कैदियों का स्वास्थ्य संबंधित परीक्षण करवाया जाए। निरीक्षण के दौरान अपर ज़िलाधिकारी वंदना त्रिवेदी, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट दिव्या मिश्रा, जेल अधीक्षक उदय प्रताप सिंह व सूचना अधिकारी संतोष कुमार तथा जेलर संजय कुमार सिंह उपस्थित रहे।

मध्य प्रदेश नगर वार्ड वासियों द्वारा कलेक्टर के नाम ज्ञापन सौंपा

मध्य प्रदेश वार्ड क्रमांक 16 विट्ठल नगर वार्ड वासियों द्वारा कलेक्टर के नाम ज्ञपन सौंपा गया, जिसमें वार्ड वासियों ने कहा कि विगत दिनों भारी बारिश से काफी क्षति हुई थी जिसमें आपदा प्रबंधन की ओर से राहत सामग्री वितरित की गई, लेकिन वर्तमान वार्ड पार्षद एवं उचित मूल्य दुकान संचालक सुकलाल अहिरवार की मिलीभगत से उक्त राशन अपात्र परिवारों को दे दिया गया जो पात्र व्यक्ति हैं उन्हे नहीं मिला, इससे वार्ड वासियों मे रोस उत्पन्न है। वार्ड वासी राजेश जाटव ने कहा है कि उचित मूल्य दुकान संचालक के घर में पानी भर सकता है। वर्तमान पार्षद के घर में पानी भर सकता परन्तु गरीव जनता के घर मे नही आम आदमी पार्टी जिला मीडिया प्रभारी लक्ष्मीकांत राज ने कहा की विट्ठल नगर वार्ड में आपदा प्रबंधन की ओर से 50 किलो राशन सामग्री वितरित की गई थी जिसमें विट्ठल नगर वार्ड के अधिकांश घर में पानी भर गया था, राशन के साथ-साथ ₹2000 आर्थिक सहायता भी शासन को प्रदान करनी चाहिए।

श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब अनाज मंडी के मंच पर छठे दिन राम वनवास का हुआ मंचन

एनसीआर समाचार

हरियाणा में भगवान नारायण सेवा संस्था (रजि) द्वारा श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब अनाज मंडी के मंच पर छठे दिन कोप भवन भाग -2, राम वनवास का मंचन हुआ भगवान नारायण सेवा संस्था रजिस्टर्ड द्वारा श्री कृष्णा ड्रामेटिक क्लब अनाज मंडी के मंच पर छठे दिन कोप भवन भाग 2, दशरथ कैकई संवाद तथा राम बनवास की लीला का मंचन हुआ रामलीला के सचिव मनोज निर्मल ने बताया कि रामलीला में मुख्य अतिथि राजकुमार यादव एडवोकेट (राता वाले) प्रमुख समाज सेवी तथा डॉ. अमित गुप्ता (मैनेजिंग डायरेक्टर C.L ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन) के द्वारा सरस्वती मैया के दीप प्रज्वलित कर गणेश पूजन के साथ रिबन काटकर लीला को प्रारंभ करवाया। रामलीला के संरक्षक दयानंद सैनी (मंत्री) ने बताया कि केकई कोप भवन में चली जाती है और वहां जाकर पूरे भवन को अस्त व्यस्त कर के अंधेरे में जमीन पर सो जाती है तब राजा दशरथ कोप भवन में आते हैं और केकई से उसकी उदासी का कारण पूछते हैं केकई नहीं बताती तब दशरथ और कैकई में संवाद होते हैं दशरथ केकई को मनाने की कोशिश करता है तब केकई राजा दशरथ को अपनी बातों में उलझा कर उन्हें कहती है कि जब देवासुर संग्राम में मैंने तुम्हारी रक्षा की थी तब तुमने मुझे दो वर लेने को कहा था वह समय आ गया है मैं वह दो बार आज आप से मांगूंगी मुझे वचन वचन दीजिए कि आप मुझे दोनों वर दे देंगे राजा दशरथ केकई को दोनों वचन देने का संकल्प

करते हैं। तब दशरथ को कहती है कि मेरे पहले वचन में भरत का राज्य अभिषेक तथा दूसरे में राम को 14 वर्ष का वनवास यह सुनकर राजा दशरथ बड़े दुखी होकर विलाप करते हैं कि केकई तुमने यह क्या मांग लिया परंतु होनी को कौन टाल सकता है राजा दशरथ को वह दोनों वर केकई को देने पड़े लेकिन राजा दशरथ राम को वनवास जाने के लिए कह नहीं सकते थे जब राम दशरथ से मिलने आए तब राजा दशरथ से उनके दुखी होने का कारण पूछा तब राम को राजा दशरथ ने कुछ नहीं कहा परंतु राम सब समझ गए थे और राजा दशरथ को उनके वर पूरे करने का वचन देकर कहते हैं पिताजी मैं आपका वचन पूरा करूंगा मैं 14 वर्ष के लिए मै वन जाऊंगा तब भगवान राम कौशल्या से वन जाने के लिए आज्ञा लेते हैं कौशल्या जी मना करती है लेकिन राम का संकल्प देखकर मैं दुखी होकर रह जाती है। सीता भी राम के साथ वन जाने के लिए जिद करती है राम कहते हैं तुम यहीं पर रहकर सास ससुर की सेवा करो लेकिन सीता नहीं मानती तभी लक्ष्मण विलाप करते हुए वहां पर भैया भैया करते हुए आते हैं और उनके चरणों में पढ़कर जोर जोर से रोने लगते हैं और कहते हैं मोहे छोड़ स्वामी कौन पर कानन को किनो गौन है हे प्रभु मुझे अकेला छोड़कर आप वन में कहां जा रहे हैं मैं आपके बिना जिंदा नहीं रह पाऊंगा तब दोनों में संवाद होते हैं लक्ष्मण नहीं मानता लक्ष्मण कहता है कि या तो मेरा वन गमन होगा या मेरे आपके चरणों में प्रणाम गमन होंगे तब राम जी उन्हें साथ लेने के लिए मान जाते हैं तब राम लक्ष्मण सीता तीनों वन जाने को तैयार हो जाते हैं यह दृश्य देखकर सभी लोग भावुक हो जाते हैं सभी की आंखों में आंसू आ जाते हैं कि भाई भाई का प्रेम ऐसा होना चाहिए तब भगवान राम वन को निकल जाते हैं और रास्ते में उन्हें निषादराज मिलते है। राम- नवीन सिंघल, लक्ष्मण- भारत अग्रवाल, सीता- संजय प्रजापति, केकई- संजय वर्मा, दशरथ- अतम प्रकाश अग्रवाल, कौशल्या- भारत भूषण कंछल ,सुमंत- बालवीर, नगरवासी- हिमांशु निर्मल, दयानंद सैनी, दीपक सेन ,पार्थ कंछल, मंच संचालक- भारत भूषण तायल, फोटोग्राफर- मुकेश, सतीश बेदी आदि कलाकारों ने अपनी कला से सबका मन मोह लिया।

अजमेर संभाग में पेयजल आपूर्ति सुचारू रूप करना सुनिश्चित किया जाए

एनसीआर समाचार

राजस्थान अजमेर अतिरिक्त मुख्य सचिव जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी डॉ. सुबोध अग्रवाल ने कहा कि अजमेर संभाग में पेयजल आपूर्ति सुचारू रूप से एवं तय समय अंतराल पर करना सुनिश्चित किया जाए। डॉ. अग्रवाल गुरूवार को अजमेर कलेक्ट्रेट सभागार में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के संभाग स्तरीय अभियंताओं की समीक्षा बैठक ले रहे थे। उन्होंने अजमेर शहर में जलापूर्ति व्यवस्था के बारे में जानकारी ली और तय समय अंतराल में पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभिन्न परियोजनाओं के कार्यो में गुणवत्ता बनाए रखने तथा सर्कल स्तर की गुणवत्ता नियंत्रण टीमों को समय पर गुणवत्ता निरीक्षण करने के निर्देश दिए। डॉ. अग्रवाल ने 2 अक्टूबर को प्रस्तावित ग्राम सभाओं में शत-प्रतिशत जल कनेक्शन वाले गांवों को हर घर जल गांव प्रमाण पत्र जारी करने के भी निर्देश दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने कहा कि जनता जल योजना के विद्युत कनेक्शनों को पीएचईडी विभाग के नाम स्थानान्तरित करवाने की प्रक्रिया में तेजी लाएं एवं इस योजना पर कार्यरत कार्मिकों के बकाया मानदेय का भुगतान शीघ्र किया जाए। उन्होंने जल जीवन मिशन के तहत प्रतिदिन दिए जाने वाले जल कनेक्शनों की संख्या बढ़ाकर दुगुनी करने के निर्देश दिए। उन्होंने विधानसभा में उठाए गए प्रश्नों के जवाब, वीआईपी पत्रों, राजस्थान संपर्क पोर्टल की शिकायतों, हैण्डपंप-ट्यूबवैल स्थापना, लंबित विद्युत कनेक्शन आदि की समीक्षा की और इनके समय पर निस्तारण के निर्देश दिए। बैठक में विशेष परियोजना एवं रेगुलर विंग के संभाग स्तर के अभियंता शामिल हुए।

ग्राम पंचायत तालपुरा में उचित मूल्य की दुकान खोलने के मुख्यमंत्री चौहान ने दिए निर्देश

एनसीआर समाचार

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बुधनी विकासखंड की ग्राम पंचायत तालपुरा में मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम में लाभांवित हितग्राहियों को स्वीकृति पत्र एवं सामग्री का प्रतीक स्वरूप वितरित किया। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री डेयरी प्लस योजना का भी शुभारंभ किया। उन्होंने मंच से ही आवेदकों द्वारा प्रस्तुत किए गए आवेदनों का निराकरण करने के अधिकारियों को निर्देश दिए। साथ ही स्वयं आवेदकों से चर्चा कर उनकी समस्याओं को सुना। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान के शिविर आमजनों को योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए ही लगाए जा रहे हैं। इन शिविरों के माध्यम से सभी पात्र हितग्राहियों को योजना का लाभ मिले, इसके लिए विशेष शिविर आयोजित करें। कार्यक्रम में उन्होंने मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान अंतर्गत विभिन्न योजनाओं से लाभांवित हितग्राहियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री चौहान ने मुख्यमंत्री डेयरी प्लस योजना का शुभारंभ करते हुए चिन्हित हितग्राहियों से संवाद कर उनके पशुपालन व्यवसाय के संबंध में जानकारी प्राप्त की और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। मुख्यमंत्री डेयरी प्लस योजना के तहत हितग्राहियों को दो मुर्रा भैंस प्रदाय की गई हैं। मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री डेयरी प्लस योजना से लाभांवित हितग्राहीयों समेत अन्य से संवाद कर उनका हालचाल जाना और उनसे उनके व्यवसाय के संबंध में जानकारी प्राप्त की। साथ ही उन्होंने योजना से लाभान्वित अन्य हितग्राहियों से भी संवाद किया। हितग्राहियों से संवाद कर उन्होंने योजना के लाभ प्राप्ति के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने मंच पर प्रश्नोत्तरी संवाद कर शिविर में आए आवेदनो, आवेदन का विषय, आवेदनों के निराकरण तथा योजनाओं से वंचित पात्र हितग्राहियों के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने तालपुरा सहित अन्य चार ग्राम पंचायतों में विशेष राजस्व शिविर आयोजित कर राजस्व संबंधी प्रकरणों का शत-प्रतिशत निराकरण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने ग्राम पंचायत तालपुरा में नवीन उचित मूल्य दुकान खोलने के निर्देश दिए। साथ ही डेयरी व्यवसाय से प्रदेश के किसानों की आय में वृद्धि हो और वे पशुपालन कर अधिक से अधिक आय अर्जित कर सके।

लम्पी से मरने वाले मवेशियों के मालिकों को दें अनुदान

एनसीआर समाचार

राजस्थान में लंपी रोग महामारी की वजह से मरने वाले पशुधन मालिको को तत्काल अनुग्रह अनुदान देने के साथ ही भविष्य मे उत्पन्न होने वाले खतरे के अनुसार जल्द से जल्द टिका उपलब्ध कराकर कर्मचारियों को मुख्यालय निवास स्थान पर रहेने के आदेश देने कि मांग युवा कॉंग्रेस ने न्यापन के जरिये जिलाधीश को की। अमरावती जिले सहीत पुरे देश के पशुवोपर पर लंम्पी का कहर जारी है, ग्रामीण इलाको में बहोत सारे पशुधन टिका न मिलने और उपचार न मिलने की वजह से मर रहे है। इससे लोखो

लोगों का जिवन भरण पोषन निर्भर है लेकीन सरकार है की जागने का ढोंग कर रही है, अस्थायी राहत के रुप में तुरंत 15000 हजार रुपये की साहाय्यता करणी चाहीये। बडी मात्रा में टिका शिबीर का आयोजन कराकर गौमाता को इस लंम्पी वायरस से बचाना चाहीये। संबधीत विभाग के सरकारी अधिकारी अपने मुख्यालय निवास में रहे ऐसा आदेश देना चाहिए। सरकार द्वारा लंपी रोग नियत्रंण के लिऐ टोल फ्री नंबर 18002330418 और 1962 जारी प्रदान कीया गया है जो निषक्रिय है, ऐसा गजब हाल शाशन के पशुवैद्यकीय सेवा का है। पशुधन कृषी का एक महत्वपूर्ण अंग है उसके सिवा भारतिय खेती और दुधव्यवसाय की कल्पनाभी नही की जा सकती पुरा करोना काल में जब भारत ठप्प था तब कृषी क्षेत्र ने ही भारत की पटरी सलामत रखी थी और आज उसपर संकट आया तो महाराष्ट्र शाशन ईधर उधर बगले झाकने का काम कर रही है। सरकार सद्न्यान जल्द ले और इस रोग महामारी पर जल्द कदम उठाये इस तरह का ज्ञापन युवक कॉंग्रेस के उपाध्यक्ष और तमाम कार्यकर्ताओ ने जिल्हाधीश को सौंपा। इस समय अक्षय साबळे, हसमिर जंवजाळ, योगेश बुंदीले, शक्ती राठौड, कार्तिक देशमुख, संजय तुळे, हर्षल महल्ले, अजहर अहमद, मनिष दधे, अमरदिप इंगळे, विविध माहूरे, साक्षी, अनिकेत जावरकर, अश्विनी पवार, पवन चित्रकार, अजिक्य होवीकर आदी उपस्थित थे।

मोटर साइकिल चोर गिरोह का भण्डाफोड़, 14 बाईक बरामद

एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश पुलिस अधीक्षक गोण्डा आकाश तोमर ने अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में वाहन चोरों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के निर्देश जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक / थानाध्यक्ष को दिए थे। उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना कटराबाजार पुलिस ने अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज के पर्यवेक्षण में क्षेत्र भ्रमण के दौरान मुखबिर खास की सूचना पर 3 अभियुक्तों 1.दुर्गेश मिश्रा, 2. कैश मोहम्मद, 3. हसन अली को गिरफ्तार कर उनके कब्जे व निशानदेही से चोरी की 14 अदद मोटरसाइकिल बरामद किया गया। जामातलाशी के दौरान अभियुक्त दुर्गेश मिश्रा के कब्जे से 1 अदद अवैध तमंचा 315 बोर मय 1 अदद जिंदा कारतूस व अभियुक्त कैश मोहम्मद के कब्जे से 1 अदद नाजायज चाकू बरामद किया गया। बरामद मोटरसाइकिलों के बारें मे पूछताछ करने पर अभियुक्तगणो द्वारा बताया गया कि हमलोगो का एक संगठित गिरोह है। हमलोग अन्य-अन्य जगहो से मोटर साईकिलों को चोरी कर उनकी नम्बर प्लेटों को बदलकर उनकी विक्री करते है।

मंडी अटेली पुलिस थाना के अंतर्गत पड़ने वाले गांव खेड़ी कांटी की बीती रात की घटना

एनसीआर समाचार

हरियाणा मंडी अटेली पुलिस थाना के अंतर्गत पड़ने वाले गांव खेड़ी कांटी की बीती रात की घटना पुलिस की घोर लापरवाही का परिणाम है अभी कुछ दिन पहले कुछ विवाद हुआ था यदि समय रहते पुलिस समुचित कार्रवाई करती तो बीती रात की घटना न घटती। वोटों की राजनीति ने और गांव के हरियाणा पुलिस में कार्यरत दो पुलिस के लोगों ने गांव के सद्भाव को बिगाड़ कर रख छोड़ा। गांव वालों ने जिला प्रशासन को अल्टीमेटम दिया है। यदि 24 घंटे के अंदर दोषियों को नहीं गिरफ्तार किया गया तो वह अगला कदम उठाएंगे। अभी गांव में विस्फोट से जो पहले की शांति होती है वह दिखाई दे रही है।

ग्रामीणों के अंदर गुस्से का लावा उबाल रहा है। कनीना के उप पुलिस अधीक्षक रणवीर सिंह के समक्ष पत्रकारों के समक्ष स्वीकार किया कि कुछ गलती पुलिस द्वारा हुई है साथ में उन्होंने यह भी जताया कि वह दोषियों को पकड़ने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

विकास खंड धानी में सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाया

वीरेन्द्र सिंह यादव / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश के महराजगंज जिले विकास खंड धानी में इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था कि सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाया जाए इस क्रम में स्कूलों में कायाकल्प के तहत हो रहे सुधार एवं आवश्यक सुधार किए जाने संबधी जानकारी दी गई एवं ग्राम प्रधान से अपील किया गया कि आप सभी समय रहते ऑपरेशन कायाकल्प के तहत 19 पैरामीटर्स पर विद्यालयों को संतृप्त कर दें। जिससे कि भौतिक परिवेश अच्छा दिखे साथ ही बच्चों के खाते में स्कूल बैग जूता मोजा के क्रय हेतु डीबीटीडी के माध्यम से बच्चों के अभिभावकों के खाते में ₹1200 की धनराशि प्रेषित की जानी है जिसके लिए प्रत्येक माता-पिता अपने खाते को आधार से सीड करा लें जिससे कि उनके किसी भी खाते में धन प्रेषित किया जा सके। इसी क्रम में बच्चों के उत्साहवर्धन स्वरूप उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष केशव मणि त्रिपाठी द्वारा प्राथमिक शिक्षा की समस्याओं को जन सहभागिता के तौर पर जनप्रतिनिधियों के बीच में रखा गया साथ ही अपील की गई कि प्राथमिक शिक्षा को उच्च शिखर तक पहुंचाने के लिए जनप्रतिनिधियों का सहयोग भी बहुत आवश्यक है। इस अवसर पर खंड विकास अधिकारी नजीर अहमद, खंड शिक्षा अधिकारी हेमंत कुमार मिश्रा समस्त ए आर पी एवं समस्त शिक्षिका गण उपस्थित रहे बच्चों के द्वारा सरस्वती वंदना, स्वागत गीत और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया इस अवसर पर प्राथमिक विद्यालय धानी गांव के बच्चों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया स्वागत गीत प्राथमिक विद्यालय कानापार के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किया गया। कानापार की प्रभारी प्रधानाध्यापिका सुप्रिया सिंह द्वारा अपने विद्यालय के भौतिक पर्यावरण को चुस्त-दुरुस्त बनाने हेतु संबंधित जिम्मेदार जनप्रतिनिधियों से आह्वान किया गया कि स्कूल का भौतिक परिवेश सही किया जाए क्योंकि बच्चों का एवं अभिभावकों का बहुत ही स्कूल के प्रति माइंड फिट होता है कि स्कूल में समस्त सुविधाएं मौजूद हैं तो यहां की पढ़ाई होती है साथ ही साथ यह भी होता है कि जब स्कूल अच्छे दिखेंगे तो वहां का वातावरण रोचक होगा और बच्चों की उपस्थिति बढ़ेगी।

संक्षिप्त समाचार

मध्य प्रदेश के झाबुआ में हुई नए पुलिस अधीक्षक की नियुक्ति, पूर्व को मुख्यमंत्री ने किया था बर्खास्त

आरिफ़ ख़ान

मध्य प्रदेश झाबुआ में अगम जैन होंगे नए पुलिस अधीक्षक। कुछ दिन पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा पूर्व एसपी को अपने कार्य प्रभार से बर्खास्त कर दिया गया था, जिसकी वजह से कई दिनों से पुलिस अधीक्षक महोदय की कुर्सी खाली थी, जो चर्चा का विषय बनी हुई थी। अब नए एसपी अगम जैन अपना पद भार संभालेंगे।

भारतीय संविधानिक अधिकार मोर्चा कश्यप निषाद समन्वय की टीम लखनऊ के लिए आगामी कार्यक्रम

उत्तर प्रदेश में भारतीय संविधानिक अधिकार मोर्चा कश्यप निषाद समन्वय की टीम लखनऊ के लिए आगामी कार्यक्रम के लिए दिल्ली से कुछ कर चुकी है राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमपाल कश्यप माननीय पूर्व साइंटिस्ट दिल्ली से महेंद्र कश्यप हापुड़ से उमेश कश्यप बरेली से जयपाल कश्यप, प्रदेश अध्यक्ष सर्व समाज एकता दल एवं सभी अन्य-अन्य क्षेत्रों के लोग लखनऊ पहुंच रहे है। आप सभी लोग से अपील करते हैं कि आगामी कार्यक्रम लखनऊ में 75 के 75 जिलों को बुलाकर सामाजिक समन्वय मन मंथन योजनाओं के द्वारा बनाकर समाज के हक और अधिकार मूल समस्याओं की लड़ाई लड़ने के लिए ओमपाल कश्यप अपनी पूरी टीम के साथ पूरी तरह से अब मैदान में उतरेंगे। जिन साथियों को सामाजिक चिंतन मनन करने के लिए माननीय ओमपाल कश्यप से मिलना है तो वह कल शाम को लखनऊ पहुंचे विचार करें 2 दिन के लिए लखनऊ रुकेंगे व सर्व समाज एकता दल के उत्तर प्रदेश के पदाधिकारी जिला अध्यक्ष मंडल अध्यक्ष एवं उत्तर प्रदेश पदाधिकारी भी पहुंचने का कष्ट करें

संविदा नर्सेज टीम ने मुख्यमंत्री के नाम जिला कलेक्टर बाड़मेर को सौंपा ज्ञापन

राजस्थान बाड़मेर चिकित्सा मंत्री राजस्थान सरकार के मुख्य स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अधिकारी के मार्फत ज्ञापन दिया गया जिसमें नर्स ग्रेड 2 की आगामी भर्ती को जल्द से जल्द विज्ञापन जारी करने के संबंध में हमारी मांग को मुख्यमंत्री महोदय तक पहुंचाने के लिए आग्रह किया। महोदय ने आश्वस्त किया है कि आपकी मांग को राजस्थान सरकार तक पहुंचा दी जाएगी। संविदा नर्सेज टीम के सदस्य मनीष कुमार, हिम्मत कुमार, रामजीवन, पूनम सिंह, गणपत सिंह, देदूसर अशोक ढाका, के द्वारा, बाड़मेर जिला कलेक्टर महोदय बाड़मेर के मार्फत ज्ञापन दिया गया।

गर्भपात कानूनों के तहत सुप्रीम कोर्ट ने लिया फैसला, 24 सप्ताह तक गर्भपात की हकदार है विवाहित महिला

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एक सुनवाई के दौरान कहा कि, मेडिकल टर्मिनेशन ऑफ प्रेग्नेंसी (MTP) अधिनियम के तहत सभी महिलाएं, उनकी वैवाहिक स्थिति के बावजूद, गर्भावस्था के 24 सप्ताह तक सुरक्षित और कानूनी गर्भपात की हकदार हैं। जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़, जे.बी. परदीवाला और ए.एस. बोपन्ना ने एमटीपी अधिनियम की व्याख्या पर फैसला सुनाया और क्या अविवाहित या एकल महिलाओं को उनके विवाहित समकक्षों की तरह 24 सप्ताह तक गर्भपात के लाभ की अनुमति दी जा सकती है। शीर्ष अदालत ने कहा कि, गर्भपात कानूनों के तहत विवाहित और अविवाहित महिलाओं के बीच का अंतर "कृत्रिम और संवैधानिक रूप से अस्थिर" है और इस रूढ़ि को कायम रखता है कि केवल विवाहित महिला ही यौन रूप से सक्रिय होती है। बेंच ने 23 अगस्त को एमटीपी अधिनियम के प्रावधानों की व्याख्या पर अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था, जो 24 सप्ताह की गर्भावस्था तक गर्भपात के मुद्दे पर विवाहित और अविवाहित महिलाओं के बीच अंतर करता है।

झारखण्ड में 1 अक्टूबर से खुल जाएगा बेतला नेशनल पार्क, पीटीआर प्रबंधन ने जंगल सफारी को लेकर बनाई योजना

झारखंड पलामू में करीब तीन महीने बाद पलामू टाइगर रिजर्व के बेतला नेशनल पार्क पर्यटकों के लिए एक अक्टूबर से खोल दिया जाएगा। एनजीटी के निर्देश पर जुलाई से सितंबर तक पीटीआर के इलाके में पर्यटन गतिविधि पर रोक लगा दी गई थी, 1 अक्टूबर से पलामू टाइगर रिजर्व में पर्यटन गतिविधि की शुरुआत हो जाएगी पीटीआर का बेतला नेशनल पार्क पर्यटकों का सबसे बड़ा केंद्र है। पीटीआर प्रबंधन ने पर्यटकों के लिए विशेष योजना बनाई है बेतला नेशनल पार्क में स्कूली बच्चों के लिए जंगल सफारी की शुरुआत की जाएगी पीटीआर के निदेशक कुमार आशुतोष ने बताया कि स्कूली बच्चों को पर्यटन गतिविधि से जोड़ने के लिए पहल की जा रही है जंगल सफारी के लिए 25 सीटर वाहन उपलब्ध करवाया जाएगा, वाहनों के माध्यम से शैक्षणिक संस्थानों को पर्यटन गतिविधि से जोड़ा जाएगा, यह व्यवस्था पार्क खुलते ही सुनिश्चित की जाएगी।

महंत बालक नाथ योगी पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में योग गुरु स्वामी रामदेव के साथ योगाभ्यास किए

राजस्थान अलवर सांसद महंत बालक नाथ योगी पतंजलि योगपीठ हरिद्वार में योग गुरु स्वामी रामदेव के साथ योगाभ्यास किए। इस दौरान अलवर सांसद महंत बालक नाथ ने कहा कि मानसिक और शारीरिक विकारों को दूर करने में योग अभ्यास परम सहायक है। वर्तमान अत्यधिक तनाव और आधुनिक जीवन शैली के परिप्रेक्ष्य में हम सभी को योगाभ्यास को अधिक से अधिक अपने जीवन में अपनाने की आवश्यकता है, जिससे हम स्वस्थ मस्तिष्क और स्वस्थ मन की परिकल्पना को सिद्ध करते हुए, राष्ट्र की उन्नति और विकास में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

राजस्थान जयपुर प्रताप नगर में मनाया गया नवरात्रि स्पेशल डांडिया महोत्सव

नवरात्रि महापर्व के प्रथम दिवस पर नौ दिवसीय डांडिया महोत्सव के शुभारंभ कार्यक्रम में शिरकत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डांडिया महोत्सव में माता रानी के साथ-साथ उपस्थित माँ दुर्गा स्वरूपी सभी सम्मानीय माताओं- बहनों व बुजुर्गो का आशीर्वाद प्राप्त कर धन्य हुआ। प्रेम पूर्वक किये गये हृदयस्पर्शी स्वागत सत्कार के लिए गणमान्य लोगों व स्थानीय निवासियों का हार्दिक आभार व अभिनंदन।

नगर निकाय चुनाव को लेकर तीन सदस्यीय वार्ड प्रणाली हुई लागू

एनसीआर समाचार

मुंबई में आगामी नगर निकाय चुनाव की पूर्व संध्या पर महाविकास अघाड़ी सरकार ने वार्डों के गठन को लेकर एक अहम फैसला लिया है। मुंबई को छोड़कर सभी नगरपालिका चुनावों में 3 सदस्यीय वार्ड प्रणाली होगी जबकि मुंबई में वार्ड प्रणाली होगी। नगर पालिकाओं और नगर परिषदों में, हालांकि, 2 सदस्यीय वार्ड प्रणाली होगी। नगर पंचायत में भी होगी 1 सदस्यीय व्यवस्था इस बीच नेता प्रतिपक्ष देवेंद्र फडणवीस ने वार्ड गठन को लेकर कोर्ट जाने की चेतावनी दी थी। ऐसा सवाल पूछते हुए शहरी विकास मंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि, कोर्ट में कोई भी जा सकता है, लेकिन शिंदे ने कहा कि, सरकार ने बिना किसी राजनीतिक लाभ के यह फैसला लिया। एकनाथ शिंदे ने कहा, 'मुझे नहीं पता कि कोर्ट में कौन जाता है। कोर्ट में कोई भी जा सकता है, लेकिन राज्य सरकार ने किसी राजनीतिक जुनून या राजनीतिक लाभ को ध्यान में रखकर कोई फैसला नहीं लिया है। इसलिए राज्य सरकार ने इस उद्देश्य को ध्यान में रखा है कि इस वार्ड के गठन से लोगों को नागरिक सुविधाएं मिलेंगी।' यह एक चार सदस्यीय वार्ड का प्रस्ताव था, लेकिन कुछ कैबिनेट नेताओं ने कहा कि तीन सदस्यीय वार्ड उपयुक्त होगा। इस संबंध में मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री ने 3 सदस्यीय वार्ड बनाने का फैसला किया। नगर परिषद एवं नगरपालिका में 2 व नगर पंचायत में 1 वार्ड व्यवस्था होगी। इससे क्षेत्र के नागरिकों को नागरिक सुविधाओं के प्रावधान में आसानी होगी, इसलिए यह निर्णय लिया गया है। शहरी विकास मंत्री एकनाथ शिंदे ने बताया कि, महाविकास अघाड़ी ने सर्वसम्मति से यह फैसला लिया है। कुछ वार्डों को तोड़कर अधिकारी अपने मनचाहे वार्ड बनाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हम जागरूक हैं। यह विचार चुनाव आयोग को दिया गया है। अगर चुनाव आयोग इस पर कार्रवाई नहीं करता है, तो हम अदालत जाएंगे, फडणवीस ने अधिकारियों को चेतावनी दी थी।

अजीत पवार ने दिया था इशारा

पिछले महीने, राज्य चुनाव आयोग (SEC) ने राज्य सरकार को आगामी नगरपालिका चुनावों के लिए वार्ड संरचना का एक मोटा मसौदा तैयार करने का निर्देश दिया था, जो फरवरी में समाप्त हो रहा है। सरकार के 31 दिसंबर 2019 के अधिनियम के अनुसार एक सदस्यीय वार्ड प्रणाली के आधार पर रचना की जाएगी और आयोग ने नगर आयुक्त को भी ऐसा करने का निर्देश दिया था। हालांकि उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने कुछ दिन पहले कहा था कि सभी नगर निगमों के लिए एक सदस्यीय वार्ड व्यवस्था नहीं होगी।

राजस्थान विप्र संवाद के राष्ट्रीय संयोजक मनोज पाराशर का किया अभिनंदन

एनसीआर समाचार

राजस्थान विप्र संवाद के राष्ट्रीय संयोजक मनोज पाराशर के भरतपुर पहुँचने पर राष्ट्रीय परशुराम सेना के प्रदेश अध्यक्ष पंडित सुनील पीढ़ी के नेतृत्व में भव्य स्वागत सम्मान किया गया। भरतपुर ब्राह्मण समाज के गणमान्य लोगों के द्वारा मनोज पाराशर के एक दिवसीय भरतपुर प्रवास पर पधारे इस अवसर पर राष्ट्रीय परशुराम सेना के प्रदेश अध्यक्ष पंडित सुनील पीढ़ी, प्रदेश महामंत्री श्याम सुन्दर कटारा, युवा मोर्चा डीग तहसील अध्यक्ष भानु जोशी, मोहन प्रकाश शर्मा, केशव देव पांडे, अंकुर मिश्रा, हेमंत शर्मा, संजू शर्मा, सोनू शर्मा सहित ब्राह्मण समाज के प्रतिनिधियों ने माला साफा पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया। राष्ट्रीय संयोजक पाराशर ने एसटीसी हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी में आयोजित स्वागत कार्यक्रम में बताया की विप्र संवाद संगठन द्वारा ब्राह्मण समाज के अब तक लगभग 5 लाख लोगो से संवाद किया गया है। देश भर में विप्र संवाद के द्वारा सामाजिक जन चेतना के कार्यक्रमों के माध्यम से समाज के युवाओं को राष्ट्र प्रेम सहित विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर संवाद के माध्यम से चर्चा की जा रही है। विप्र संवाद के द्वारा हर घर परशुराम कार्यक्रम के माध्यम से ब्राह्मण समाज के प्रतिधियो को भगवान परशुराम का छाया चित्र भेंट किया जा रहा है। पाराशर ने कहा की ब्राह्मण समाज को सशक्त करने के लिए युवा विप्र संवाद के माध्यम से समाज के पदाधिकारियों से देश भर में भेट कर रहे है। राष्ट्रीय संयोजक पाराशर ने ब्रह्मण समाज के प्रतिनिधियों द्वारा किए गए स्वागत के लिए आभार व्यक्त किया।

छह माह से परेशान छात्रा को उपायुक्त ने कानों की मशीन उपलब्ध करवाई

एनसीआर समाचार

हरियाणा नारनौल में छह माह से परेशान छात्रा को उपायुक्त ने कानों की मशीन उपलब्ध करवाई। छह माह से कान की मशीन के लिए विभिन्न स्थानों पर जाकर गुहार लगाने वाली खासपुर निवासी कुमारी नचिता को मात्र 24 घण्टे में जिला उपायुक्त डॉ. जय कृष्ण आभीर ने लघु सचिवालय स्थित उपायुक्त कार्यालय में बेस्ट क्वालीटी की सुनने की मशीन देने के साथ-साथ दो हाईजनिक कीट भी उपलब्ध करवाई। हुआं यू कि 23 सितम्बर को उपायुक्त पंजाब नेशनल ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान नसीबपुर में प्रशिक्षण का शुभारम्भ करने पहुंचे थे। कान से बिल्कुल भी न सुनाई देने वाली कुमारी नचिता ने जब प्रशिक्षण के दौरान ही अपनी आप बीती सुनाई और कहा कि वह इसलिए नही पढ़ पाती की उसे सुनाई नहीं देता। यह बात सुनकर जिला उपायुक्त डा. जय कृष्ण आभीर ने बगैर समय गवाऐ रेडक्रास सचिव श्याम सुन्दर को निर्देश दिया कि कुमारी नचिता के लिए कान की मशीन का प्रबंध किया जाए और उसे 24 घंटे के अंदर-अंदर कान की मशीन उपलब्ध करवाई जाए। रेडक्रास सचिव श्याम सुन्दर ने तत्परता दिखाते हुए पंजाब नेशनल बैंक के एल.डी.एम. विजय कुमार से मुलाकात की और कुमारी नचिता के बारे में जानकारी प्राप्त की।

मंडला सुड़गांव में पुल नहीं होने से परेशानी

इन्द्रमेन मार्को / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश मंडला सुड़गांव बारिश में ग्रामीण इलाकों से समस्या और बेवसी की कई तस्वीरें सामने आती हैं। ऐसी ही स्थिति सिंगारपुर आने वाले बच्चों की है। बच्चों को बारिश के तीन से चार माह डोंगी के सहारे नर्मदा नदी पार करनी पड़ती है। बच्चे डोंगी तो चला नहीं सकती है इसके लिए डोंगी चलाने वाले व्यक्ति का इंतजार भी करते हैं। जिसके कारण हर दिन स्कूल पहुंचने में देरी हो रही है। वहीं स्कूल छूटने के बाद घर आने में भी अधिक समय लग रहा है। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माध्यमिक विद्यालय सिंगारपुर में स्कूली बच्चों को नर्मदा नदी पार करने आना पड़ता है। लगभग डेढ़ दर्जन बच्चे बारिश के मौसम में जान जोखिम में डाल कर स्कूल पहुंचते हैं। वहीं समान्य दिनो में निचले क्षेत्र से पैदल ही नदी पार करते हैं। जिसमें कई बार उन्हें पानी में भीगे गणवेश के साथ स्कूल पहुंचना पड़ता है। नाव चलाने वाले व्यक्ति नान भाई नंदा एवं गांव के राजेश चक्रवर्ती, इन्द्रमेन मार्को आदि ने बताया कि यहां आए दिन खतरा बना रहता है। पुल ना होने से बच्चे सही समय में स्कूल नहीं पहुंच पा रहे हैं। कभी-कभी बारिश के कारण अचानक नर्मदा नदी का जल स्तर बढ़ने पर चिंता और अधिक बढ़ जाती है। ग्राम जारगा, देवरी, कौआडोंगर, सकरी, बिलगाड़ा आदि ग्रामों के बच्चे पास में प्राथमिक स्कूल तो है। लेकिन पास में माध्यमिक, हाई व हायर सेकंडरी स्कूल ना होने बच्चे शिक्षा ग्रहण करने सिंगारपुर आते हैं। इस सबंध में जनप्रतिनिधियों से मांग कर रहे हैं। लेकिन पुल की स्वीकृति कब मिलेगी यह कहा नहीं जा सकता है। ग्रामीणों की मांग है कि पुल की स्वीकृति ना मिलने तक स्कूल के बच्चों के लिए बड़ी नाव की व्यवस्था की जाए। ताकि बच्चे सुरक्षित नदी पार कर सकें। इससे बाजार आने वाले ग्रामीणों को भी राहत मिलगी। नदी के दूसरे पार रहने वाले आधा दर्जन गांव के लोगों के लिए सिंगारपुर मुख्य बाजार है।

कर्दमपुरी E-49 वार्ड में सफाई व्यवस्था को लेकर जनता ने प्रशासन और सरकार को अवगत कराया

सलमान थानवी / एनसीआर समाचार

दिल्ली के बाबरपुर विधान सभा के कर्दमपुरी वार्ड नं E49 में जगह-जगह लगा है गंदगी का अम्बार गली नम्बर 4 नियर जामा मस्जिद स्थानीय निवासी जमील अहमद का कहना है कि साफ सफ़ाई को लेकर बहुत परेशान है कूड़ा उठाने वाली गाड़ी को आए हुए एक सप्ताह से भी ज्यादा हो चूका है लेकिन वे गली में नही आ रही है। जगह-जगह कूड़े के ढेर लगे हुए हैं डेंगू और मलेरिया का परकोप काफी हद तक बढ़ता जा रहा है छोटे छोटे बच्चे इलाके में गंदगी फैलने से बीमार पड़ रहें ना एमसीडी द्वारा सफ़ाई पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है ना फॉगिंग कार्य किया जा रहा है जब से एमसीडी का परिचिमन एकीकरण हुआ है और ज्यादा साफ़ सफाई को लेकर समस्या हो रही निगम पार्षद साजिद खान के कार्यकाल में सफ़ाई व्यवस्था का पूरा ध्यान दिया जाता था। इस पर स्थानीय लोगों ने एमसीडी प्रशासन और सरकार को अवगत कराया हैं की हमारे वार्ड में काफी हद तक गंदगी फैल रही हैं और जिससे आने जाने वाले लोगों को भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा हैं और जिससे हमारे बच्चें बुखार और काफी बीमारियों से ग्रस्त हैं। स्थानिये लोगो ने क्षेत्र में गंभीर बीमारियां जैसी संकट से भी अवगत करवाया जैसे कि मलेरिया एवं चिकनगुनिया जैसी बीमारियों से प्रभावित हो रहा है। क्षेत्र और केंद्र की सरकार कोई गौर ए फिकर नही कर रही हैं जिससे लोगों में काफी आक्रोश हैं लोगों ने एमसीडी प्रशासन से गुहार लगाई है की हमारी सफाई व्यवस्था को दुरुस्त किया जाए डेंगू वायरस को खत्म करने वाली दवाई को क्षेत्र में फॉगिंग कराए। जिससे हमारा परिवार सुरक्षित जीवन जिए और हर बीमारी से बचे। ये ही हमारी सफाई प्रशासन से मांग हैं हमारे वार्ड को भी सुंदर और चमकदार बनाया जाए, सफाई अभियान चलाया जाए।

ओबीसी आरक्षण की विसंगति दूर करने के लिए जयपुर में होने वाले रैली सफल बनाने के लिए आह्वान किया

एनसीआर समाचार

राजस्थान में ओबीसी आरक्षण की विसंगति दूर करने के लिए 30 सितम्बर को जयपुर में होने वाले रैली सफल बनाने के लिए आह्वान किया गया। ओबीसी आरक्षण के लिए सोमवार को दिव्या शिक्षण संस्थान में बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में धनाऊ पंचायत समिति के सभी सरपंच व अन्य जन प्रतिनिधियों उपस्थित होकर ओबीसी आरक्षण की विसंगति के अवगत हुए कर्मचारी वर्ग व सरपंच संघ के मिलकर चार बस की व्यवस्था की। श्रीरामवाला सरपंच प्रतिनिधि हनुमान पोटलिया व समाजसेवी फगलु पावड़ ने एक बस व कर्मचारी संघ ने दो बस व समस्त सरपंच संघ ने एक बस की व्यवस्था की। बैठक के दौरान श्रीराम वाला सरपंच प्रतिनिधि हनुमान पोटलिया, इटादिया सरपंच कादर ख़ान, दीनगढ़ सरपंच प्रतिनिधि किशन धतरवाल, सरूपे का तला सरपंच प्रतिनिधि जमालुद्दीन, फगलू राम पावड़, गोरधन बेनिवाल, हनुमान पावड़, मोटा राम सेंवर, पूनम जाखड़, धनाऊ पटवारी जोगा राम, लुंभा राम पावड़, करनाराम सारण, ग्राम विकास अधिकारी संघ अध्यक्ष भानु प्रताप चोधरी, आदम खान, रमेश सियाग, सुरेश पोटलिया, खेता राम जाखड़, कालू डूडी, बांका राम सारण, महेंद्र पावड, श्रवण पावड सहित कई ओबीसी वर्ग के लोग मौजूद रहे।

पुलिस ने व्यापारी से धोखाधड़ी कर तेल की अफरा-तफरी करने वाले एक आरोपी को किया गिरफ्तार

एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश राजगढ़ जिले के पुलिस कप्तान अवधेश कुमार गोस्वामी (आईपीएस) द्वारा जिले में गंभीर अपराधों की रोकथाम हेतु लगातार कई अभियान चलाए जा रहे है। उसी तारतम्य में 12 जून 2022 को फरियादी विश्वनाथ सिंह परमार पिता राम प्रकाश सिंह परमार निवासी गांधीधाम गुजरात ने थाने पर आकर रिपोर्ट किया कि 28 अप्रैल 2022 को रायसिला हेल्थ फूड लिमिटेड धुरी पंजाब से 39, 980 किलोग्राम राइस ब्रांड रिफांइड ऑयल को टैंकर नंबर GJ-12 BX 2145 से बालाजी प्रोटेक्शन मंडीदीप जिला रायसेन मध्य प्रदेश के लिए भेजा था लेकिन उक्त माल मंडीदीप की फर्म तक आज तक नहीं पहुंचा है। उक्त टैंकर भोजपुर थाने के पास लावारिस हालत में खाली खड़ा हुआ है। दोनों ड्राइवर चूनाराम पिता मुकनाराम निवासी सडपा मांझी थाना सिंधरी जिला बाड़मेर राजस्थान एवं दूसरा ड्राइवर दिनेश पिता गंगाराम जाति डोंगियाल दोनो फरार हैं। फरियादी पुष्पराज सिंह परमार की रिपोर्ट को थाना प्रभारी भोजपुर प्रभात गौड द्वारा बडी गंभीरता से लेते हुए अपराध क्रमांक 258/22 धारा 406, 34 भारतीय दंड संहिता का कायम कर जांच में लिया गया तथा जांच के दौरान धारा 409 भारतीय दंड संहिता का इजाफा किया गया। टैंकर नंबर GJ-12 BX 2145 को सुरक्षित थाने पर रखवाया गया। फरार आरोपियों की तलाश भोजपुर पुलिस द्वारा लगातार की जा रही थी 25 सितंबर को मुखबिर द्वारा सूचना प्राप्त हुई कि उक्त अपराध में से एक आरोपी दिनेश जाति डोंगियाल जोधपुर में रह रहा है। सूचना को थाना प्रभारी भोजपुर प्रभात गौड द्वारा बड़ी गंभीरता से लेते हुए सहायक उपनिरीक्षक सुगनलाल धुर्वे के नेतृत्व में टीम बनाकर जोधपुर रवाना की जिस टीम ने जोधपुर से आरोपी दिनेश जाति डोंगियाल उम्र 21 साल निवासी ग्राम सडया मांझी, थाना सिंधरी, जिला बाड़मेर (राजस्थान) को गिरफ्तार किया गया। प्रकरण में एक आरोपी अभी फरार है जिसकी तलाश के भरपूर प्रयास किये जा रहे है। उक्त सम्पूर्ण कार्यवाही में थाना प्रभारी भोजपुर प्रभात गौड, सहायक उपनिरीक्षक सुगनलाल धुर्वे, प्रधान आरक्षक इरशाद खान, आरक्षक नीरज लोधी, सैनिक कैलाश जायसवाल की विशेष भूमिका रही।

संक्षिप्त समाचार

जिला जज, सीजेएम, डीएम, व एसपी ने जिला जेल का किया औचक निरीक्षण

उत्तर प्रदेश में बुधवार को जिला जज, सीजेएम, व जिलाधिकारी डॉक्टर उज्ज्वल कुमार, पुलिस अधीक्षक आकाश तोमर ने जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण पर पहुंचे जिला जज व डीएम ने वहां पर कैदियों से बात की तथा उन्हें जेल में दी जा रही सुविधाओं एवं उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली। जिला जज, जिलाधिकारी, एसपी ने स्वयं विभिन्न बैरकों, अस्पताल, भोजनालय, भंडार कक्ष, पुस्तकालय आदि का निरीक्षण किया तथा सख्त निर्देश दिए कि जेल में जेल मैनुअल के अनुसार कैदियों को सभी सुविधाएं मुहैया कराई जाएं इसके साथ ही ऐसे कैदी जिनके पास वकील नहीं है उनके लिए सरकारी वकील का भी प्रबंध कराया जाए जेल में निरुद्ध कैदियों का बराबर मेडिकल चेकअप कराने के निर्देश दिए, इस अवसर पर जेल अधीक्षक, डिप्टी जेल अधीक्षक सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

संडीला बैंक मित्र को गोली मारने वाले बदमाश मुठभेड़ में गिरफ़्तार

उत्तर प्रदेश हरदोई संडीला ग्राम दुर्गा खेड़ा निवासी ओम प्रकाश सिंह बैंक मित्र को 19 सितम्बर की शाम गोली मारकर लूट हो गई थी 22 सितम्बर को ट्रॉमा सेंटर लखनऊ में उसकी मौत हुई घटना के खुलासे के लिए स्वाट टीम सर्विलांस टीम को लगाया गया था, कछौना पुलिस को सुराग मिला घटना के आरोपी बाइक से गौसगंज हरदोई लखनऊ मार्ग पर है पुलिस टीम के घेरने में बदमाशों ने फायरिंग कर दी जवाबी फायरिंग में दोनों बदमाश घायल हो गए और पुलिस द्वारा पूछताछ में संतोष ने लूट और गोली मारने की बात स्वीकार कर ली साथ ही सीतापुर निवासी संतोष पर 30 से अधिक अपराधिक मुकदमे दर्ज है।

उत्तर प्रदेश जैत गांव के संदिग्ध स्थिति मंदिर में मिला साधु का शव

वीरेन्द्र सिंह यादव / एनसीआर समाचार

उत्तर प्रदेश 26 सितंबर से शुरू हों रहे नवरात्रि के दौरान जैत गांव में संदिग्ध स्थिति मंदिर चामड़ देवी का मंदिर के सुधाकर दास उर्फ लाल बाबा उम्र करीब 55 वर्ष निवासी रीवा थाना गुड (चित्रकूट) को पूजा करने के लिए रखा गया था। सुबह बाबा का शव मृत अवस्था में मिला जिसके बाद ग्रामीणों ने बाबा की हत्या का आरोप लगाया और थाना जैत पुलिस को खबर दी, जिसके बाद मोके पे पहुंची वहां पहुंचकर शव को कब्जे में लिया और पोस्मार्टम के लिए भेज दिया अब पुलिस अपनी जांच में जुटी है।

उ. प्र हरदोई बघौली थाना क्षेत्र में रिटायर्ड पुलिस होमगार्ड की हुई निर्मम हत्या

उत्तर प्रदेश हरदोई बघौली थाना क्षेत्र स्थित ग्राम काईमऊ निवासी संतराम व उसकी पत्नी कैलाशा की देर रात घर पर गला रेत कर हत्या कर दी गई। इस हत्या से गांव में दहशत फैल गई और मृतक संतराम जो की रिटायर्ड पुलिस होमगार्ड थे सूचना मिलने पर पहुंचे पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने घटनास्थल की जांच फॉरेंसिक टीम को देकर मृतक संतराम के मोबाइल फ़ोन की कॉल डिटेल की जांच करवाई मृत्यु से पूर्व आने-जाने वालों से बातचीत करी आस-पास के पड़ोसी से पूछताछ कर अग्रिम करवाई करने की बात कही।

MLA आशीष सिंह आशु ने खगोलीय विज्ञान प्रयोगशाला का किया उदघाटन

उत्तर प्रदेश जनपद हरदोई कस्बा माधोगंज ग्राम पंचायत शुक्लापुर भगत के उच्च प्राथमिक विद्यालय (सविलियन) में वर्तमान विधायक आशीष सिंह आशु ने खगोल विज्ञान प्रयोगशाला का फीता काट कर शुभारंभ किया। विधायक आशीष सिंह आशु अपने विधान सभा क्षेत्र में लगातार शिक्षा के प्रति लोगो को जागरूक कर रहे है इस मौके पर खण्ड शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार सिंह तथा नीरज अवस्थी ने फूलों का गुलदस्ता भेंट कर विधायक का माल्यार्पण करके स्वागत किया इस अवसर पर ग्राम प्रधान सहित विद्यालय प्रबंधन का समस्त स्टॉफ मौजूद रहे।

राजस्थान विश्व विद्यालय के जाट छात्रावास में प्रबंधन समिति द्वारा किया भव्य स्वागत

राजस्थान में जगह-जगह युवाओं ने किया भव्य अभिनंदन राजस्थान विश्वविद्यालय के नवनिर्वाचित अध्यक्ष निर्मल चौधरी के कोटपूतली आने पर जगह-जगह भव्य स्वागत किया गया। महाराजा सूरजमल जाट छात्रावास में प्रबंधन समिति द्वारा निर्मल चौधरी का माला व साफा पहनाकर स्वागत एवं अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। छात्रावास में पहुंचने पर निर्मल चौधरी ने महाराजा सूरजमल के माला पहनाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया, निर्मल चौधरी ने कहा कि ये उनके संघर्ष की जीत है। वे सदेव छात्रशक्ति के लिए संघर्ष करते रहेंगे। छात्रावास प्रबंधन समिति के तत्वाधान में आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों लोग शामिल हुए।

मध्य प्रदेश सागर जिला पंचायत के पूर्व सदस्य जितेंद्र सिंह का हुआ निधन

मध्य प्रदेश सागर जिला पंचायत के पूर्व सदस्य जितेंद्र सिंह "बबलू भैया" निवासी ग्राम भड़राना, तहसील बंडा, जिला सागर का आज 28 सितंबर को निधन हो गया। बता दे कि वे सागर संसदीय क्षेत्र के सांसद राजबहादुर सिंह के बड़े भाई और हटा एसडीओपी वीरेंद्र बहादुर सिंह के छोटे भाई थे। जितेंद्र सिंह का अंतिम संस्कार आज 28 सितंबर को शाम 4:00 बजे ग्राम भड़राना में होगा।

हिमाचल प्रदेश गौसेवा आयोग में 10 विशेष आमंत्रित सदस्य हुए शामिल

हिमाचल प्रदेश गौसेवा आयोग में 10 और विशेष आमंत्रित सदस्य शामिल किए गए हैं। सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि नए विशेष आमंत्रित सदस्यों में जिला चंबा की तहसील सलूणी के गांव जडोगा के संदीप कुमार, जिला सोलन के गांव टाहलीवाल के देव राज चौधरी, सोलन के सपरून के देवानंद गौतम, शिमला के निकटवर्ती क्षेत्र टूटू के राम ऋषि भारद्वाज और राजेंद्र राणा, ऊना जिले के बंगाणा उपमंडल के गांव जसाना के सूरम सिंह, कांगड़ा जिले की तहसील जवाली के गांव मैहरा के चंद्रशेखर, अर्की उपमंडल के गांव बातल के दिनेश कुमार शास्त्री, नादौन उपमंडल के गांव बेला के डॉ. अशोक और रामपुर उपमंडल के गांव गोसा के रोशन लाल शामिल हैं।

राज्यपाल ने तकनीकी विश्वविद्यालय में मेधावी छात्रों को दीं 310 उपाधियां

एनसीआर समाचार

हिमाचल प्रदेश राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने आज हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय हमीरपुर के चौथे दीक्षांत समारोह के दौरान 310 उपाधियां और 55 पदक प्रदान किए। समारोह में विश्वविद्यालय के 32 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक और 23 विद्यार्थियों को रजत पदक से सम्मानित किया गया। राज्यपाल ने सभी डिग्री धारकों को बधाई देते हुए कहा कि उन्हें उन परिस्थितियों पर विचार करने की जरूरत है जिनमें उन्होंने डिग्री हासिल की है। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए रूपरेखा तैयार करनी होगी। उन्होंने युवाओं से अलग तरह से सोचने और जोखिम उठाने की अपील की ताकि वे समृद्धि के पथ पर अग्रसर हो। उन्होंने कहा कि जिस दिशा में हमारे युवा सोचेंगे, देश का भविष्य भी उसी के अनुसार निर्धारित होगा। उन्होंने कहा कि प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना कर समाज में लक्ष्य हासिल करने वाला व्यक्ति वास्तव में एक सफल व्यक्ति है। इसलिए एक डिग्री के साथ जीवन में साहस भी महत्वपूर्ण है और अलग हटकर सोचने से साहस की भावना विकसित की जा सकती है। उन्होंने युवाओं से समाज की बेहतरी के लिए काम करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि कोई

भी व्यवसाय अच्छा या बुरा नहीं होता है, बल्कि आवश्यकता एक अच्छा इंसान बनने की है। उन्होंने डिग्री धारकों से पहले अच्छा इंसान बनने की अपील की और कहा कि इस विश्वास को अपने साथ बनाए रखने की आवश्यकता है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) मंडी के निदेशक प्रोफेसर लक्ष्मी धर बेहरा ने कहा कि देश और समाज के प्रति कार्य करने के लिए धैर्य सर्वोपरि है। उन्होंने विज्ञान को अध्यात्म से जोड़कर गीता के श्लोकों के माध्यम से युवाओं के लिए इनके महत्व का विश्लेषण किया। उन्होंने युवाओं को जीवन में लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान करते हुए कहा कि तटस्थ रहकर ही ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है। उन्होंने कहा कि सत्य सर्वोपरि है और हमारा मुख्य उद्देश्य सत्य होना चाहिए और इसके लिए चरित्र में सुधार करना आवश्यक है। इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति शशि कुमार धीमान ने राज्यपाल का स्वागत कर उन्हें सम्मान किया तथा विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के अन्तर्गत संस्थान में मल्टी एंट्री, मल्टी एक्जिट और बहु विषयक प्रणाली विकसित की गई है। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है ताकि विद्यार्थी समाज में योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि संस्थान के माध्यम से स्वरोजगार को तकनीकी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। उन्होंने पदक विजेताओं और डिग्री धारकों को बधाई दी। इस अवसर पर विधायक नरेंद्र ठाकुर, एनआईटी हमीरपुर के निदेशक प्रो. एच.एम. सूर्यवंशी, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के भौतिकी विभागाध्यक्ष प्रो. वीर सिंह रांगड़ा, उपायुक्त उपस्थित थे।

रांची प्रेस क्लब में युवा दस्ता दुर्गा पूजा समिति का वार्षिक सम्मेलन आयोजित

एनसीआर समाचार

झारखण्ड रांची आज युवा दस्ता दुर्गा पूजा समिति का वार्षिक सम्मेलन रांची प्रेस क्लब में किया गया अध्यक्ष डॉ राजेश गुप्ता संस्थापक राजीव रंजन मिश्रा के द्वारा आयोजित हुआ इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से रांची के एस.एस.पी किशोर कौशल द्वारा सभी को दिशा निर्देश देते हुए उन्होंने कहां कि पूजा में विधि व्यवस्था और अनुशासन एवं युवा दस्ता के सदस्यों को श्रद्धालुओं के पूजा पंडालों दर्शन तथा सुरक्षा व्यवस्था हेतु के साथ दुर्गा उत्सव मनाया जाएगा। वहीं युवा दस्ता के महानगर प्रभारी अभिषेक सिंह राठौड़ ने कहा कि पिछले दो वर्षों से करोना काल के कारण दुर्गा पूजा पंडालों में नहीं मना पा रहे थे लेकिन इस बार भव्य रुप से मनाया जाएगा एवं युवा दस्ता के उपाध्यक्ष पियूष आनंद ने कहा कि इस वार पदाधिकारियों गन एवं सदस्यगण में कुछ अलग जोश देखने को मिल रहा है। इस बार उल्लास के साथ दुर्गा पूजा की जाएगी और इस बैठक में रांची के विभिन्न क्षेत्रों से महानगर एवं ग्रामीणों क्षेत्रों से सैकड़ों कार्यकर्ताओं उपस्थित हुए लंकेश सिंह, मंटू दुबे, राहुल सिन्हा उर्फ चंकी, नवनीत पांडे टिंकू महतो, सोनू भारद्वाज एवं ईश्वर रोशनी सिंह राठौड़, के नेतृत्व में प्रियंका सिंह एवं दर्जनों छात्राओं ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

हिमाचल प्रदेश मांग पक्ष प्रबंधन कार्य योजना पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला आयोजित

एनसीआर समाचार

हिमाचल प्रदेश राज्य सरकार द्वारा नामित एजेंसी ऊर्जा निदेशालय, हिमाचल प्रदेश द्वारा आज यहां ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के विद्युत वितरण कंपनियों के दक्षता निर्माण कार्यक्रम के तहत मांग पक्ष प्रबंधन कार्य योजना (डीएसएम) पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। ऊर्जा विभाग के निदेशक हरिकेश मीणा ने कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए कहा कि इस एक दिवसीय कार्यशाला का उद्देश्य वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) के लिए डिमांड साइड मैनेजमेंट विषय पर जागरूकता बढ़ाना और इस संबंध में हिमाचल प्रदेश को अग्रणी बनाना है। उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला के माध्यम से राज्य में प्रभावी और टिकाऊ ऊर्जा प्रबंधन और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने की दिशा में उठाए जा रहे कदमों पर भी चर्चा की गई। टाटा पावर ट्रेडिंग कंपनी लिमिटेड के अमित जैन ने हिमाचल प्रदेश के लिए मांग पक्ष प्रबंधन का अवलोकन किया और टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड के संदीप शर्मा ने डिमांड साइड मैनेजमेंट पहलों और दिल्ली में इन पहलों के सफल क्रियान्वयन से सम्बन्धित अध्ययनों का विवरण प्रस्तुत किया। आंध्र प्रदेश राज्य ऊर्जा संरक्षण मिशन के मुख्य कार्यकारी अधिकारी ए. चंद्रशेखर रेड्डी ने वर्चुअल माध्यम से इस कार्यशाला में भाग लिया और आंध्र प्रदेश में सफल मांग पक्ष प्रबंधन पहलों के बारे में विस्तार से बताया। केपीएमजी के निदेशक मानस तिवारी ने नीतिगत ढांचे में हालिया रुझानों और परिवर्तनों, बिजली अधिनियम संशोधनों, डीएसएम पहलों पर प्रभाव आदि के बारे में जानकारी दी। टीपीटीसीएल के प्रतिनिधि ने डिजिटल इन्टरवेंशन से वाणिज्यिक और औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए डिमांड साइड मैनेजमेंट उपयोग के मामलों पर चर्चा की। हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटिड के प्रबंध निदेशक पंकज डडवाल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। ऊर्जा निदेशालय के अधीक्षण अभियंता मनोज चौधरी ने सत्र का सारांश दिया और धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

समाज सेवा के रूप में उल्लेखनीय कार्यों के लिए वंदना तेकाम प्रदेश गौरव रत्न से सम्मानित

इन्द्रमेन मार्को / एनसीआर समाचार

मध्य प्रदेश सुड़गांव आदिवासी शेरनी, मध्य प्रदेश की सोनू सूद की चर्चा मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में आयोजित सम्मान कार्यक्रम में भी हुई। बता दे कि आदिवासी मण्डला जिले में समाजसेवा के क्षेत्र में कार्य करने वाली वंदना तेकाम को आदिवासी शेरनी के साथ-साथ सोनू सूद के रूप में संज्ञा दी जाती है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में राष्ट्रीय नारी सशक्तिकरण संघ के द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर प्रभुराम चौधरी के द्वारा समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों को करने के लिये वंदना तेकाम को गौरव रत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। यह उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय नारी सशक्तिकरण संघ के द्वारा प्रदेश भर से सामान्य प्रशासन, पुलिस प्रशासन, डॉक्टर, मीडिया, आर्टिस्ट, समाज सेवा एवं कृषि कार्य में उत्कृष्ट कार्यशैली के लिए प्रदेशभर से आवेदन आमंत्रित किए जाते है, जिसमें से चयन करके उत्कृष्ट सेवाभावी अधिकारियों एवं कलाकारों को प्रदेश गौरव रत्न सम्मान प्रति वर्ष प्रदान किया जाता है। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में सम्मान कार्यक्रम में देश की 60 प्रमुख रूप से अपना महत्वपूर्ण योगदान रखने वाले हस्थियां को सम्मानित किया गया। जिसमें आदिवासी समाज सेविका वंदना तेकाम ने मण्डला जिला सहित संपूर्ण मध्यप्रदेश एवं देश में सामाजिक सेवा क्षेत्र में कार्य करने के लिये अपनी महत्वपूर्ण पहचान रखती है। पर्यावरण, शैक्षणिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य सुरक्षा, स्वरोजगार, खेल सहित अनेक सामाजिक गतिविधियों में वर्षों से सक्रिय रहकर समाजसेवा का कार्य कर रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में गाँव-गाँव में जाकर जनजागरूकता अभियान के माध्यम से बेटियों व महिलाओं को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिये जागरूक करने का कार्य करती है। वंदना तेकाम के द्वारा सामाजिक गतिविधियों के क्षेत्र में किये गए उत्कृष्ट कार्यों को प्रादेशिक मंच में सम्मान मिलने से आदिवासी मण्डला जिले का नाम भी गौरवांवित हुआ है।

रीवा जिले में शिक्षा के मंदिरों का हाल बेहाल भ्रष्टाचार की भेंट चढ़े भवन

एनसीआर समाचार

रीवा जिले में शिक्षा का स्तर पूरी तरह से गिर चुका है, विद्यालयों में राजनीति और भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है। सरकारी शिक्षक विद्यालय जाने की वजह अन्य कार्यों में अपनी ड्यूटी लगवा कर आराम कर रहे हैं, जिसके कारण बच्चों का भविष्य अधर में है। वहीं विद्यालय भवनों की दशा बेहद ही दयनीय है, कहीं जानवरों का अड्डा है तो कहीं ऐसे जर्जर भवन है जहां जान जोखिम में डालकर छात्र छात्राएं और शिक्षक अध्यापन का कार्य कर रहे है। बता दे कि रीवा नगर निगम के वार्ड क्रमांक 1 के शिवपुरवा स्कूल का है, जहां विद्यालय भवन की हालत जर्जर हो चुकी है, ऐसा नहीं है कि पैसा नहीं आया और खर्च नहीं हुआ। विद्यालय भवन की मरम्मत केवल कागजों पर लीपापोती कर दी गई है, अगर निजी भवन पुस्तों चलते हैं तो फिर शासकीय भवन जिनमें खासा मोटी रकम लगी होती है महज चंद्र वर्षों में ही जर्जर क्यो हो जाते है ये एक सोचने वाली बात है। यह तो स्पष्ट है कि किस तरह से शासकीय राशि का दुरुपयोग ठेकेदार सरपंच सचिव के साथ-साथ संस्थाएं कर रही हैं। शिक्षा के साथ-साथ शिक्षा के मंदिर की किस तरह की दुर्दशा है और खासकर नगर निगम सीमा के अंदर संचालित विद्यालयों का हाल, अब देखने वाली बात यह होगी कि ऐसे विद्यालय भवनों का सुधार के लिए प्रशासन कुछ प्रयास करता है या किसी बड़े हादसे का इंतजार करता है।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर के जन्मदिन पर प्रधानमंत्री ने की बड़ी घोषणा, दी श्रद्धांजलि

एनसीआर समाचार

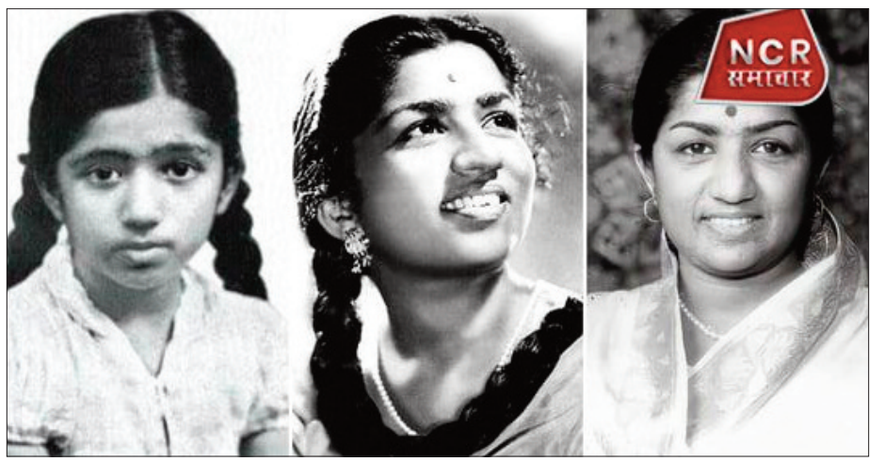

भारत की स्वर कोकिल लता मंगेशकर की जयंती पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को भारत रत्न लता मंगेशकर को श्रद्धांजलि दी। भारतीय संगीत की दुनिया में लता मंगेशकर के योगदान और देश को गौरवान्वित करने के उनके सभी सफल प्रयासों का सम्मान करने के लिए, प्रधानमंत्री मोदी ने बुधवार को अयोध्या में एक चौक का नाम उनके नाम पर रखने की घोषणा की। ट्विटर पर उन्होंने पोस्ट किया, स्लता दीदी को उनकी जयंती पर याद कर रहा हूं। बहुत कुछ है जो मुझे याद है ... अनगिनत बातचीत जिसमें वह इतना स्नेह बरसाती थीं। मुझे खुशी है कि आज, अयोध्या में एक चौक का नाम उनके नाम पर रखा जाएगा। यह सबसे महान भारतीय प्रतीकों में से एक को एक उचित श्रद्धांजलि है। प्रधानमंत्री मोदी के साथ, कई अन्य प्रतिष्ठित हस्तियों ने भी गायिका को श्रद्धांजलि दी। उनकी जयंती पर श्रद्धांजलि देने के लिए कई कलाकारों ने उनके चित्रों का निर्माण किया। 1929 में जन्मी लता मंगेशकर को उनकी चमत्कारी आवाज के लिए जाना जाता था, जिसने सैकड़ों गानों में चार चांद लगा दिए हैं और अब तक कई लोगों की पसंदीदा बनी हुई हैं। उन्होंने दशकों तक पार्श्व गायन पर राज किया। 'भारत की कोकिला' के नाम से मशहूर लता मंगेशकर का इसी वर्ष फरवरी में निधन हो गया था। वह भारतीय फिल्म उद्योग में सबसे बहुमुखी गायिकाओं में से एक हैं। उनका जन्म 28 सितंबर, 1929 को इंदौर में शास्त्रीय गायक पंडित दीनानाथ मंगेशकर और शेवंती के घर हुआ था। उनके पिता के पेशे का लता मंगेशकर पर बहुत प्रभाव पड़ा, जिन्होंने बहुत कम उम्र में उनसे संगीत सीखना शुरू कर दिया था। न केवल लता, बल्कि उनके भाई मीना, आशा, उषा और हृदयनाथ ने भी अपने पिता से गायन की कला सीखी और संगीत उद्योग में प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं। जैसे ही उसने बॉलीवुड उद्योग में प्रमुख हिट गाने देना जारी रखा, वह गीतकारों और निर्देशकों की पसंदीदा पसंद बन गई। उन्होंने एक हजार से अधिक हिंदी और 36 क्षेत्रीय फिल्मों में लगभग 5,000 गाने गाए हैं। उनके गानों की पसंद और उनकी चालाकी के साथ उनका प्रदर्शन संगीत उद्योग को एक और स्तर पर ले गया। उस जमाने में शायद ही कोई एक्ट्रेस होगी, जिसके लिए लता मंगेशकर ने गाया न हो। लता मंगेशकर के गीतों में विभिन्न युगों की अभिनेत्रियों की एक विस्तृत श्रृंखला है, चाहे वह मधुबाला हो या प्रियंका चोपड़ा।

संपादकीय

मुस्लिमों को समझ आ चुका है कि सपा को सिर्फ उनके वोट चाहिए

राजनीति के मैदान में लगातार भारतीय जनता पार्टी से पटखनी खा रहे समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने सफलता की सीढ़ियां चढ़ने के लिए नई राह पकड़ ली है। इन दिनों अखिलेश काफी बदले-बदले नजर आ रहे हैं। एक तरफ तो वह सड़क पर संघर्ष करते दिखाई दे रहे हैं तो दूसरी ओर सपा के पुराने और नाराज साथियों को भी मनाने में लगे हैं। राजनीति के कुछ जानकार इस बदलाव को मुलायम की राजनैतिक शैली से जोड़ कर देख रहे हैं। नेताजी के नाम से विख्यात मुलायम हमेशा अपनी सियासत का तानाबाना सड़क पर संघर्ष करते हुए तैयार करते थे तो अपने वफादारों को कभी नाराज या अनदेखा नहीं करते थे। यही नेताजी की सियासी पूंजी हुआ करती थी, लेकिन जबसे समाजवादी पार्टी में अखिलेश युग का प्रारम्भ हुआ तब से समाजवादी पार्टी की सियासत ड्राइंग रूम तक में सिमट कर रह गई थी। अखिलेश हाँ में हाँ मिलाने वाले चटुकारों से घिरे रहते हैं। सपा के संघर्ष के दिनों के नेताओं को यह अच्छा नहीं लगता था, लेकिन उनकी कहीं सुनी नहीं जाती थी, ऐसे में कई नेताओं ने समाजवादी पार्टी से किनारा कर लिया तो कुछ अपने घरों में सिमट गए। खासकर मुसलमान नेताओं की नाराजगी समाजवादी पार्टी के लिए खतरे की घंटी नजर आ रही थी। विधान सभा चुनाव खत्म होने के बाद कई मुस्लिम नेताओं ने अखिलेश पर अनदेखी का आरोप लगाते हुए पार्टी छोड़ दी थी। एक के बाद एक सपा के मुस्लिम नेताओं के तीखे बयान सामने आ रहे हैं। कई मुस्लिम नेता पार्टी से इस्तीफा दे चुके हैं। आजम खान के मीडिया प्रभारी से लेकर सपा सांसद शफीकुर्रहमान बर्क तक अखिलेश के खिलाफ अपनी भड़ास निकाल रहे थे। संभल से समाजवादी पार्टी के सांसद डॉ. शफीकुर्रहमान बर्क ने अपनी ही पार्टी पर हमला बोला। उन्होंने मीडिया से कहा कि भाजपा के कार्यों से वह संतुष्ट नहीं हैं। भाजपा सरकार मुसलमानों के हित में काम नहीं कर रही है। भाजपा को छोड़िए समाजवादी पार्टी ही मुसलमानों के हितों में काम नहीं कर रही। रालोद प्रदेश अध्यक्ष रहे डॉ. मसूद ने चुनाव नतीजे आने के कुछ दिनों बाद ही अपना इस्तीफा पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष को भेज दिया। इसमें उन्होंने रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी के साथ सपा मुखिया अखिलेश यादव पर जमकर निशाना साधा था। अखिलेश को तानाशाह तक कह दिया था। सपा पर टिकट बेचने का आरोप भी लगाया था। सहारनपुर के सपा नेता सिकंदर अली ने पार्टी छोड़ दी। पार्टी छोड़ते हुए सिकंदर ने कहा कि हमने दो दशक तक सपा में काम किया है। सपा अध्यक्ष कायर की तरह पीठ दिखाने का काम कर रहे हैं। मुस्लिमों की उपेक्षा की जा रही है। सुल्तानपुर के नगर अध्यक्ष कासिम राईन ने भी अपने सभी पदों से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव को मुसलमानों पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाने में कोई रुचि नहीं है। सपा सरकार में दर्जा प्राप्त राज्यमंत्री रहे इरशाद खान ने 16 अप्रैल को पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव पर मुसलमानों की अनदेखी करने का आरोप लगाया। इरशाद ने कहा कि मुसलमान हमेशा से समाजवादी पार्टी के साथ रहा है लेकिन उसे सत्ता और संगठन में भागीदारी नहीं मिल पाई। पार्टी छोड़ने वाले ज्यादातर नेताओं का कहना था कि चुनाव में मुस्लिमों ने एकजुट होकर समाजवादी पार्टी के लिए वोट किया, लेकिन सपा के यादव वोटर्स ही पूरी तरह से उनके साथ नहीं आए। इसके चलते चुनाव में हार मिली। इसके बाद भी मुस्लिमों से जुड़े मुद्दों पर अखिलेश का नहीं बोलना नाराजगी को बढ़ा रहा है। कभी समाजवादी पार्टी के सुपर थ्री नेताओं में गिने जाने वाले आजम खां तक गुस्से में थे, लेकिन अखिलेश को तो मानो किसी की नाराजगी की परवाह ही नहीं थी। पार्टी के वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह भी अखिलेश यादव से नाराज चल रहे हैं। रेवती रमण और अखिलेश के बीच मनमुटाव की खबर पहले भी सामने आई थी, लेकिन यह मनमुटाव उस समय और तेज हो गया जब अखिलेश ने उनकी जगह पूर्व कांग्रेसी नेता कपिल सिब्बल को राज्यसभा भेज दिया था। रेवती रमण सिंह आठ बार के विधायक, दो बार लोकसभा के सांसद और वर्तमान में राज्यसभा के सांसद हैं। 2004 में उन्होंने बीजेपी के दिग्गज नेता मुरली मनोहर जोशी को हराया था। रेवती की गिनती मुलायम के करीबी नेताओं के रूप में होती थी। खैर, हाल में अखिलेश की सियासत में आए बदलाव की बात की जाए तो थोड़ा ही समय बीता होगा जब समाजवादी पार्टी नेतृत्व और अखिलेश यादव से आजम खान की नाराजगी की खबरें सुर्खियों में रहा करती थीं। सीतापुर की जेल में रहने के दौरान अखिलेश कभी आजम खान से मिलने नहीं गए। बाहर आने के बाद आजम भी इशारों ही इशारों में अखिलेश पर निशाना साधते रहे लेकिन अखिलेश ने आजम पर चुप्पी साधे रखी। अखिलेश और आजम के बीच बढ़ती दूरियां यूपी की सियासत में बड़ा मुद्दा बनीं। फिर भी अखिलेश इन चीजों की परवाह करते नहीं दिखे लेकिन रामपुर और आजमगढ़ लोकसभा उप-चुनाव में सपा को मिली हार ने अखिलेश को आईना दिखा दिया। अखिलेश अपनी सियासी रणनीति बदलने को मजबूर हो गए। पिछले कुछ दिनों से समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने मुसलमानों और आजम खान के मुद्दे पर मुखर होकर बोलना शुरू कर दिया है। मदरसों का सर्वे, वक्फ बोर्ड की संपत्ति की जांच या पीएफआई के खिलाफ कार्रवाई सब पर अखिलेश मुखर होकर मोदी-योगी सरकार पर हमलावर हैं। इसी मानसून सत्र में अखिलेश ने विधानसभा में भी आजम की यूनिवर्सिटी की जांच का मुद्दा उठाया था। करीब एक दर्जन विधायकों के साथ राजभवन पहुंचकर उन्होंने आजम खान के मसले पर राज्यपाल आनंदी बेन पटेल को ज्ञापन सौंपा था। राजभवन से निकलने के बाद अखिलेश ने बताया कि उन्होंने राज्यपाल से इस मामले में दखल देने और आजम खान को इंसाफ दिलाने की मांग की है। देखा जाये तो पिछले विधानसभा चुनाव और उसके बाद आजमगढ़-रामपुर लोकसभा उपचुनाव में हार के बाद अखिलेश यादव ने अपनी रणनीति में कई बदलाव किए हैं। राजनीतिक जानकारों का कहना है कि दरअसल, अखिलेश ने यह समझ लिया है कि उन्हें 2024 के लोकसभा चुनाव और यूपी में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव तक पार्टी को भाजपा से मुकाबले के लिए तैयार रखना है तो फिर पार्टी में पूरी तरह एकजुटता कायम करनी होगी। इसी क्रम में उन्होंने पार्टी के पुराने नेताओं और सिपहसलारों को नए से सिरे जोड़ने की कवायद शुरू कर दी है। पिछले दिनों आजमगढ़ जाकर जेल में बंद रमाकांत यादव से मुलाकात करना और लगातार आजम खान का मुद्दा उठाना इसी रणनीति का हिस्सा है।

पीएफआई पर प्रतिबंध लगने से जो नेता आंसू बहा रहे हैं, देश उन्हें माफ नहीं करेगा

मृत्युंजय दीक्षित

केंद्र सरकार ने आतंक के खिलाफ कड़ा कदम उठाते हुए देश के अंदर रहते हुए देश विरोधी गतिविधियां संचालित करने वाले कुख्यात संगठन पापुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) व उसके सहयोगी संगठनों- रिहैब इंडिया फाउंडेशन, कैंपस फ्रंट ऑफ इंडिया, ऑल इंडिया इमाम काउंसिल, एनसीएचआरओ, नेशनल वीमेन फ्रंट, जूनियर फ्रंट, एम्वायर इंडिया फाउंडेशन, रिहेब फाउंडेशन (केरल) को पांच साल के लिए यूएपीए कानून के अंतर्गत प्रतिबंधित कर दिया गया है। केंद्र सरकार द्वारा जारी की गयी सूचना के अनुसार अब राज्य सरकारें भी पीएफआई व उसके सहयोगी संगठनों के सदस्यों व समर्थकों पर बेहिचक कड़ी कानूनी कार्यवाही कर सकती हैं और राज्य स्तर पर भी प्रतिबंध लगा सकती हैं।

राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय है क्योंकि पीएफआई की गतिविधियां दिन प्रतिदिन राष्ट्रघाती होती जा रही थीं। स्मरणीय है कि वर्ष 2012 में जब मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे उस समय भी एनआईए ने पीएफआई को प्रतिबंधित करने की मांग की थी लेकिन तब मुस्लिम तुष्टिकरण में संलिप्त मनमोहन सरकार ने एनआईए की मांग को दबा दिया था। केंद्रीय गृह मंत्रालय द्वारा गजट किये जाने के बाद इस विषय पर दुर्भाग्यपूर्ण राजनीति भी प्रारंभ हो गई है। यह बहुत ही दुखद बात है कि जो संगठन राष्ट्र तथा समाज के लिए खतरा बन गये थे आज उन संगठनों के साथ कांग्रेस, सपा सहित कई सेकुलर दल खड़े दिखाई पड़ रहे हैं। जब पीएफआई व उसके सहयोगी संगठनों के खिलाफ देश की जांच एजेंसियां छापामार कार्यवाही कर रही थीं और लोगों की गिरफ्तारियां की जा रही थीं उस समय भी सेकुलर दलों के यह लोग मुस्लिम तुष्टिकरण के नाम पर उसका विरोध कर रहे थे। पीएफआई पर बैन लगने के साथ ही आज सेकुलर दलों के नेताओं के चेहरों से सारी मुस्कान छिन गयी क्योंकि अब इन दलों के वे सभी षड्यंत्र खुलने जा रहे हैं जो वह पीएफआई जैसे संगठनों के बल पर रच रहे थे। एनआईए को पीएफआई के खिलाफ पक्के सबूत मिले हैं जिसमें विस्फोटक कैसे बनाएं जैसे सीक्रेट चैट वाले दस्तावेज शामिल हैं। पीएफआई के काडर आतंकी और हिंसक गतिविधियों में शामिल रहे हैं और उनके आईएसआईएस जैसे आतंकी संगठनो से संबंध हैं, ये एक समुदाय को कट्टर बनाने का गुप्त एजेंडा चला रहे थे। ऐसे तमाम साक्ष्यों के आधार पर इन संगठनों पर पांच साल का प्रतिबंध लगाया गया है। जब देश के अलग-अलग हिस्सों में दंगों, हिंसा और राजनैतिक हत्याओं में पीएफआई का नाम आता रहा है उस समय कांग्रेस का साथ पीएफआई के साथ जाना बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण व शर्मनाक स्थिति है। समाजवादी पार्टी के मुस्लिम सांसद व कांग्रेस के सांसद ही नहीं अपितु कई क्षेत्रीय दलों के नेता भी बड़ी बेशर्मी के साथ आतंक के खिलाफ कदमों का विरोध कर रहे हैं और आरोप लगा रहे हैं कि केंद्र सरकार लोगों का ध्यान असल मुद्दों से भटका रही है। और तो और बिहार में चारा घोटाले के सबसे बड़े आरोपी तथा जमानत पर बाहर बैठे लालू यादव जैसे नेता पीएफआई पर प्रतिबंधों का विरोध और संघ पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर रहे हैं। स्पष्ट है कि यह नेता मुस्लिम वोटबैंक के लालच में देश की सुरक्षा व अखंडता के साथ भी खिलवाड़ करते रहेंगे ऐसे तथाकथित नेता जेल के अंदर ही रहें तो ही देश के लिए अच्छा रहेगा। पीएफआई का विवादों से गहरा नाता रहा है। देश के अलग-अलग हिस्सों में दंगा, हिंसा–आगजनी, पत्थरबाजी और राजनैतिक हत्याओं में इस संगठन का नाम आता रहा है। उत्तर से दक्षिण भारत तक जब भी कोई बड़ी हिंसा या हत्या हुई है तब पीएफआई का नाम ही सामने आता है।

आज मुस्लिम वोटबैंक की लालच में देश के सेकुलर दल पीएफआई के लिए आंसू बहा रहे हैं। यह वही लोग हैं जो बाटला हाउस एनकाउंटर में भी रोये थे और याकूब मेनन को बचाने के लिए रात में सुप्रीम कोर्ट की चौखट तक पहुंच गये थे।

हाल के दिनों में गई छापामारी से कई सनसनीखेज जानकारियां मिली हैं। पॉपुलर फ्रंट आफ इंडिया यानी पीएफआई अपने सहयोगी संगठनों के साथ मिलकर 2047 में भारत का इस्लामीकरण करने का षड़यंत्र रच रहा था जिसका खुलासा बिहार में फुलवारी शरीफ सहित कई जिलों में एनआईए की ओर से की गई छापामारी में प्राप्त दस्तावेजों से हुआ तथा उसके बाद पीएफआई के खिलाफ और तेजी से कार्यवाही की गई है। यह भी खुलासा हुआ है कि पीएफआई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व बीजेपी के कई नेताओं, मुख्यमंत्रियों, सहित संघ व विश्व हिंदू परिषद के नेताओं की हत्या की साजिश रच रहा था। पीएफआई ने अभी हाल ही में केरल के कोझीकोड मे एक रैली निकाली थी जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, भाजपा व संघ विरोधी नारे लगाये गये थे। साथ ही एक वीडियो वायरल हुआ था जिसमें एक छोटा लड़का हाथ में पीएफआई का झंडा लेकर अयोध्या में फिर से बाबरी मस्जिद बनाने की बात कह रहा था। देश की राजधानी दिल्ली में सीएए विरोधी प्रदर्शन, शाहीन बाग हिंसा और जहांगीरपुरी हिंसा से लेकर रामनवमी के अवसर पर देश के कई हिस्सों में जो हिंसा हुई थी उन सबकी साजिश के पीछे पीएफआई ही था। किसान आंदोलन व उसमें हुई हिंसा में भी पीएफआई का ही कनेक्शन पता चल रहा है। राजस्थान की करौली हिंसा, कानपुर व उत्तर प्रदेश के कई जिलों में हुई हिंसा में भी पीएफआई का ही हाथ रहा है। इस बात के भी सबूत मिल रहे हैं कि विश्वविद्यालयों में "हम लेकर रहेंगे आजादी" के जो नारे लगाए जा रहे थे उसमें भी पीएफआई अपने सहयोगी संगठन सीएफ़आई के माध्यम से संलिप्त रहा है। भारत में हिजाब विवाद को भड़काने में भी पीएफआई का हाथ रहा है। अभी बीजेपी प्रवक्ता नूपुर शर्मा के तथाकथित बयान को लेकर जो विरोध प्रदर्शन हुए उसमें भी पीएफआई का हाथ था और इस विवाद की आड़ में राजस्थान के कन्हैया लाल से लेकर महाराष्ट्र मे उमेश कोल्हे तक जितनी भी हत्याएं हुईं उनमें भी पीएफआई ही शामिल है। पीएफआई के कार्यकर्ता कई आतंकवादी गतिविधियों के साथ 27 निर्दोष लोगों की हत्या में भी शामिल रहे हैं। इनमे संजीत, नंदू, अभिमन्यु, बिबिन (केरल) शरत, आर. रूद्रेश, प्रवीण पुजारी और प्रवीण नेत्तारू (कर्नाटक) और तमिलनाडु में शशि कुमार जैसे युवाओं की हत्या में भी यह संगठन शामिल रहा है। पीएफआई की आपराधिक व आतंकी गतिविधियों का इतिहास बहुत पुराना है तथा वर्ष 2012 में ही केरल की कांग्रेस सरकार ने हाईकोर्ट में बताया था कि हत्या के 27 मामलों में इस संगठन का सीधा हाथ है इनमें से अधिकतर मामले संघ और सीपीएम के कार्यकर्ताओं की हत्या से जुड़े थे। तब सरकार ने कोर्ट में बताया था कि यह पीएफआई और कुछ नहीं अपितु प्रतिबंधित संगठन स्टूडेंटस इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया (सिमी) का ही नया रूप है। इस संगठन के अल कायदा और तालिबान जैसे आतंकी संगठनों से लिंक होने के भी आरोप लगते रहे हैं। वर्ष 2014 में भी केरल सरकार ने हाईकोर्ट में बताया था कि एनडीएफ और पीएफआई के कार्यकर्ता 27 सांप्रदायिक हत्याओं और 86 हत्याओं के प्रयास और राज्य में दर्ज 106 सांपद्रायिक मामलों में शामिल रहा है। आबिद पाशा नाम के एक बढ़ई को हत्या के छह मामलों में गिरफ्तार किया गया था। नवंबर 2017 में केरल पुलिस को पता चला था कि संगठन के छह युवा आईएसआईएस जैसे कुख्यात संगठन में शामिल हो गये थे। यह बहुत ही दुर्भाग्य की बात है कि आज उसी केरल के तथाकथित सेकुलर नेता पीएफआई पर प्रतिबंधों का विरोध और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को प्रतिबंधित करने की मांग कर रहे हैं। विदेशी फंडिंग के बल पर भारत में धर्मांतरण व लव जिहाद को फैलाने की साजिश भी यह संगठन रचता रहता था।

पीएफआई पर प्रतिबंध का फैसला देर से उठाया गया एक सही कदम है

अजय कुमार

पीएफआई के बारे में एक लंबे समय से न केवल यह कहा जा रहा है कि यह प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी का नया रूप है, बल्कि यह भी कहा जा रहा था कि यह ऐसी गतिविधियों में लिप्त है, जिन्हें आतंकी हरकतों के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

आखिरकार तमाम किन्तु-परंतु के बीच पीएफआई को बैन कर ही दिया गया। केंद्र कि मोदी सरकार ने 27 अक्टूबर को देर रात्रि एक राजपत्र अधिसूचना जारी कर गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) कानून के कड़े प्रावधानों के तहत 'पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया पीएफआई (पीएफआई) पर पांच साल के लिए प्रतिबंध लगाए जाने की घोषणा की तो इस पर सियासत भी शुरू हो गई। पीएफआई के साथ-साथ ही आठ अन्य संगठनों की भी नकेल कसी गई है। ये सभी संगठन आतंकी गतिविधियों में शामिल थे। प्रतिबन्ध लगाने के बाद पीएफआई ने पहली प्रतिक्रिया में बहुत ठंडा जवाब देते हुए कहा कि सभी को सूचित किया जाता है कि पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया को भंग कर दिया गया है। पीएफआई सरकार के इस निर्णय को स्वीकार करता है। पीएफआई पर देश विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है। दावा ये भी किया जा रहा है पीएफआई प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन सिमी का ही नया अवतार है। इस आशंका की वजह ये है कि कुछ दिनों से चल रही छापेमारी में देश के अलग-अलग भागों से पीएफआई के जो नेता और पदाधिकारी गिरफ्तार किए गए हैं, इनका पूर्व में सिमी के साथ टेरर कनेक्शन पाया जाचुका था। प्रतिबंध से पूर्व पीएफआई के ठिकानों पर दो बार हुई छापेमारी और इस दौरान अनेक संदिग्ध लोगों को हिरासत में लिया जाना यही बताता है कि इस संगठन का मकड़जाल बेहद मजबूत हो गया था। पहली बार के छापों में एक दर्जन राज्यों में इस संगठन के ठिकानों पर एनआइए और ईडी के छापों के दौरान सौ से अधिक लोगों को पकड़ा गया था। उस समय अनेक ऐसे आपत्तिजनक दस्तावेज मिले थे, जो यही बताते थे कि यह संगठन किसी आतंकी संगठन की तरह देश विरोधी गतिविधियों में लिप्त है। इसलिस ऐसे संगठन के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करने के साथ ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे भविष्य में ऐसे समूह सिर न उठा सकें। पीएफआई के बारे में एक लंबे समय से न केवल यह कहा जा रहा है कि यह प्रतिबंधित आतंकी संगठन सिमी का नया रूप है, बल्कि यह भी कहा जा रहा था कि यह ऐसी गतिविधियों में लिप्त है, जिन्हें आतंकी हरकतों के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। हैरानी है कि ऐसे संगीन आरोपों से दो-चार होने के बाद भी उसके खिलाफ कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई- और वह भी तब, जब रह-रहकर उसके सदस्यों के बारे में ऐसे तथ्य सामने आते रहे कि वे देश को अस्थिर-अशांत करने के षड्यंत्र में लिप्त हैं। 2012 में केरल सरकार ने हाईकोर्ट में बताया था कि पीएफआई और कुछ नहीं, बल्कि प्रतिबंधित संगठन स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया यानी सिमी का ही नया रूप है। पीएफआई कार्यकर्ताओं के अलकायदा और तालिबान जैसे आतंकी संगठनों से लिंक होने के आरोप भी लगते रहे हैं। एनआईए के सूत्रों का दावा है कि पीएफआई के कई सदस्य पहले

स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया और इंडियन मुजाहिदीन जैसे प्रतिबंधित संगठनों से जुड़े थे। पीएफआई नेता अब्दुल रहमान कथित तौर पर सिमी का राष्ट्रीय सचिव हुआ करता था। सूत्रों का दावा है कि पीएफआई का राज्य सचिव अब्दुल सत्तार भी इसी तरह की ऊंचे पद पर सिमी से जुड़ा हुआ था। पीएफआई की स्थापना 2006 में की गई थी और चार साल बाद 24 जुलाई 2010 को केरल के तत्कालीन सीएम और वामपंथी नेता वीएस अच्युतानंदन ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान दावा किया था कि पीएफआई केरल को अगले 20 सालों में मुस्लिम बहुल राज्य बनाने की साजिश रच रहा है। इसके लिए संगठन युवाओं को पैसा और हथियार दे रहा है। युवाओं को मुस्लिम बनाने के लिए पैसा और अन्य लालच दिए जा रहे हैं। दरअसल, पीएफआई नफरत और खून खराबे का कारोबार काफी सलीके से चला रहा था। इसके लोग न केवल विदेशों से अवैध तरीके से धन एकत्र कर रहे थे, बल्कि उसका इस्तेमाल कट्टरता, आतंक और अलगाव को हवा देने में कर रहे थे। अब तो यह भी स्पष्ट है कि यह संगठन हिंदू विरोधी भावनाओं को भड़काने के साथ सामाजिक ताने-बाने और कानून एवं व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौतियां भी खड़ी कर रहा था। हिंदूफोबिया यानी हिंदुओं को खतरा बताकर उन्हें एक हौवे के रूप में चित्रित करना कोई नई-अनोखी बात नहीं। यह मानने के अच्छे-भले कारण हैं कि पीएफआई इस काम में जुटा हुआ था। वास्तव में हिंदूफोबिया को राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हवा दी जा रही है। इसका ताजा उदाहरण है इंग्लैंड के शहर लेस्टर में हुई हिंदू विरोधी हिंसा। लेस्टर के बाद बर्मिंघम में भी हिंदू विरोधी उन्माद की झलक मिली। ध्यान रहे कि कनाडा और अमेरिका में भी इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, जो यह बयान करती हैं कि कई अंतरराष्ट्रीय ताकतें हिंदूफोबिया को बल देने में लगी हुई हैं। कुछ समय पहले इसके संकेत तब मिले थे, जब ज्ञानवापी मामला सतह पर था। उस समय पाकिस्तान और अन्य देशों में सक्रिय भारत विरोधी ताकतों ने हिंदूफोबिया फैलाने का काम एकजुट होकर किया था। इसमें संदेह नहीं कि पीएफआई के संबंध ऐसी कई ताकतों से हैं। इस संगठन के खिलाफ जितने और जैसे प्रमाण मिल चुके हैं, उन्हें देखते हुए उस पर पाबंदी लगाने की दिशा में कदम उठाए जाने चाहिए। लब्बोलुआब यह है जब से भारतीय जनता पार्टी ने हिन्दुत्व के एजेंडे को आगे बढ़ाया है तभी से मुस्लिम कट्टरपंथी भी अपना सिर उठाने लगे हैं।

मुस्लिमों को सबसे ज्यादा पद्म पुरस्कार किसने दिये? कांग्रेस ने, अटलजी ने या मोदी ने?

नीरज कुमार दुबे

कांग्रेस और भाजपा के कार्यकाल में जिन मुस्लिमों को पद्म पुरस्कारों पर मिले उनके नामों पर नजर डालें तो एक बात और साफतौर पर उभर कर आती है कि दोनों ही पार्टियों ने ऐसे नामों को वरीयता दी जो वैचारिक आधार पर उनके नजदीक लगे।

भारत में मुसलमानों को लेकर राजनीति शुरू से होती रही है। यदि मुसलमानों को वोट बैंक नहीं समझा गया होता तो आज इस समुदाय की आर्थिक और सामाजिक दशा निश्चित ही बहुत बेहतर होती। मुस्लिम समाज की बेहतरी की दिशा में किये गये कार्यों को लेकर सरकार और विपक्ष के अपने-अपने दावे हैं। लेकिन इन दावों और वादों की पड़ताल करने की बजाय आज हम जानेंगे कि इस समाज को पद्म पुरस्कारों जैसा राष्ट्रीय सम्मान किसने सर्वाधिक दिया है। हालांकि संख्या के लिहाज से देखेंगे तो चूंकि देश में अधिकतर समय कांग्रेस का ही शासन रहा है इसीलिए उसी ने सर्वाधिक मुस्लिमों को इस सम्मान से नवाजा है लेकिन यह भी गौर करने वाली बात है कि एनडीए सरकार के दौरान चाहे अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री रहे हों या अब नरेंद्र मोदी...इन दोनों ही नेताओं की सरकारों के कार्यकाल में भी मुस्लिमों के सम्मान का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। खास बात यह भी है कि कांग्रेस सरकारों के कार्यकाल में मुस्लिमों को मिले पद्म पुरस्कारों पर नजर दौड़ाएंगे तो पता चलता है कि उनमें संभ्रांत वर्ग के ही ज्यादातर लोग शामिल थे। कांग्रेस सरकार के कार्यकालों में जिन मुस्लिमों को पद्म पुरस्कार दिये गये उनमें प्रसिद्ध गीतकार, संगीतकार, अभिनेता-अभिनेत्री, नर्तक, कवि, चित्रकार, डॉक्टर, कश्मीरी कार्यकर्ता, नेताओं की पत्नियां या अन्य परिजन, एनजीओ चलाने वाले, सरकारी अधिकारी, सरकारी अधिकारियों के परिजन और कांग्रेस पार्टी के नेता आदि शामिल थे। जबकि एनडीए सरकार के कार्यकाल में ऐसे मुस्लिमों को पद्म पुरस्कार से नवाजा जा रहा है जिन्हें उनके नाम की घोषणा से पहले राज्य या राष्ट्रीय स्तर पर कोई नहीं जानता था। प्रधानमंत्री मोदी के कार्यकाल में पद्म पुरस्कार पाने वाले मुस्लिमों में कोई गाय को बचाने का अभियान चलाता है तो कोई लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार करने वाला है तो कोई ऐसा पुरातत्वविद् है जो अयोध्या में राम मंदिर चाहता है। कांग्रेस और भाजपा के कार्यकाल में जिन मुस्लिमों को पद्म पुरस्कार मिले उनके नामों पर नजर डालें तो एक बात और साफतौर पर उभर कर आती है कि दोनों ही पार्टियों ने ऐसे नामों को वरीयता दी जो वैचारिक आधार पर उनके नजदीक लगे। भाजपा भले ही कांग्रेस पर 'मुस्लिम तुष्टिकरण' का आरोप लगाती है, लेकिन वह भी इस परंपरा को जारी रखे हुए है। पहले एनडीए शासन (1998-2004) के दौरान, 534 पद्म पुरस्कार वितरित किए गए, जिनमें से 30 मुसलमानों को दिए गए (उस्ताद बिस्मिल्लाह खान को भारत रत्न सहित) यानि भाजपा ने लगभग 6 प्रतिशत मुस्लिमों को पद्म पुरस्कार दिये। वहीं मोदी सरकार ने कुल 902 पुरस्कार (2022 तक) दिए हैं और इस आंकड़े में केवल 50 मुस्लिम शामिल हैं। यानि मुस्लिमों की हिस्सेदारी घटकर 5.5 फीसदी रह गई है।

NCR समाचार

संपादकीय कार्यालय

जी-12/276, संगम विहार, नई दिल्ली-110062. सोमवार से शनिवार

प्रात: 9:00 से सायं 9:00

फोन: 8888883968, 9811111715

आवश्यक सूचना

एनसीआर समाचार के समस्त पाठकों तथा पत्र के साथ जुड़े समस्त पत्रकारों, व्यावसायिक संयोजक, सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं/संस्थानों को यह सूचित किया जाता है कि गत वर्षों से श्री बलबीर सिंह के नेतृत्व व स्वामित्व में चले आ रहे वर्तमान एनसीआर समाचार पत्र का प्रकाशन व स्वामित्व मो. हनीफ, पुत्र श्री इस्माईल खान मास्टरजी, संगम विहार के स्वामित्व व नेतृत्व में हो रहा हैं। अत: भविष्य में समस्त प्रकार की व्यावसायिक, कानूनी एवं सामाजिक गतिविधियों के संचालन हेतु मो. हनीफ/ नये कार्यालय जी 12/276, संगम विहार, नई दिल्ली - 110062, दूरभाष (मोबाईल) 8888883968, 9811111715 से सम्पर्क करें

Jio की 5G सेवा दिसंबर 2023 तक पूरे देश में शुरू हो जाएगी: मुकेश अंबानी

एजेंसी

रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के चेयरमैन मुकेश अंबानी ने शनिवार को ऐलान किया कि उनकी दूरसंचार इकाई रिलायंस जियो अगले साल दिसंबर तक पूरे देश में 5जी दूरसंचार सेवाओं की शुरुआत कर देगी। अंबानी ने 'इंडिया मोबाइल कांग्रेस' सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा, ''मैं दिसंबर 2023 तक देश के हर शहर, हर तालुका और हर तहसील में 5जी पहुंचाने की जियो की प्रतिबद्धता को दोहराना चाहता हूं।''इसके पहले अंबानी ने आरआईएल के शेयरधारकों की अगस्त में हुई सालाना बैठक में कहा था कि दिल्ली, मुंबई, चेन्नई और कोलकाता में दीपावली तक 5जी सेवाएं शुरू कर दी जाएंगी। अंबानी ने कहा कि जियो की अधिकांश 5जी प्रौद्योगिकी भारत में ही विकसित की गई है, इसलिए इस पर आत्मनिर्भर भारत की मुहर लगी हुई है। उन्होंने कहा कि 5जी और 5जी-आधारित डिजिटल समाधान आम भारतीयों तक सस्ती एवं उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और कौशल विकास को पहुंचा सकते हैं। अंबानी के मुताबिक, 5जी प्रौद्योगिकी बिना किसी अतिरिक्त निवेश के मौजूदा अस्पतालों को स्मार्ट अस्पतालों में बदलकर ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर सकती है।इससे उपचार की गति और सटीकता में नाटकीय सुधार होगा और वास्तविक समय में निर्णय लिए जा सकेंगे। उन्होंने कहा कि 5जी सेवा कृषि, सेवा क्षेत्र, व्यापार, उद्योग, परिवहन और ऊर्जा अवसंचना के डिजिटलीकरण और उनके डेटा प्रबंधन में तेजी लाकर शहरी और ग्रामीण भारत के बीच की खाई को पाटने में सक्षम है। अंबानी ने कहा कि जनसांख्यिकी और डिजिटल प्रौद्योगिकी की मिली-जुली ताकत के दम पर भारत दुनिया की अग्रणी डिजिटल सोसाइटी बन सकता है और भारत को 3,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था से वर्ष 2047 तक 40,000 अरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाकर और प्रति व्यक्ति आय को मौजूदा 2,000 डॉलर से बढ़ाकर 20,000 डॉलर तक ले जाकर वृद्धि को गति दी जा सकती है। रिलायंस इंडस्ट्रीज के प्रमुख ने कहा, ''यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि 5जी एक डिजिटल कामधेनु की तरह है, यह हमें जो कुछ भी चाहिए वह दे सकती है।'' उन्होंने कहा, ''भारत ने भले ही थोड़ी देर से शुरुआत की हो, लेकिन हम दुनिया की तुलना में उच्च गुणवत्ता वाली और अधिक किफायती 5जी सेवाएं शुरू करेंगे।

चिप आपूर्ति में सुधार और त्योहारी मांग से वाहनों की बिक्री ने पकड़ी रफ्तार

एजेंसी

त्योहारी मौसम में मांग बढ़ने और चिप आपूर्ति में सुधार आने से देश में घरेलू यात्री वाहन उद्योग की सितंबर की बिक्री में सालाना आधार पर बड़ा उछाल आया है।

पिछले वर्ष सेमीकंडक्टर की कमी होने से वाहन आपूर्ति बुरी तरह प्रभावित हुई थी लेकिन इस वर्ष उद्योग की मासिक बिक्री सबसे अच्छी रही है। सितंबर में कुल 3,55,946 यात्री वाहनों की घरेलू बिक्री हुई जो एक साल पहले की तुलना में 91 फीसदी अधिक है। यही नहीं, दूसरी तिमाही की बिक्री भी 10 लाख के आंकड़े को पार कर गई। मारुति सुजुकी, हुंदै और टाटा मोटर्स जैसी अग्रणी वाहन कंपनियां चिप की कमी में सुधार होने से पिछले महीने डीलरों को अधिक आपूर्ति कर पाईं। देश की सबसे बड़ी कार विनिर्माता कंपनी मारुति सुजुकी इंडिया ने शनिवार को बताया कि सितंबर में उसकी घरेलू यात्री वाहनों की कुल बिक्री बढ़कर 1,48,380 इकाई रही जो सितंबर 2021 में 63,111 इकाई थी।

मारुति सुजुकी ने एक बयान में कहा कि आल्टो और एस-प्रेसो जैसी छोटी कारों की बिक्री भी बढ़कर 29,574 इकाई हो गई जो एक साल पहले 14,936 इकाई थी। इसी तरह स्विफ्ट, सेलेरियो, इग्निस, बलेनो और डिजायर जैसी कॉम्पैक्ट कारों की बिक्री पिछले वर्ष सितंबर की 20,891 इकाई की तुलना में बढ़कर 72,176 इकाई हो गई। सितंबर में मारुति सुजुकी ने ब्रेजा, एस-क्रॉस और एर्टिगा जैसे यूटिलिटी वाहनों की बिक्री 18,459 इकाई से बढ़कर 32,574 इकाई हो गई। कंपनी के वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (विपणन एवं बिक्री) शशांक श्रीवास्तव ने कहा, ''42 महीनों में कंपनी के लिए यह दूसरा सबसे अच्छा महीना रहा है। सर्वश्रेष्ठ महीना अक्टूबर 2020 था जब कंपनी ने घरेलू बाजार में 1,63,000 इकाई की आपूर्ति की थी।'' उन्होंने बताया कि पहली बार उद्योग ने एक तिमाही में दस लाख वाहनों की बिक्री की है। पहले छह महीने की थोक बिक्री भी उद्योग के लिए सबसे अच्छी रही है जिसमें 19.37 लाख वाहन बिके।

बिना मिश्रण वाले पेट्रोल, डीजल पर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लागू करने का फैसला टला

एजेंसी

सरकार ने मिश्रण के बगैर बिकने वाले पेट्रोल एवं डीजल पर दो रुपये प्रति लीटर की दर से अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लागू करने का फैसला क्रमशः एक महीने और छह महीने के लिए टाल दिया है। वित्त मंत्रालय ने शुक्रवार की रात को जारी एक गजट अधिसूचना में कहा कि इथेनॉल की मिलावट के बगैर बिकने वाले पेट्रोल पर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क अब एक नवंबर, 2022 से लागू होगा। वहीं बायो-डीजल के मिश्रण के बगैर बिकने वाले डीजल पर यह शुल्क अब एक अप्रैल, 2023 से लागू होगा। सरकार पेट्रोलियम आयात में कटौती के लिए बिना मिश्रण वाले पेट्रोल एवं डीजल पर अतिरिक्त शुल्क लगाने की तैयारी में है। लेकिन इस फैसले को लागू करने के लिए उद्योग समुदाय को अधिक समय देने की कवायद के तौर पर समयसीमा को आगे बढ़ाने का फैसला किया गया है। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने वित्त वर्ष 2022-23 के अपने बजट भाषण में क्रमशः इथेनॉल और बायो-डीजल के मिश्रण के बगैर बिकने वाले पेट्रोल और डीजल पर दो रुपये प्रति लीटर अतिरिक्त उत्पाद शुल्क लगाने की घोषणा की थी। बिना मिश्रण वाले ईंधन पर यह अतिरिक्त उत्पाद शुल्क एक अक्टूबर 2022 से लागू होना था, लेकिन अब इसे आगे के लिए टाल दिया गया है। बिना मिश्रण वाले पेट्रोल पर यह शुल्क अब एक नवंबर से लागू होगा जबकि डीजल पर यह शुल्क एक अप्रैल, 2023 से लगाया जाएगा। फिलहाल गन्ने या खाद्यान्न से निकाले गए इथेनॉल को पेट्रोल में 10 प्रतिशत के अनुपात में मिलाए जाने की मंजूरी मिली हुई है। सरकार का मानना है कि इससे आयात किए जाने वाले कच्चे तेल की जरूरत में कमी आएगी और पेट्रोल पर उत्पाद शुल्क में कटौती की भी स्थिति बनेगी। वहीं देश में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले ईंधन डीजल में बायो-डीजल का मिश्रण प्रायोगिक तौर पर शुरू हुआ है।

तिलहन, सीपीओ, पामोलीन तेल की कीमतों में सुधार

एजेंसी

एक निश्चित मात्रा (सालाना 20-20 लाख टन सूरजमुखी और सोयाबीन तेल) में शुल्क-मुक्त आयात की छूट के बाद बाकी आयात प्रभावित होने से उत्पन्न आपूर्ति कम होने के कारण दिल्ली तेल- तिलहन बाजार में शनिवार को सरसों, सोयाबीन तेल तिलहन तथा कच्चे पामतेल (सीपीओ), पामोलीन के साथ-साथ सरसों तेल की कीमतों में सुधार देखने को मिला।

वहीं मूंगफली तेल-तिलहन और बिनौला तेल के भाव पूर्व-स्तर पर बने रहे। बाजार से जुड़े सूत्रों ने बताया कि सरकार ने खाद्यतेल प्रसंस्करणकर्ताओं (जो ग्राहकों को आपूर्ति करने के लिए आयात करते हैं) को अगले दो साल तक सालाना 20-20 लाख टन सोयाबीन और सूरजमुखी तेल का शुल्क-मुक्त आयात करने की छूट दी है। इसके बाद होने वाले आयात पर आयातकों को सात रुपये प्रति किलो के हिसाब से शुल्क अदा करना होगा। लेकिन कोटा वाले सस्ते आयातित तेल के मुकाबले बाकी आयातित तेलों के महंगा और गैर-प्रतिस्पर्धी होने के कारण आयातक नये सौदे नहीं खरीद रहे हैं। इसकी वजह से खाद्य तेलों में कम आपूर्ति (शॉर्ट सप्लाई) की स्थिति पैदा हो गई है और लगभग सभी खाद्य तेल सस्ता होने के बजाय महंगे हो गये हैं। सूत्रों ने कहा कि सरकार को देश में तिलहन उत्पादन बढ़ाना है और आयात पर निर्भरता खत्म करनी है तो उसे तत्काल इस फैसले को बदलते हुए इन आयातित तेलों पर फिर से 20-30 प्रतिशत का आयात शुल्क लगा देना चाहिये और आयात की कोटा व्यवस्था को खत्म कर देना चाहिये। इससे सरकार को राजस्व की प्राप्ति होगी, किसानों की फसल बाजार में खपेगी और आयात बढ़ने की वजह से खाद्य तेल सस्ते होंगे जिससे उपभोक्ताओं को भी राहत मिलेगी। उन्होंने कहा कि खाद्य तेलों के दाम तेज होने के बाद भी देशी तेलों से कहीं सस्ते हैं। चार-पांच महीने पूर्व सूरजमुखी तेल का भाव लगभग 2,450 डॉलर प्रति टन था जो अब घटकर 1,300 डॉलर रह गया है। इसी तरह चार पांच माह पूर्व पामोलीन तेल का भाव 2,150 डॉलर प्रति टन था जो अब घटकर 850 डॉलर रह गया है। आयातित तेलों के भाव चार-पांच माह पहले के मुकाबले लगभग आधा से भी कम रह गये हैं। सूत्रों ने कहा कि एक तेल का दाम महंगा होता है तो उसका असर बाकी खाद्यतेलों पर भी दिखता है जिससे तेल कीमतों में भी सुधार होता है। शुक्रवार की रात को खाद्यतेलों का आयात शुल्क मूल्य कम किया गया है लेकिन इसके बावजूद शॉर्ट सप्लाई के कारण तेल कीमतों में सुधार आया है। सरकार द्वारा आयात शुल्क लगाने से किसानों को भी फायदा होगा क्योंकि उनकी उपज बाजार में खपेंगी। इस साल आयातित तेल से सरसों 20-30 रुपये प्रति लीटर सस्ता होने के बाद भी सारी सरसों की खपत नहीं हो पाई। ऐसे में इसके आयातित तेलों से लगभग 40 रुपये लीटर महंगा होने के बाद इसकी खपत हो पाना और भी मुश्किल हो जाएगा। प्रमुख तेल संगठन सोपा ने भी सरकार को आगाह किया था कि देश में पर्याप्त मात्रा में सोयाबीन की फसल है लेकिन ऐसे में आयात खोलने के बाद सोयाबीन के डीआयल्ड केक (डीओसी) की खपत भी मुश्किल होगी।

आरबीआई ने रेपो रेट बढ़ाई, कर्जदारों का बजट बिगड़ा

एजेंसी

यदि आप बैंक के कर्जदार हैं तो आरबीआई के नीतिगत परिवर्तन से आपको चौथी बार फिर एक तगड़ा झटका लगा है। दरअसल, आरबीआई ने अपने रेपो रेट में .50 (पॉइंट्स पचास प्रतिशत) की बढ़ोतरी की है, जिससे कर्जदारों की ईएमआई बढ़ गई और उनका बजट बिगड़ गया। बता दें कि रिजर्व बैंक के गर्वनर शक्तिकांत दास ने नीतिगत रेपो दर को 50 आधार अंकों से बढ़ाकर 5.9 प्रतिशत कर दिया है।

उल्लेखनीय है कि इस वर्ष की पहली तिमाही में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि उम्मीद से कम रही, जो 13.5 प्रतिशत थी, और यह शायद प्रमुख वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं में सबसे अधिक थी। बता दें कि रेपो रेट में बढ़ोतरी का सीधा असर आमलोगों पर पड़ेगा, क्योंकि कर्ज महंगा हो जाएगा। मसलन, बैंकों की बोरोइंग कॉस्ट बढ़ने के बाद बैंक अपने ग्राहकों पर इसका सीधा बोझ डालने का काम करेंगे। होम लोन पर इसका असर तो पड़ेगा ही, साथ ही ऑटो लोन व अन्य लोन भी महंगे हो जाएंगे। गौरतलब है कि रेपो रेट का सीधा संबंध बैंक से लिए जाने वाले लोन से है, जिसकी ईएमआई पर आरबीआई के ताजा फैसले का सीधा असर पड़ेगा। उल्लेखनीय है कि रेपो रेट वह दर होती है जिस पर आरबीआई बैंकों को कर्ज देने का काम करता है। जबकि रिवर्स रेपो रेट उस दर को कहते हैं जिस दर पर बैंकों को आरबीआई अपने यहां पैसा रखने पर ब्याज देती है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने मौद्रिक नीति की समीक्षा पेश करते हुए कहा कि हम कोविड महामारी, रूस-यूक्रेन युद्ध के बाद विभिन्न देशों के केंद्रीय बैंकों के नीतिगत दर में आक्रामक वृद्धि से एक नये 'तूफान' का सामना कर रहे हैं। लिहाजा मौद्रिक नीति समिति के छह सदस्यों में से पांच ने नीतिगत दर में वृद्धि का समर्थन किया। मुद्रास्फीति की ऊंची दर को देखते हुए मौद्रिक नीति समिति का सूझ-बूझ के साथ मौद्रिक नीति को लेकर उदार रुख को वापस लेने के रुख पर कायम रहने का निर्णय लिया गया है। इससे कर्जदारों की परेशानी बढ़ेगी। भारतीय रिजर्व बैंक की मॉनीटरी पॉलिसी कमेटी (एमपीसी) की बैठक में लिए गए फैसलों के बाद रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने रेपो रेट को बढ़ा दिया है। समझा जाता है कि केंद्रीय बैंक के निर्धारित लक्ष्य से लगातार ऊपर बनी महंगाई दर को काबू में करने के लिए आरबीआई ने ताजा कदम उठाया है, जिससे ईएमआई पर 5 माह में 4 बार फटका लगा है। दरअसल, एक रिपोर्ट में कहा गया है कि आरबीआई ने महंगाई से निपटने के लिए अमेरिका के फेडरल रिजर्व समेत अन्य वैश्विक केंद्रीय बैंकों को देखते हुए लगातार चौथी बार ब्याज दरों में बढ़ोतरी कर दिया है। गौरतलब है कि आरबीआई ने देश में महंगाई (इन्फ्लेशन) को काबू में करने के लिए उठाए गए कदमों के तहत मई महीने से अब तक रेपो रेट में 1.40 फीसदी की बढ़ोतरी की है। उल्लेखनीय है कि कोरोना काल में जो रेपो दर 4 फीसदी पर थी, वह अब बढ़कर 5.40 फीसदी हो गई है। इस बार इसमें 0.50 फीसदी की वृद्धि किये जाने से अब यह दर बढ़कर 5.90 फीसदी पर पहुंच चुकी है।

मजबूत मांग से दोपहिया वाहनों की बिक्री बढ़ी

एजेंसी

आर्थिक गतिविधियों में तेजी आने और उसके कारण मांग मजबूत होने से सितंबर में दोपहिया वाहन विनिर्माताओं की ब्रिकी बढ़ी है। वाहन विनिर्माताओं को आगामी त्योहारी सीजन में मांग और बढ़ने की उम्मीद है। हीरो मोटोकॉर्प ने शनिवार को बताया कि सितंबर 2022 में उसने घरेलू स्तर पर 5,07,690 वाहन बेचे जो सितंबर 2021 में हुई 5,05,462 इकाइयों की बिक्री से अधिक है। हालांकि पिछले वर्ष की तुलना में सितंबर 2022 में उसका निर्यात घटकर 12,290 इकाई रह गया जो सितंबर 2021 में 24,884 इकाई था। इस तरह सितंबर 2022 में हीरो मोटोकॉर्प ने कुल 5,19,980 वाहनों की बिक्री की जो पिछले वर्ष के समान महीने में बिके 5,30,346 वाहनों की तुलना में 1.95 फीसदी कम है। कंपनी ने एक बयान में कहा, ''हम त्योहारी मौसम की तरफ बढ़ रहे हैं, ऐसे में आगामी हफ्तों में उपभोक्ता मांग में तेजी आने की उम्मीद है।'' सुजुकी मोटरसाइकिल इंडिया प्राइवेट लिमिटेड ने कहा कि सितंबर में उसकी कुल बिक्री 27.55 फीसदी बढ़कर 86,750 इकाई रही है। कंपनी ने बताया कि सितंबर 2021 में उसके 68,012 वाहन बिके थे। घरेलू स्तर पर कंपनी ने सितंबर में 2022 में 72,012 इकाइयां बेचीं जबकि 14,738 इकाइयों का निर्यात किया। सुजुकी मोटर ने एक बयान में कहा, ''2006 में कारोबार शुरू करने के बाद से यह कंपनी की सर्वाधिक मासिक बिक्री के साथ सर्वाधिक घरेलू मासिक बिक्री भी है।'' कंपनी के प्रबंध निदेशक सातोशी उचिदा ने कहा, ''देश में त्योहारों का मौसम शुरू हो चुका है।

गोधन न्याय योजना क्या है, किसानों को इसका लाभ कैसे मिलेगा

एजेंसी

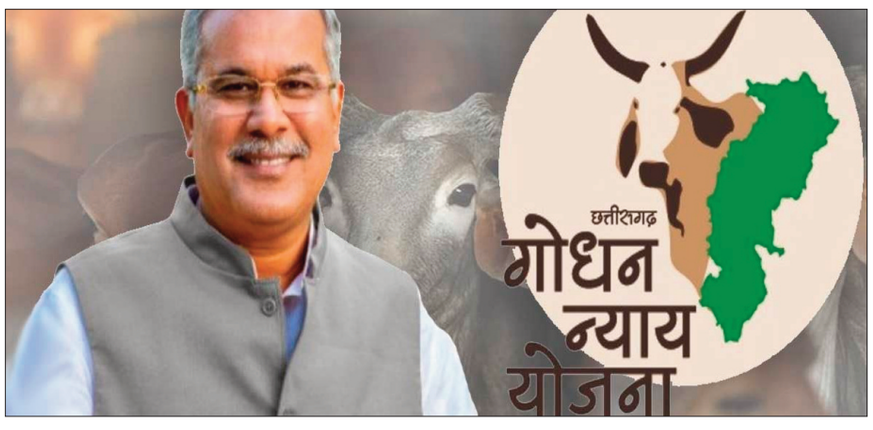

हमारे देश में जरूरतमंद लोगों को सुविधाएं मुहैया कराने के लिए भारत सरकार उनकी मदद के लिए तरह-तरह की योजनाएं चलाती रही है। उनका सीधा उद्देश्य गरीब तबके और जरूरतमंद लोगों तक योजनाओं के लाभ को पहुंचाना है। ऐसी कई योजनाएं राज्य सरकारों द्वारा अपने-अपने राज्यों में भी चलाई जाती हैं। कहीं मुफ्त राशन योजना, किसी राज्य में बच्चों या बेटियों के लिए कोई योजना और ज्यादातर राज्यों में तो वृद्धावस्था पेंशन योजना भी चलाई जाती है। ऐसी ही एक योजना छत्तीसगढ़ में भी चलाई जा रही है, जिसका सीधा लाभ उन किसानों को दिया जा रहा है जो पशुपालन करते हैं। सरकार इस योजना के तहत किसानों से गाय का गोबर खरीदती है और इससे किसानों को आर्थिक मदद मिलती है। यानी गाय का गोबर बर्बाद नहीं होता है और किसानों को उसका उचित मूल्य मिलता है।

गोधन न्याय योजना क्या है?

छत्तीसगढ़ के पशुपालकों को लाभ पहुंचाने के लिए छत्तीसगढ़ में गोधन न्याय योजना चलाई जा रही है। मुख्यमंत्री गोधन न्याय योजना के तहत राज्य सरकार पशुपालन करने वाले किसानों से गाय का गोबर खरीदेगी। इस योजना के तहत सरकार पशुपालन से खरीदे गए गोबर का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने में करेगी। इस योजना के माध्यम से छत्तीसगढ़ सरकार गायों के लिए भी काम कर रही है।

गोधन न्याय योजना का उद्देश्य

जुलाई 2020 में शुरू की गई GNY योजना के अनुसार, खरीदे गए गाय के गोबर से वर्मीकम्पोस्ट और अन्य उत्पाद तैयार करने के लिए स्वयं सहायता समूहों (SHG) को शामिल किया जाना था। दावा किया गया कि गोबर की खरीद और इसे वर्मीकम्पोस्ट में बदलने से राज्य में जैविक खेती को बढ़ावा मिलेगा और पशुपालकों को इसका लाभ मिलेगा। शुरुआत में वर्मीकम्पोस्ट की कीमत आठ रुपये प्रति किलो तय की गई थी। लेकिन बाद में इसे बढ़ाकर रु10 और फिर रु 12 प्रति किलो कर दी गयी, जिसकी छत्तीसगढ़ सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी ने पुष्टि की। योजना के तहत फरवरी, 2021 तक राज्य भर में कुल 40.359 लाख (4.03 मिलियन) क्विंटल गोबर की खरीद की गई थी। उम्मीद के विपरीत प्रदेश भर में खरीदे गए 40.359 लाख क्विंटल गोबर में से कुछ ही मात्रा में गोबर का उपयोग वर्मी कम्पोस्ट बनाने के लिए किया गया। यदि पूरे गोबर का उपयोग किया जाता तो राज्य भर में लगभग 20 लाख क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट तैयार हो जाता, लेकिन राज्य के कृषि मंत्री के अनुसार प्रदेश भर में लगभग 95,680 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट ही तैयार हुआ है। कुल तैयार वर्मीकम्पोस्ट में से आधे से भी कम किसानों को बेचा गया। सरकार किसानों से जो गोबर खरीदती है, उसका इस्तेमाल वर्मीकम्पोस्ट खाद बनाने में होता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जहां पिछले साल तक सरकार किसानों से 100 करोड़ रुपये तक का गोबर खरीद चुकी है, वहीं 50 लाख टन गोबर किसानों और गौशालाओं से खरीदा गया है।

दो रुपये प्रति किलो की दर से खरीदा जाएगा गोबर

एक रिपोर्ट के अनुसार छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा गोधन न्याय योजना के माध्यम से पहली बार 21 जुलाई 2020 को गोबर की खरीद शुरू की गई थी। इसके तहत सरकार अब तक एक सौ करोड़ रुपये मूल्य का गोबर खरीद चुकी है। गोबर की मात्रा की बात करें तो अब तक सरकार 50 लाख टन गोबर किसानों और गौशालाओं से खरीद चुकी है। इस योजना का सीधा लाभ राज्य के पशुपालकों को मिलेगा। योजना का लाभ लेने के इच्छुक किसानों को पहले छत्तीसगढ़ गोधन न्याय योजना के तहत आवेदन करना होगा। पहले चरण में 2240 गौशालाओं को जोड़ा जाएगा, फिर 2800 गौशालाओं के निर्माण के बाद कुछ दिनों में दूसरे चरण में गाय का गोबर भी खरीदा जाएगा। इस योजना के तहत छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा गाय का गोबर 2 रुपये प्रति किग्रा. की दर से खरीदा जाएगा। अगर किसी किसान के पास तीन या चार मवेशी हैं तो वह आसानी से 1500 रुपये प्रतिमाह कमा सकता है। अगर आपको पीएम किसान योजना के तहत सालाना 6000 रुपये मिलते हैं, तो गोधन न्याय योजना के तहत सालाना 12,000 रुपये मिलेंगे। केंद्र सरकार की प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि या पीएम किसान योजना के तहत देश भर के किसानों को तीन समान किश्तों में सालाना 6000 रुपये मिलते हैं।गोधन न्याय योजना सहित प्रदेश के गौठानों में मशरूम उत्पादन, मुर्गी उत्पादन, मछली पालन, बकरी पालन, चावल मिल, कोदो-कुटकी और लाख प्रसंस्करण जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से हजारों लोगों को रोजगार मिला है। गौठानों में महिला स्वयं सहायता ने करीब 6 लाख क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन किया है।

रशिया के खिलाफ अमेरिका की कूटनीति चाल का इंडिया ने निकाला ये समाधान

यूएनएससी में रूस के साथ भारत ने फिर निभाई दोस्ती!

एजेंसी

भारत की विदेश नीति केवल राष्ट्रीय हित के बारे में सोचती हैं। भारत और रूस के संबंध दशकों पुराने हैं। वहीं अमेरिका के साथ भी भारत एक अच्छा रिश्ता साझा करता हैं। वहीं दूसरी तरफ रूस और अमेरिका के बीच चाहें जितनी भी दुश्मनी क्यों न हो उसका कोई असर भारत और रूस, भारत और अमेरिका के रिश्तों पर नहीं पड़ता हैं।

जब भी बात टकराव या समर्थन की आती हैं तो भारत उस मंच पर भाग ही नहीं लेता जहां अमेरिका या रूस में से किसी एक को चुनना पड़े। शायद इसी वजह से भारत का कद दुनियाभर में दिन प्रति दिन बढ़ता जा रहा हैं। एक बार फिर से रूस और अमेरिका सहित यूरोप के देश के बीच टकराव की स्थिति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में देखने को मिली जहां अमेकिरा सहित यूरोप के देश रूस के यूक्रेन पर अवैध कब्जे को लेकर एर मसौदा प्रस्ताव पेश किया गया था। इस मसौदे प्रस्ताव में कहा गया था कि रूस ने यूक्रेन के कई हिस्सों पर अवैध कब्जा किया हुआ हैं।

इस प्रस्ताव के खिलाफ रूस ने वीटो का प्रयोग किया और उसे खारिज कर दिया। इस दौरान 10 देशों ने यूरोप का समर्थन किया। भारत ने इस पूरी प्रक्रिया के शामिल नहीं होने चाहता था क्योंकि भारत रूस के साथ भी अपने अच्छे संबंध साझा करता हैं। भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में अमेरिका एवं अल्बानिया द्वारा पेश किए गए उस मसौदा प्रस्ताव पर

मतदान से दूर रहा, जिसमें रूस के ''अवैध जनमत संग्रह'' और यूक्रेनी क्षेत्रों पर उसके कब्जे की निंदा की गई है। इस प्रस्ताव में मांग की गई थी कि रूस यूक्रेन से अपने बलों को तत्काल वापस बुलाए। परिषद के 15 देशों को इस प्रस्ताव पर मतदान करना था, लेकिन रूस ने इसके खिलाफ वीटो का इस्तेमाल किया, जिसके कारण प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। इस प्रस्ताव के समर्थन में 10 देशों ने मतदान किया और चार देश मतदान में शामिल नहीं हुए। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस ने कहा कि धमकी या बल प्रयोग से किसी देश द्वारा किसी अन्य देश के क्षेत्र पर कब्जा करना संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतरराष्ट्रीय कानून के सिद्धांतों का उल्लंघन है। मतदान के बाद परिषद को संबोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने कहा कि यूक्रेन में हाल के घटनाक्रम से भारत बहुत चिंतित है और उसने हमेशा इस बात की वकालत की है कि मानव जीवन की कीमत पर कोई समाधान नहीं निकाला जा सकता। उन्होंने मतदान से दूर रहने पर स्पष्टीकरण देते हुए कहा, ''हम अनुरोध करते हैं कि संबंधित पक्ष तत्काल हिंसा और शत्रुता को खत्म करने के लिए हरसंभव प्रयास करें। मतभेदों तथा विवादों को हल करने का इकलौता जवाब संवाद है, हालांकि इस समय यह कठिन लग सकता है।''भारत ने कहा, ''शांति के मार्ग पर हमें कूटनीति के सभी माध्यम खुले रखने की आवश्यकता है।'' कंबोज ने कहा कि इस संघर्ष की शुरुआत से ही भारत का रुख स्पष्ट रहा है। उन्होंने कहा कि वैश्विक व्यवस्था संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों, अंतरराष्ट्रीय कानून और सभी देशों की संप्रभुत्ता एवं क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान पर टिकी हैं। उन्होंने कहा, ''तनाव बढ़ाना किसी के भी हित में नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि बातचीत की मेज पर लौटने के रास्ते तलाशे जाएं। तेजी से बदल रही स्थिति पर नजर रखते हुए भारत ने इस प्रस्ताव पर दूरी बनाने का फैसला किया है।'' वहीं, संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की राजदूत लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने मतदान से पहले कहा कि रूस के ''बनावटी जनमत संग्रह के नतीजे पूर्व निर्धारित थे।''

उन्होंने कहा, ''हर कोई यह जानता है। रूसी बंदूक की नोंक पर यह कराया गया। बार-बार हमने यूक्रेनी लोगों को अपने देश तथा लोकतंत्र के लिए लड़ते हुए देखा है।'' ग्रीनफील्ड ने कहा कि अगर रूस अपनी जवाबदेही से बचने की कोशिश करता है तो हम मॉस्को को यह अचूक संदेश भेजने के लिए ''महासभा में आगे कदम उठाएंगे'' कि दुनिया अब भी संप्रभुत्ता एवं क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के पक्ष में खड़ी है। रूस के स्थायी प्रतिनिधि वैसिली नेबेंजिया ने मतदान से पहले कहा कि जनमत संग्रह के नतीजे अपने तथा इन क्षेत्रों के निवासियों के लिए बोलते हैं कि वे यूक्रेन में लौटना नहीं चाहते। कंबोज ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन तथा यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के साथ चर्चा में संवाद और कूटनीति की महत्ता को ''स्पष्ट रूप से बताया'' है। गौरतलब है कि भारत पहले भी यूक्रेन पर रूस के आक्रमण को लेकर लाए गए प्रस्तावों पर मतदान से दो बार दूर रहा है।

बुर्किना फासो में नौ महीने में दूसरी बार तख्तापलट, राष्ट्रपति डामिबा सत्ता से बाहर

एजेंसी

बुर्किना फासो में सैनिकों ने शुक्रवार देर रात सरकारी प्रसारणकर्ता को अपने नियंत्रण में ले लिया और सैन्य तख्तापलट कर राष्ट्रपति बने लेफ्टिनेंट कर्नल पॉल हेनरी सैंडाओगो डामिबा को महज नौ महीने बाद ही सत्ता से बेदखल करने की घोषणा की। सैन्य प्रवक्ता ने कहा कि कैप्टन इब्राहिम त्राओरे इस्लामिक चरमपंथ से जूझ रहे पश्चिमी अफ्रीकी देश के नए राष्ट्राध्यक्ष हैं। डामिबा और उनके सहयोगियों ने महज नौ महीने पहले ही लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित राष्ट्रपति को सत्ता से बाहर कर दिया था और वह देश को अधिक सुरक्षित बनाने का वादा करके सत्ता में आए थे। हालांकि, हिंसा का दौर जारी रहा तथा हाल के महीनों में उनके नेतृत्व को लेकर असंतोष की आवाज बुलंद होने लगी थीं। प्रवक्ता कैप्टन किस्वेंदसिदा फारुक अजारिया सोरघो द्वारा शुक्रवार शाम को पढ़े गए बयान में कहा गया है, ''बिगड़ते सुरक्षा हालात के मद्देनजर हमने सुरक्षा मुद्दों पर बदलाव पर ध्यान केंद्रित करने का बार-बार प्रयास किया है।'' सैनिकों ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से वादा किया कि वे अपनी प्रतिबद्धताओं का सम्मान करेंगे। उन्होंने देशवासियों से ''शांति से अपने काम पर ध्यान केंद्रित करने'' का अनुरोध किया। डामिबा बुर्किना फासो के राष्ट्राध्यक्ष के तौर पर न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित कर हाल में लौटे थे। हालांकि, तनाव महीनों से बढ़ रहा है। डामिबा ने अपने भाषण में जनवरी में हुए तख्तापलट का बचाव करते हुए इसे ''देश को बचाए रखने का मुद्दा'' बताया था।

उत्तर कोरिया ने एक सप्ताह में चौथी बार मिसाइल परीक्षण किया

एजेंसी

उत्तर कोरिया ने शनिवार को कम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों का परीक्षण किया। उसके पड़ोसी देशों ने यह जानकारी दी। इस सप्ताह यह चौथी बार है जब उत्तर कोरिया ने हथियारों का परीक्षण किया है, जिसकी उसके विरोधियों ने कड़ी निंदा की है।

दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति यून सुक यियोल ने उत्तर कोरिया के हथियार कार्यक्रम की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि उत्तर कोरिया की परमाणु हथियारों की ''सनक'' उसके अपने लोगों की पीड़ा को बढ़ा रही है तथा उन्होंने ऐसे हथियारों के इस्तेमाल पर दक्षिण कोरिया तथा अमेरिकी सेनाओं की ओर से ''अत्यधिक कड़ी

प्रतिक्रिया'' मिलने को लेकर आगाह किया। यून ने सशस्त्र सेना दिवस समारोह में कहा, ''उत्तर कोरिया ने पिछले 30 वर्ष में अंतरराष्ट्रीय समुदाय की निरंतर आपत्ति के बावजूद परमाणु तथा मिसाइल हथियारों के लिए अपना फितूर नहीं छोड़ा है। परमाणु हथियारों का विकास उत्तर कोरियाई लोगों को और पीड़ा में डाल देगा।'' उन्होंने कहा, ''अगर उत्तर कोरिया परमाणु हथियारों का इस्तेमाल करने की कोशिश करता है तो उसे दक्षिण कोरिया-अमेरिका गठबंधन तथा हमारी सेना की कड़ी प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ेगा।'' यून की टिप्पिणियां उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन को नाराज कर सकती हैं, जिन्होंने आरोप लगाया है कि यून की सरकार का नेतृत्व ''सनकी और गुंडे'' करते हैं। किम ने परमाणु निरस्त्रीकरण के बदले में मदद की यून की पेशकश पहले ही ठुकरा दी है। उत्तर कोरिया ने अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस की दक्षिण कोरिया की यात्रा तथा अमेरिका, दक्षिण कोरिया और जापान के बीच पांच साल में पहला पनडुब्बी रोधी प्रशिक्षण होने के बाद मिसाइल परीक्षण तेज कर दिए हैं। दक्षिण कोरिया, जापान और अमेरिकी सेनाओं ने शनिवार को कहा कि उन्होंने उत्तर कोरिया के दो मिसाइल परीक्षणों का पता लगाया है।

दक्षिण कोरिया तथा जापान की सेनाओं के अनुसार, मिसाइलों ने कोरियाई प्रायद्वीप तथा जापान के बीच समुद्र में गिरने से पहले करीब 350-400 किलोमीटर की दूरी तय की। कुछ पर्यवेक्षकों का कहना है कि उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया तथा अमेरिका की मिसाइल रक्षा प्रणाली को मात देने तथा दक्षिण कोरिया में अमेरिकी सैन्य अड्डों समेत अहम ठिकानों को निशाना बनाने के लिए इस्कंदर जैसी मिसाइलें विकसित की हैं।

फायरफ्लाई एयरोस्पेस नये अल्फा रॉकेट के साथ कक्षा में पहुंचा

एजेंसी

एक नयी एयरोस्पेस कंपनी ने अपने दूसरे प्रयास में सफल रॉकेट प्रक्षेपण के साथ ही पृथ्वी की कक्षा में अपनी पहुंच बना ली और शनिवार को कई छोटे उपग्रहों को उनकी निर्धारित कक्षा में स्थापित किया। फायरफ्लाई एयरोस्पेस के अल्फा रॉकेट ने सुबह के अंधेरे में कैलिफोर्निया के वैंडेनबर्ग वायुसेना अड्डा से उड़ान भरी। फायरफ्लाई ने बाद में ट्वीट किया, ''शत-प्रतिशत मिशन सफल।'' एक दिन पहले, प्रक्षेपण की उल्टी गिनती शून्य तक पहुंचने के बावजूद प्रक्षेपण का प्रयास अचानक विफल हो गया। पहले चरण के इंजन प्रज्वलित हुए, लेकिन रॉकेट की उड़ान स्वतः रुक गयी। फायरफ्लाई ने इसके लिए रॉकेट की विद्युत प्रणाली में आई समस्या को जिम्मेदार ठहराया है। रॉकेट के पेलोड में कई छोटे उपग्रह मौजूद थे, जिन्हें विभिन्न प्रकार के प्रौद्योगिकी प्रयोगों और प्रदर्शनों के साथ-साथ शैक्षिक उद्देश्यों के लिए डिजाइन किया गया था। 'टू द ब्लैक' नामक यह मिशनछोटे उपग्रह प्रक्षेपण बाजार में प्रवेश के लिए कंपनी की दूसरी प्रदर्शन उड़ान थी। पहले अल्फा को दो सितंबर, 2021 को वैंडेनबर्ग से प्रक्षेपित किया गया था, लेकिन वह कक्षा में नहीं पहुंच सका था। पहले चरण के चार इंजनों में से एक इंजन समय से पहले बंद हो गया, लेकिनतीन इंजनों की वजह से ऊपर की ओर सुपरसोनिक क्षेत्र में चला गया, जहां यह नियंत्रण से बाहर हो गया था। रॉकेट को तब जानबूझकर एक विस्फोटक उड़ान समाप्ति प्रणाली द्वारा नष्ट कर दिया गया था।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार संगठन में चीन, रूस को लेकर पश्चिमी देशों की कड़ी परीक्षा

एजेंसी

जिनेवा। पश्चिमी देश संयुक्त राष्ट्र के मुख्य मानवाधिकार निकाय में दो बड़ी विश्व शक्तियों-चीन और रूस के मानवाधिकार रिकॉर्ड की पड़ताल को लेकर दोहरी चुनौतियों से गुजर रहे हैं। चीन पर जहां चरमपंथ विरोधी अभियान के दौरान पश्चिमी झिंजियांग में मानवाधिकार उल्लंघन करने के आरोप हैं, वहीं यूक्रेन में युद्ध का विरोध कर रहे प्रदर्शनकारियों पर रूस सरकार की कार्रवाई भी पड़ताल के दायरे में है। राजनयिकों और मानवाधिकारों के पैरोकारों का कहना है कि संयुक्त राष्ट्र के ऐसे दो प्रभावशाली सदस्यों के खिलाफ जाना कोई छोटा राजनीतिक लक्ष्य नहीं होगा, जो सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्यों में शामिल हैं। यह लोकतांत्रिक

और अधिक निरंकुश देशों के बीच बढ़ती खाई की गवाही देता है और भू-राजनीतिक दबदबे के एक दांव के रूप में आकार ले रहा है, जिसका परिणाम जिनेवा सम्मेलन कक्ष से परे प्रतिध्वनित होगा। जिनेवा में मानवाधिकार परिषद की बैठक होनी है। ब्रिटेन, कनाडा, अमेरिका और पांच नॉर्डिक देश झिंजियांग में उइगर और अन्य मुस्लिम जातीय समूहों के मानवाधिकारों के उल्लंघन को लेकर मार्च में अपने अगले सत्र में चर्चा पर सहमत होने के लिए परिषद के सदस्यों का आह्वान कर रहे हैं। उनका उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार प्रमुख की 31 अगस्त की उस रिपोर्ट को गति देना है, जिसमें इस क्षेत्र में चरमपंथ विरोधी अभियान के दौरान मानवता के खिलाफ चीन के कथित अपराधों को लेकर चिंता जताई गई थी।

रूस के ''अवैध जनमत संग्रह'' पर संयुक्त राष्ट्र में लाए प्रस्ताव पर भारत ने बनायी दूरी

एजेंसी

भारत शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में अमेरिका एवं अल्बानिया द्वारा पेश किए गए उस मसौदा प्रस्ताव पर मतदान से दूर रहा, जिसमें रूस के ''अवैध जनमत संग्रह'' और यूक्रेनी क्षेत्रों पर उसके कब्जे की निंदा की गई है। इस प्रस्ताव में मांग की गई थी कि रूस यूक्रेन से अपने बलों को तत्काल वापस बुलाए। परिषद के 15 देशों को इस प्रस्ताव पर मतदान करना था, लेकिन रूस ने इसके खिलाफ वीटो का इस्तेमाल किया, जिसके कारण प्रस्ताव पारित नहीं हो सका। इस प्रस्ताव के समर्थन में 10

देशों ने मतदान किया और चार देश चीन, गाबोन, भारत तथा ब्राजील मतदान में शामिल नहीं हुए। इससे पहले रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन के दोनेत्स्क, लुहांस्क, खेरसॉन और जोपोरिज्जिया क्षेत्रों पर कब्जा जमाने की शुक्रवार को घोषणा की थी। मतदान के बाद परिषद को संबोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने कहा कि यूक्रेन में हाल के घटनाक्रम से भारत बहुत चिंतित है और उसने हमेशा इस बात की वकालत की है कि मानव जीवन की कीमत पर कोई समाधान नहीं निकाला जा सकता। उन्होंने मतदान से दूर रहने पर स्पष्टीकरण देते हुए कहा, ''हम अनुरोध करते हैं कि संबंधित पक्ष तत्काल हिंसा और शत्रुता को खत्म करने के लिए हरसंभव प्रयास करें। मतभेदों तथा विवादों को हल करने का इकलौता जवाब संवाद है, हालांकि इस समय यह कठिन लग सकता है।'' भारत ने कहा, ''शांति के मार्ग पर हमें कूटनीति के सभी माध्यम खुले रखने की आवश्यकता है।'' कंबोज ने कहा कि इस संघर्ष की शुरुआत से ही भारत का रुख स्पष्ट रहा है। उन्होंने कहा कि वैश्विक व्यवस्था संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों, अंतरराष्ट्रीय कानून और सभी देशों की संप्रभुत्ता एवं क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान पर टिकी हैं। उन्होंने कहा, ''तनाव बढ़ाना किसी के भी हित में नहीं है। यह महत्वपूर्ण है कि बातचीत की मेज पर लौटने के रास्ते तलाशे जाएं। तेजी से बदल रही स्थिति पर नजर रखते हुए भारत ने इस प्रस्ताव पर दूरी बनाने का फैसला किया है।'' वहीं, संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की राजदूत लिंडा थॉमस-ग्रीनफील्ड ने मतदान से पहले कहा कि रूस के ''बनावटी जनमत संग्रह के नतीजे पूर्व निर्धारित थे।''

जंग और परमाणु आपदा के बीच आया नोबेल पुरस्कारों का दौर

एजेंसी

यूक्रेन पर रूस के हमले से यूरोप में दशकों तक रही लगभग निर्बाध शांति की स्थिति के बिगड़ने और परमाणु आपदा का खतरा पैदा होने के बीच इस साल के नोबेल पुरस्कारों की घोषणा का समय आ गया है। नोबेल पुरस्कार की चयन समिति कभी इस तरफ इशारा नहीं करती कि चिकित्सा, भौतिकी, रसायन, साहित्य, अर्थशास्त्र और शांति के क्षेत्र में किसे यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। लोग केवल अनुमान लगाते हैं। सोमवार से पुरस्कारों की घोषणा शुरू हो सकती है। दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार पर लोगों का ध्यान जाने के यूं तो अनेक कारण हैं, लेकिन इस बार यूक्रेन और इथियोपिया में युद्ध, ऊर्जा और खाद्य पदार्थों की आपूर्ति में व्यवधान, बढ़ती असमानता, जलवायु संकट और कोविड-19 महामारी की वजह से जारी समस्याएं प्रमुख हैं। यूरोपीय संसद के सदस्यों ने इस साल नोबेल शांति पुरस्कार समिति द्वारा यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और यूक्रेन की जनता के लिए इस पुरस्कार की सिफारिश किये जाने की वकालत की। रूस के हमले के खिलाफ उनके प्रतिरोध के लिए ऐसा किया जा रहा है। स्टाकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक डैन स्मिथ ने कहा कि इस तरह की आकांक्षाओं को समझा जा सकता है लेकिन इसकी संभावना कम नजर आती है क्योंकि नोबेल समिति का ऐसे लोगों को सम्मानित करने का इतिहास रहा है जो संघर्षों को समाप्त करते हैं, न कि

युद्धकालीन नेताओं को सम्मानित करने का। स्मिथ मानते हैं कि नोबेल शांति पुरस्कार के दावेदारों में जलवायु परिवर्तन से लड़ने वाला कोई व्यक्ति या समूह या अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) हो सकती है। स्मिथ ने कहा कि आईएईए को सम्मानित करना एक बार फिर यूक्रेन में रूस के कब्जे वाले जापोरिज्जिया परमाणु ऊर्जा संयंत्र में किसी रेडियोधर्मी विकिरण की आपदा को रोकने के प्रयासों और परमाणु प्रसार से लड़ने में उसके काम को रेखांकित करेगा। उन्होंने कहा, ''वैश्विक इतिहास में यह वाकई मुश्किल समय है और शांति की अच्छी स्थिति नहीं बन रही।'' नोबेल शांति पुरस्कार के लिए हमेशा शांति को बढ़ावा देने के कार्यों को ही नहीं चुना जाता। बीसवीं सदी में अहिंसा के प्रतीक रहे महात्मा गांधी को कभी यह सम्मान नहीं मिला। इथियोपिआई प्रधानमंत्री अबीय अहमद को 2019 में पड़ोसी देश एरिट्रिया के साथ शांति के लिए नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया था। एक साल बाद ही देश के तिगरे क्षेत्र में बड़े स्तर पर जातीय संघर्ष भड़क गये थे। कुछ लोग अबीय पर तनाव बढ़ाने का आरोप लगाते हैं जिसकी वजह से अत्याचार हुए। आलोचकों ने यह भी मांग की कि उनके नोबेल पुरस्कार को वापस लिया जाना चाहिए। म्यांमा की कार्यकर्ता आंग सान सूची को 1991 में शांति पुरस्कार से नवाजा गया। उस समय वह सैन्य शासन का विरोध करने के कारण घर में नजरबंद थीं। कुछ दशक बाद वह देश के मुस्लिम रोहिंग्या अल्पसंख्यकों के खिलाफ सेना के अत्याचारों को रोकने में नेतृत्व की भूमिका नहीं निभाती दिखीं। महात्मा गांधी की हत्या 1948 में की गयी थी और उसी साल नॉर्वे की नोबेल समिति ने श्रेष्ठ जीवित उम्मीदवार नहीं होने का हवाला देते हुए कोई पुरस्कार नहीं दिया। पिछले साल फिलीपीन की पत्रकार मारिया रेसा और रूस के दमित्री मुरातोव को अधिपत्यवादी सरकारों के दौर में ''अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए साहसपूर्ण लड़ाई के लिए'' यह सम्मान दिया गया। साल 2022 के लिए नोबेल शांति पुरस्कार की घोषणा सात अक्टूबर को होगी और अर्थशास्त्र के लिए इसके विजेता का नाम 10 अक्टूबर को घोषित किया जाएगा।

इमरान खान के खिलाफ वारंट जारी, कभी भी हो सकती है गिरफ्तारी

एजेंसी

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान के खिलाफ अरेस्ट वारंट जारी किया गया है। मारगल्ला थाने के एरिया मजिस्ट्रेट ने पूर्व प्रधानमंत्री के खिलाफ ये अरेस्ट वॉरेंट जारी किया है। स्थानीय मीडिया के अनुसार इस्लामाबाद के मजिस्ट्रेट ने पूर्व प्रधान मंत्री और पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ प्रमुख इमरान खान के खिलाफ महिला न्यायाधीश के खिलाफ उनकी विवादास्पद टिप्पणी को लेकर गिरफ्तारी वारंट जारी किया। जियो न्यूज की रिपोर्ट के मुताबिकइस्लामाबाद के मारगल्ला पुलिस स्टेशन के मजिस्ट्रेट ने पीटीआई प्रमुख के खिलाफ 20 अगस्त को दर्ज मामले में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश जेबा चौधरी को धमकाने के मामले में वारंट जारी किया। प्राथमिकी में पाकिस्तान दंड संहिता (पीपीसी) की चार धाराएँ शामिल हैं, जिनमें 506 (आपराधिक धमकी के लिए सजा), 504 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान), 189 (लोक सेवक को चोट की धमकी) और 188 (लोक सेवक द्वारा विधिवत प्रख्यापित आदेश की अवज्ञा) शामिल हैं। यह गिरफ्तारी वारंट इमरान खान द्वारा हलफनामा प्रस्तुत करने के कुछ घंटों के भीतर आया, जिसमें कहा गया था कि उन्होंने महसूस किया था कि 20 अगस्त को राजधानी में एक सार्वजनिक रैली में ₹इमरान ने सीमा पार कर ली थी। इमरान खान ने न्यायाधीश जेबा चौधरी के लिए कहा था कि उन्हें खुद को तैयार करना चाहिए।

पीएम ने 36वें नेशनल गेम्स का किया शुभारंभ

एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने गुजरात दौरे के दौरान आज 36वें नेशनल गेम्स का शुभारंभ किया। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में प्रधानमंत्री ने राष्ट्र भक्ति गीतों के बीच पुरे स्टेडियम का मुआयना किया। इस अवसर पर शंकर महादेवन जैसे कलाकार ने अपनी प्रस्तुति भी दी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस अवसर पर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन भी किया।

नरेंद्र मोदी स्टेडियम पूरी तरीके से खचाखच भरा हुआ था। दर्शकों का जबरदस्त तरीके से शोर था। दर्शकों में उत्साह देखने को मिल रहा था। खेल प्रेमी जबरदस्त तरीके से झूम रहे थे। इस अवसर पर विश्व का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम दूधिया रोशनी से नहाया हुआ था। इस दौरान नीरज चोपड़ा भी मौजूद रहे जिन्होंने ओलंपिक में भारत का नाम रोशन किया था। आपको बता दें कि देश के 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश के साथ हजार से ज्यादा खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं। मोदी ने कहा कि विश्व का सबसे बड़ा स्टेडियम, विश्व का इतना युवा देश, और देश का सबसे बड़ा खेल उत्सव, जब आयोजन इतना अद्भुत और अद्वितीय हो, तो उसकी ऊर्जा ऐसी ही असाधारण होगी। दुनिया का सबसे बड़ा स्टेडियम सबसे कम उम्र की आबादी वाले देश के लिए सबसे बड़े खेल आयोजन की मेजबानी कर रहा है। मोदी ने कहा कि खेल के मैदान में खिलाड़ियों की जीत और उनका दमदार प्रदर्शन, अन्य क्षेत्रों में देश की जीत का भी रास्ता बनाता है। स्पोर्ट्स की सॉफ्ट पावर, देश की पहचान और देश की छवि को कई गुना ज्यादा बेहतर बना देती है। राष्ट्रीय खेलों का मंच युवाओं के लिये नया लांचिंग पैड

का काम करेगा। उन्होंने कहा कि ये गुजरात का सामर्थ्य है, यहां के लोगों का सामर्थ्य है। कल अहमदाबाद में जिस तरह का शानदार, भव्य ड्रोन शो हुआ, वो देखकर तो हर कोई अचंभित है, गर्व से भरा हुआ है। टेक्नोलॉजी का ऐसा सधा हुआ इस्तेमाल, ड्रोन की तरह ही गुजरात को, भारत को नई ऊंचाई पर ले जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरदार पटेल स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में फुटबाल, हॉकी, बास्केटबॉल, कबड्डी, बॉक्सिंग और लॉन टेनिस जैसे अनेकों खेलों की सुविधा एक साथ उपलब्ध है। ये एक तरह से पूरे देश के लिए एक मॉडल है। उन्होंने कहा कि इस समय नवरात्रि का पावन अवसर भी चल रहा है। गुजरात में मां दुर्गा की उपासना से लेकर गरबा तक, यहां की अपनी अलग ही पहचान है। जो खिलाड़ी दूसरे राज्यों से आए हैं, उनसे कहूंगा कि खेल के साथ ही यहां नवरात्रि आयोजन का भी आनंद जरूर लीजिये। उन्होंने कहा कि 'सक्सेस स्टार्ट विथ एक्शन' आपको सफलता के लिए लड़ना, जूझना पड़ सकता है। अगर आपने दौड़ने का जज्बा नहीं छोड़ा है तो आप मानते चलिए जीत आपकी ओर बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि मैं स्पोर्ट्स के साथियों को अक्सर कहता हूँ- Success starts with action! यानी, आपने जिस क्षण शुरुआत कर दी, उसी क्षण सफलता की शुरुआत भी हो गई।

आज हमारे युवा हर खेल में नए रिकॉर्ड बना रहे हैं और अपने ही रिकॉर्ड ब्रेक भी करते जा रहे हैं। मोदी ने कहा कि 2014 में देश में 'फर्स्ट एंड बेस्ट' का सिलसिला शुरू हुआ था। हमारे युवाओं ने इसे खेलों में भी आगे बढ़ाया।पहले भारत के खिलाड़ी 20-25 खेलों को खेलने ही जाते थे। अब भारत के खिलाड़ी करीब 40 अलग-अलग खेलों में हिस्सा लेने जाते हैं। 8 साल पहले तक भारत के खिलाड़ी, सौ से भी कम इंटरनेशनल इवेंट्स में हिस्सा लेते थे। अब भारत के खिलाड़ी 300 से भी ज्यादा इंटरनेशनल इवेंट्स में शामिल होते हैं। कोरोना के कठिन समय में भी देश ने अपने खिलाड़ियों का मनोबल कम नहीं होने दिया और हमने खेलभावना के साथ खेल के लिये काम किया। उन्होंने कहा कि हमने स्पोर्ट्स स्पिरिट के साथ स्पोर्ट्स के लिए काम किया। TOPS जैसी योजनाओं के जरिए वर्षों तक मिशन मोड में तैयारी की। आज बड़े-बड़े खिलाड़ियों की सफलता से लेकर नए खिलाड़ियों के भविष्य निर्माण तक, TOPS एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। सभी खिलाड़ियों को मैं एक मंत्र और देना चाहता हूं...अगर आपको competition जीतना है, तो आपको commitment और continuity को जीना सीखना होगा।

विश्व कप हॉकी में भारत का स्पेन के खिलाफ पहला मैच 13 जनवरी को

एजेंसी

मेजबान भारत पुरुष विश्वकप हॉकी में अपना शुरुआती मैच प्रतियोगिता के पहले दिन 13 जनवरी को अपने से कम रैंकिंग के स्पेन के खिलाफ नवनिर्मित बिरसा मुंडा अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम, राउरकेला में खेलेगा। विश्व रैंकिंग में पांचवे नंबर पर काबिज तोक्यो ओलंपिक के कांस्य पदक विजेता भारत को इंग्लैंड (विश्व रैंकिंग छह), स्पेन (विश्व रैंकिंग आठ) और वेल्स (विश्व रैंकिंग 16) के साथ पूल डी में रखा गया है। भारत अपना दूसरा मैच राउरकेला में ही 15 जनवरी को इंग्लैंड के खिलाफ खेलेगा और इसके बाद वह भुवनेश्वर में 19 जनवरी को वेल्स का सामना करेगा। अगले साल के शुरू में भारत में होने वाले विश्वकप हॉकी के मंगलवार को जारी कार्यक्रम के अनुसार पहले दिन चार मैच खेले जाएंगे। इनमें भारत और स्पेन के अलावा रियो 2016 ओलंपिक चैंपियन अर्जेंटीना का सामना दक्षिण अफ्रीका से जबकि विश्व के नंबर एक ऑस्ट्रेलिया का फ्रांस से होगा। ये दोनों मैच भुवनेश्वर के कलिंग स्टेडियम में खेले जाएंगे। इसके बाद राउरकेला में दो मैच खेले जाएंगे जिसमें पहला मैच इंग्लैंड और वेल्स के बीच होगा जबकि दूसरे मैच में शाम सात बजे से भारत और स्पेन आमने-सामने होंगे। ओडिशा में ही 2018 में खेले गए विश्व कप में चैंपियन बनने वालh विश्व की नंबर दो टीम बेल्जियम 14 जनवरी को दक्षिण कोरिया के खिलाफ भुवनेश्वर में अपने अभियान की शुरुआत करेगी। इसी दिन पूर्व चैंपियन नीदरलैंड का सामना राउरकेला में मलेशिया से होगा। पिछली बार कांस्य पदक जीतने वाला ऑस्ट्रेलिया पूल ए में है।

स्ट्राइकर वंदना कटारिया ने कहा, हम सही प्रगति कर रहे हैं

एजेंसी

भारतीय महिला हॉकी टीम की स्टार स्ट्राइकर वंदना कटारिया का मानना है की टीम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सही प्रगति कर रही है और खिलाड़ियों का ध्यान लक्ष्य तय करने और उन्हें हासिल करने पर लगा हुआ है। भारत की तरफ से 250 से अधिक अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाली वंदना ने कहा की विभिन्न प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन के कारण अब विश्व में भारतीय महिला हॉकी को पहचान मिलने लग गई है। भारतीय टीम में सुधार का सबूत एफआईएच (अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ) स्टार अवार्ड्स के लिए कई खिलाड़ियों का नामांकन है। भारतीय कप्तान सविता को जहां वर्ष की सर्वश्रेष्ठ गोलकीपर के लिए नामित किया गया है वहीं मुमताज खान को वर्ष की उदीयमान स्टार और मुख्य कोच यानिक शॉपमैन को वर्ष के कोच पुरस्कार के लिए नामित किया गया है। वंदना ने यहां जारी विज्ञप्ति में कहा,'' मेरा मानना है कि हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। तीन या चार साल पहले टीम बमुश्किल किसी पुरस्कार के लिए नामित हो पाती थी क्योंकि हमारा प्रदर्शन स्तरीय नहीं था। लेकिन अब हम अंतरराष्ट्रीय हॉकी में सही प्रगति कर रहे हैं और हमारे प्रदर्शन को पहचान मिल रही है।'' उन्होंने कहा,'' इस तरह की पहचान मिलने से बहुत अच्छा लगता है जिससे पता चलता है कि हमारा प्रदर्शन दुनिया की शीर्ष टीम के बराबरी पर है लेकिन अभी हमें पांव जमीन पर रखकर अपने लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित रखना चाहिए।''

'पोल वॉल्टर' रॉसी मीना और भारोत्तोलक अजीत राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाकर चमके

एजेंसी

तमिलनाडु की 'पोल वॉल्टर' रॉसी मीना पॉलराज और उनके ही राज्य के भारोत्तोलक एन अजीत (73 किग्रा) ने शनिवार को यहां राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए 36वें राष्ट्रीय खेलों में स्वर्ण पदक जीतकर सुर्खियां बटोरीं। रॉसी मीना पॉलराज (24 साल) उम्मीद के उलट एथलेटिक्स स्पर्धा की स्टार रहीं। उन्होंने राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए 4.20 मीटर से स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने इस तरह वीएस सुरेखा के 2014 में बनाये गये 4.15 मीटर के राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया। तमिलनाडु की उनकी दो साथी पविता वेंगाटेश (चार मीटर) और बारानिका इलांगोवान (3.90 मीटर) ने क्रमशः

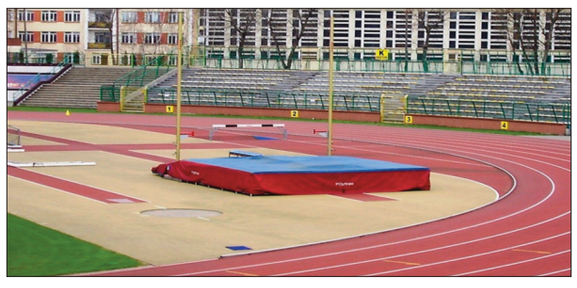

दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। अजीत ने पुरूषों के 73 किग्रा वर्ग में क्लीन एवं जर्क में 174 किग्रा का भार उठाकर रिकॉर्ड तोड़ा और अचिंता शेयुली के पहले के 173 किग्रा के रिकॉर्ड को पछाड़ दिया। अजीत ने कुल 315 किग्रा (स्नैच 141, क्लीन एवं जर्क 174) का वजन उठाकर स्वर्ण पदक जीता। बर्मिंघम राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता सेना के अचिंता ने 295 किग्रा वजन से रजत और केरल के बी देवाप्रीधन ने 290 किग्रा के वजन से कांस्य पदक प्राप्त किया। लंबी कूद स्पर्धा में तमिलनाडु के जेसविन एलड्रिन ने केरल के राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता मुरली श्रीशंकर को पछाड़कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया और 2023 विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के लिये क्वालीफाई किया। एलड्रिन ने अपने छठे और अंतिम प्रयास में 8.26 मीटर की कूद लगायी और विश्व चैम्पियनशिप के 8.25 मीटर के 'क्वालीफाइंग मार्क' को पार किया। उन्होंने दो अन्य प्रयासों में भी आठ मीटर से ज्यादा (8.07 मीटर और 8.21 मीटर) की कूद लगायी। अगस्त में बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों का रजत पदक जीतने वाले श्रीशंकर की सर्वश्रेष्ठ कूद 7.93 मीटर की रही जो उनके पहले प्रयास में आयी थी। उन्होंने 7.55 मीटर की एक और कूद लगाने के बाद बाकी चार प्रयास नहीं करने का फैसला किया।

चेन्नइयिन एफसी से आईएसएल के नौवें सत्र के लिए टीम घोषित की

एजेंसी

इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) टीम चेन्नइयिन एफसी ने आगामी सत्र लिए कप्तान अनिरुध थापा की अगुवाई में 35 सदस्यीय टीम की शुक्रवार को घोषणा की जिसमें नासिर अल खयाती टीम के सातवें विदेशी है।

कोच थॉमस ब्रॉडरिक टीम के डूरंड कप अभियान से सीख लेकर सत्र में मजबूत वापसी करना चाहेंगे। टीम में खयाती ने मिड फिल्डर राफेल क्रिवेलारो की जगह ली। खयाती नीदरलैंड की शीर्ष लीग में इस तरह की भूमिका निभा चुके है। वह टीम के उपकप्तान हैं। खयाती के अलावा टीम में सेनेगल के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी फालो डायग्ने, ईरान के डिफेंडर वफा हखमनेशी, जर्मनी के मिडफील्डर जूलियस डुकर और अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ी क्वामे करिकरी (घाना) और पेटार स्लीस्कोविच (क्रोएशिया) विदेशी खिलाड़ी हैं। दो बार की चैम्पियन चेन्नइयिन ने टीम में कई नये भारतीय खिलाड़ियों को शामिल किया है जिसमें अनुभव के साथ युवा खिलाड़ियों को शामिल को तरजीह दी गयी है। चेन्नइयिन की टीम 10 अक्टूबर को एटीके मोहन बागान के खिलाफ अपने अभियान को शुरू करेगी। चेन्नइयिन एफसी टीमः गोलकीपरः देबजीत मजूमदार, समिक मित्रा, देवांश डबास, लवप्रीत सिंह। डिफेंडरः नारायण दास, आकाश सांगवान, वफा हखमनेशी, फालो डायग्ने, गुरमुख सिंह, मोहम्मद साजिद धोत, अजित कुमार, मोनोतोश चकलादार, मोहम्मद आकिब। मिडफील्डरः नासिर अल खयाती।

एलड्रिन ने श्रीशंकर को पछाड़कर लंबी कूद का स्वर्ण जीता, अमलान और ज्योति 100 मीटर के चैम्पियन

एजेंसी

तमिलनाडु के जेसविन एलड्रिन ने शनिवार को यहां राष्ट्रीय खेलों में लंबी कूद स्पर्धा में केरल के राष्ट्रमंडल खेलों के रजत पदक विजेता मुरली श्रीशंकर को पछाड़कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया और 2023 विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के लिये क्वालीफाई किया। तमिलनाडु की 'पोल वॉल्टर' रॉसी मीना पॉलराज हालांकि एथलेटिक्स स्पर्धा की स्टार रहीं। उन्होंने राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ते हुए 4.20 मीटर से स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने इस तरह 2014 में बनाये गये वीएस सुरेखा के 4.15 मीटर के राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया। तमिलनाडु की उनकी दो साथी पविता वेंगाटेश (चार मीटर) और बारानिका इलांगोवान (3.90 मीटर) ने क्रमशः दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। पुरुषों की

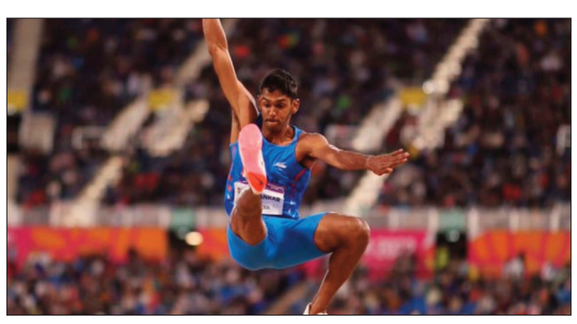

लंबी कूद एलड्रिन ने अपने छठे और अंतिम प्रयास में 8.26 मीटर की कूद लगायी और विश्व चैम्पियनशिप के 8.25 मीटर के 'क्वालीफाइंग मार्क' को पार किया। उन्होंने दो अन्य प्रयासों में भी आठ मीटर से ज्यादा (8.07 मीटर और 8.21 मीटर) की कूद लगायी। अगस्त में बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों का रजत पदक जीतने वाले श्रीशंकर की सर्वश्रेष्ठ कूद 7.93 मीटर की रही जो उनके पहले प्रयास में आयी थी। उन्होंने 7.55 मीटर की एक और कूद लगाने के बाद बाकी चार प्रयास नहीं करने का फैसला किया। एक अन्य लंबी कूद के शीर्ष एथलीट केरल के मोहम्मद अनीस याहिया 7.92 मीटर से तीसरा स्थान हासिल किया। वहीं 100 मीटर की स्पर्धा में असम के अमलान बोरगोहेन ने पुरूषों के वर्गमें जबकि आंध्र प्रदेश की ज्योति याराजी ने महिलाओं के वर्ग का स्वर्ण पदक अपने नाम किया।

भारत ने श्रीलंका को 41 रन से हराया

एजेंसी

जेमिमा रॉड्रिग्स की टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में करियर की सर्वश्रेष्ठ 76 रन की पारी के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से भारत ने शनिवार के यहां महिला एशिया कप के शुरूआती मैच में श्रीलंका के खिलाफ 41 रन से जीत दर्ज की। जेमिमा ने 53 गेंद की अपनी पारी के दौरान 11 चौके और एक छक्का जड़ा जिससे भारत ने बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद छह विकेट पर 150 रन का स्कोर बनाया।

विकेट पर कम उछाल के कारण बल्लेबाजों को रन बनाने में दिक्कत हो रही थी। इसके बाद भारतीय गेंदबाजों ने नियमित अंतराल पर विकेट झटककर श्रीलंका को 18.2 ओवर में 109 रन के अंदर समेट दिया। भारतीय खिलाड़ियों ने सभी तीनों विभागों में श्रीलंकाई टीम से काफी बेहतर प्रदर्शन दिखाया, हालांकि बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद उनकी शुरूआत अच्छी नहीं रही। उप कप्तान स्मृति मंधाना (10 रन) आउट होने वाली पहली खिलाड़ी रहीं जबकि उनकी साथी सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (06 रन) की समस्या कायम रही और वह स्पिनर ओशादी राणासिंघे (32 रन देकर तीन विकेट) का पहला शिकार बनी। कलाई की चोट से वापसी कर रहीं जेमिमा शुरू से ही नियंत्रण बनाये थीं और उन्होंने खूबसूरती से बेहतरीन टाइमिंग से रन जुटाये। वह प्रत्येक ओवर में गेंद को सीमारेखा के पार कराती रहीं और उन्होंने श्रीलंकाई बल्लेबाजी आक्रमण के खिलाफ मैदान के चारों ओर रन बटोरे। जेमिमा ने 38 गेंद में अपना

हरमनप्रीत कौर (30 गेंद में 33 रन) के साथ मिलकर भारत को 100 रन के पार पहुंचाया। इन दोनों ने 71 गेंद में 92 रन बनाये। हरमनप्रीत भी खतरनाक दिख रही थीं जिन्हें 15 ओवर में जीवनदान मिला जब सुगंधिका कुमारी (26 रन देकर एक विकेट) ने उनका कैच छोड़ दिया। हालांकि यह भारतीय इसका फायदा नहीं उठा सकीं और अगले ओवर में राणासिंघे ने उन्हें स्टंप आउट कराया। श्रीलंकाई गेंदबाजों ने अंतिम ओवरों में वापसी करते हुए कई विकेट निकाले। जेमिमा तेजी से रन जुटा रही थीं और वह टी20 अंतरराष्ट्रीय में करियर के अपने पिछले सर्वश्रेष्ठ 72 रन के स्कोर को पीछे छोड़ने में सफल रहीं। पर उनकी शानदार पारी चामरी अटापट्टू (आठ रन देकर एक विकेट) की धीमी और नीची गेंद पर खत्म हुई। दयालन हेमलता ने फिर अंत में नाबाद 13 रन बनाये जबकि ऋचा घोष (09) ने एक छक्का जड़ा। श्रीलंकाई स्पिनरों ने राणासिंघे की अगुआई में अच्छा प्रदर्शन किया। इस लक्ष्य का पीछा करते हुए श्रीलंका ने शानदार शुरूआत की और पहले ही ओवर में तेज गेंदबाज रेणुका सिंह (20 रन देकर कोई विकेट नहीं) पर 13 रन जुटा लिये। लेकिन श्रीलंकाई टीम इस लय को जारी नहीं रख सकी और टीम ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवा दिये। आल राउंडर दीप्ति शर्मा (15 रन देकर दो विकेट) को अनुभवी चामरी अटापट्टू (05 रन) का महत्वपूर्ण विकेट मिला। विकेटों के बीच श्रीलंका का प्रदर्शन काफी खराब रहा जिसका भारतीय टीम ने पूरा फायदा उठाया। दीप्ति ने मेलशा शेहानी (09 रन) के रन आउट किया ।

नेशनल गेम्स में मीराबाई का शानदार प्रदर्शन, संजीता को पछाड़कर 49 किग्रा वर्ग में जीता गोल्ड

एजेंसी

गांधीनगर। ओलंपिक रजत पदक विजेता मीराबाई चानू ने शुक्रवार को यहां 36वें राष्ट्रीय खेलों में महिलाओं की भारोत्तोलन स्पर्धा के 49 किग्रा वर्ग में 191 किलोग्राम भार उठाकर अपेक्षित रूप से स्वर्ण पदक जीता। अगस्त में बर्मिंघम में राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली मीराबाई ने स्नैच में 84 किग्रा और क्लीन एवं जर्क में 107 किग्रा भार उठाकर खिताब अपने नाम किया। अपने दूसरे राष्ट्रीय खेलों में भाग ले रही मीराबाई ने खुलासा किया कि उनकी बाईं कलाई में चोट है इसलिए वह दोनों वर्गों में अपने तीसरे प्रयास के लिए नहीं

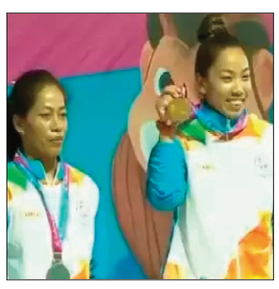

उतरीं। मीराबाई ने कहा, ''हाल ही में एनआईएस पटियाला में प्रशिक्षण के दौरान मेरी बाईं कलाई में चोट लग गई थी जिसके बाद मैंने सुनिश्चित किया कि मैं अधिक जोखिम नहीं लूं। विश्व चैंपियनशिप भी दिसंबर में होनी है।'' उन्होंने कहा, ''राष्ट्रीय खेलों में मणिपुर का प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए गर्व का क्षण है और जब मुझे उद्घाटन समारोह में दल का नेतृत्व करने के लिए कहा गया तो उत्साह दोगुना हो गया। आम तौर पर उद्घाटन समारोह में शामिल होना बहुत व्यस्त होता है क्योंकि मेरी स्पर्धाएं अगले दिन जल्दी शुरू होती हैं लेकिन मुझे लगा कि मुझे इस बार खुद को चुनौती देनी चाहिए।'' अगले साल एशियाई खेलों में पहला पदक जीतने का लक्ष्य रखने वाली मणिपुर की यह खिलाड़ी वर्तमान में रहना पसंद करती हैं और उनका ध्यान विश्व चैंपियनशिप पर केंद्रित है जहां उनका सामना एशिया के बड़े भारोत्तोलकों से होने की उम्मीद है। इस 28 वर्षीय भारोत्तोलन ने कहा, ''हां मेरे पास एशियाई खेलों का पदक नहीं और यह कुछ ऐसा है जो मेरे दिमाग में है। पीठ की चोट के कारण 2018 सत्र से बाहर होने के बाद यह मेरे पहले एशियाई खेल होंगे। एशियाड में प्रतिस्पर्धा का स्तर बहुत अच्छा होगा लेकिन मेरा ध्यान अभी विश्व चैंपियनशिप पर है जहां मुझे उन्हीं भारोत्तोलकों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करने का मौका मिलेगा।'' संजीता चानू ने कुल 187 किग्रा (स्नैच में 82 किग्रा, क्लीन एवं जर्क में 105 किग्रा) वजन उठाकर रजत पदक अपने नाम किया। ओडिशा की स्नेहा सोरेन ने कुल 169 किग्रा (स्नैच में 73 किग्रा, क्लीन एवं जर्क में 96 किग्रा) भार उठाकर कांस्य पदक जीता। स्नैच में मीराबाई ने अपने पहले ही प्रयास में 81 किग्रा वजन उठाकर शुरुआती बढ़त हासिल कर ली। उन्होंने दूसरे प्रयास में 84 किग्रा वजन उठाकर मणिपुर की अपनी साथी भारोत्तोलक संजीता पर दो किग्रा की बढ़त बनाई जो अपने पहले दो प्रयास में 80 किग्रा और 82 किग्रा वजन ही उठा सकी। संजीता के 84 किग्रा के तीसरे प्रयास को फाउल करार दिया गया। मीराबाई ने अपनी ऊर्जा बचाना पसंद किया और तीसरे प्रयास के लिए नहीं आईं। क्लीन एवं जर्क में संजीता ने अपने पहले प्रयास में 95 किग्रा भार उठाया।

कार्लसन ने नीमैन पर धोखेबाजी का आरोप लगाया

एजेंसी

शतरंज विश्व चैंपियन मैग्नस कार्लसन ने साथी ग्रैंडमास्टर हेन्स नीमैन पर उन्होंने जितना स्वीकार किया उससे अधिक धोखेबाजी करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि वह ऐसे किसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ नहीं खेलेंगे जो इस तरह के गलत काम में लिप्त हो। कार्लसन ने सोमवार देर रात बयान जारी किया जिससे एक हफ्ते पहले वह जूलियस बेयर जेनरेशन कप में इस अमेरिकी के खिलाफ सिर्फ एक चाल के बाद मुकाबले से हट गए थे। इससे पहले नॉर्वे के 31 साल के कार्लसन नीमैन के खिलाफ हैरान करने वाली हार के बाद सेंट लुई में सिंकफील्ड कप से भी हट गए थे। कार्लसन ने लिखा, ''मेरा मानना है कि नीमैन ने हाल के समय में बहुत अधिक धोखेबाजी की है, जितना उसने

सार्वजनिक तौर पर स्वीकार किया है उससे भी अधिक।'' उन्होंने कहा, ''उसकी प्रगति असामान्य रही है और सिंकफील्ड कप में हमारी बाजी के दौरान मुझे यह अहसास हुआ कि वह बिलकुल भी तनाव में नहीं है और यहां तक कि अहम लम्हों पर खेल पर पूरी तरह से ध्यान भी केंद्रित नहीं कर रहा था। उसने काले मोहरों से खेलते हुए मुझे ऐसे हराया जैसे बहुत कम लोग कर सकते हैं।'' कार्लसन ने कहा, ''इस बाजी से मेरा नजरिया बदल गया।'' नीमैन ने इससे पहले स्वीकार किया था कि उन्होंने 'चेस.कॉम' पर दो बार धोखेबाजी की। एक बार जब वह 12 साल के थे और दूसरी बार जब वह 16 साल के थे। उन्होंने हालांकि मुकाबले के दौरान धोखेबाजी से इनकार किया। कार्लसन ने लिखा,''मेरा मानना है कि शतरंज में धोखा देना एक बड़ी बात है और खेल तथा शतरंज के आयोजकों के लिए एक संभावित खतरा है और उन सभी के लिए जो खेल की पवित्रता की परवाह करते हैं। उन्हें सुरक्षा उपायों और धोखाधड़ी का पता लगाने के तरीकों को बढ़ाने पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।'' विश्व चैंपियन कार्लसन ने स्पष्ट किया कि वह नीमैन के खिलाफ या धोखा देने वाले किसी अन्य खिलाड़ी के खिलाफ खेलने के इच्छुक नहीं हैं।

आशा पारेख दादासाहेब फाल्के अवॉर्ड से सम्मानित

गुज़रे ज़माने की बेहतरीन अदाकारा आशा पारेख को भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार से शुक्रवार को सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने यहां विज्ञान भवन में आयोजित 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में 79 वर्षीय पारेख को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया। वरिष्ठ अभिनेत्री ने कहा कि वह अपने 80वें जन्मदिन से एक दिन पहले यह पुरस्कार पाकर धन्य महसूस कर रही हैं। उन्होंने कहा, " दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करना बहुत बड़े सम्मान की बात है। मेरे 80वें जन्मदिन से ठीक एक दिन पहले मुझे यह सम्मान मिला, मैं इसके लिए आभारी हूं। "

वर्ष 2020 के लिए यह पुरस्कार प्राप्त करने वाली पारेख ने कहा, " यह भारत सरकार से मुझे मिलने वाला सबसे अच्छा सम्मान है। मैं जूरी को इस सम्मान के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं।" भारतीय फिल्म जगत को बेहतरीन स्थान बताते हुए, अभिनेत्री ने कहा कि वह 60 साल बाद भी फिल्मों से जुड़ी हुई हैं। बाल कलाकार के तौर पर अपने करियर की शुरुआत करने वाली पारेख ने कहा, " हमारा फिल्म जगत सबसे अच्छी जगह है। और मैं इस जगत में युवाओं को दृढ़ता, दृढ़ संकल्प, अनुशासन और जमीन से जुड़े रहने का सुझाव देना चाहती हूं, और मैं आज रात पुरस्कार पाने वाले सभी कलाकारों को बधाई देती हूं।" दादा साहेब फाल्के पुरस्कार की पांच सदस्यीय चयन समिति ने सम्मान के लिए पारेख का चयन किया। इस समिति में आशा भोंसले, हेमा मालिनी, पूनम ढिल्लों, उदित नारायण और टीएस नागभरण शामिल हैं। 1960-1970 के दशक में पारेख की शौहरत अभिनेता राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार के बराबर थी। अपने पांच दशक लंबे करियर में अभिनेत्री ने 95 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। इनमें "दिल देके देखो", "कटी पतंग", "तीसरी मंजिल" , 'बहारों के सपने,' 'प्यार का मौसम' और "कारवां" जैसी फिल्में शुमार हैं। उन्होंने 1952 में आई फिल्म "आसमान" से 10 साल की उम्र में एक बाल कलाकार के रूप में अपना करियर शुरू किया था और वह दो साल बाद बिमल रॉय की "बाप बेटी' से चर्चा में आई थीं। पारेख ने 1959 में आई नासिर हुसैन की फिल्म "दिल देके देखो" में मुख्य किरदार निभाया था, जिसमें उन्होंने शम्मी कपूर के साथ अपनी अदाकारी के जलवे बिखेरे थे।

हॉट दिखने के चक्कर में किम कार्दशियन का हुआ बुरा हाल

हॉलीवुड की मशहूर टीवी स्टार किम कार्दशियन अपनी स्टाइलिश और बोल्ड फैशन चॉइस के लिए जानी जाती हैं। उनकी बोल्ड फैशन चॉइस के चाहनेवाले दुनियाभर में मौजूद हैं, जो उन्हें ग्लैमरस कपड़ों में देखने के लिए हर पल तरसते हैं। किम अक्सर अपने ग्लैमरस लुक्स के लिए चर्चा में बनी रहती हैं और अब वह एक बार फिर से इंटरनेट पर सुर्खियां बटोर रही हैं। दरअसल, टीवी स्टार का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें उन्हें डिज़ाइनर गाउन की वजह से चलने में संघर्ष करते देखा जा सकता है। किम के इस वीडियो को देखकर लोग हंस-हंस लोटपोट हो गए हैं। किम कार्दशियन ने कुछ दिनों पहले डोल्से एंड गब्बाना का एक शानदार गाउन पहनकर मिलान फैशन वीक 2022 में हिस्सा लिया। इस ऑउटफिट में टीवी स्टार बेहद ही ग्लैमरस लग रही थीं। लेकिन उनका गाउन हद से ज्यादा टाइट फिटिंग का था जिसकी वजह से उन्हें चलने में दिक्कतों का सामना करना पड़ा। इस दौरान का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसे किम की दोस्त स्टेफ़नी शेफर्ड ने टिकटोक पर शेयर किया है। वीडियो में देखा जा सकता है कि कैसे किम सीढियाँ चढ़ने में संघर्ष कर रही हैं और उनके दो दोस्त उनकी मदद करते नजर आ रहे हैं।

'रामायण' फेम अरुण गोविल को भगवान राम समझकर भावुक हुई महिला, एयरपोर्ट पर छूने लगी पैर

टीवी पर आने वाली रामानंद सागर की रामायण ने लोगों के दिलों में ऐसी जगह बनाई कि आज भी लोग उसे बहुत ही चाव से देखते हैं। आज के किसी भी धारावाहिक से लोग रामायण की तुलना नहीं करते हैं। इसका उदाहरण हम सभी ने लॉकडाउन के दौरान देखा था जब दूरदर्शन पर रामायण को फिर से प्रसारित गिया गया था और दूरदर्शन पर रामायण के 51 मीलियन से ज्यादा व्यूज आये थे। रामायण में अरुण गोविल ने भगवान राम और दीपिका चिखालिया ने माता सीता का किरदार निभाया था। दोनों के किरदार को लोगों ने इतना पसंद किया था कि काफी लोग सच में दोनों को भगवान बनने लगे थे। हाल ही में ऐसा ही उदाहरण एक बार

फिर से देखने को मिला। रामायण में प्रभु राम का किरदार निभाने वाले अरुण गोविल एयरपोर्ट से कही जा रहे थे। उसी दौरान एक महिला ने उन्हें देखा और वह उनसे मिलने के लिए उनके पास चली गयी। महिला अरुण गोविल को देखकर इतनी भावुक हो गयी मानों उसने सच में भगवान राम को देखा लिया हो। महिला से एयरपोर्ट पर ही बड़ी ही श्रद्धा के साथ अरुण गोविल के पैर छूकर उन्हें प्रणाम किया। महिला इस दौरान काफी ज्यादा भावुक नजर आयी। अरुण गोविल ने भी महिला का मान रखा और उसे उठाकर गले से लगाया। ये नजारा वाकई में अद्भुत था. बताया जा रहा है कि अरुण गोविल महाराष्ट्र के संभाजीनगर रामलीला के आयोजन में पहुंचे थे। वो एयरपोर्ट से गुजर रहे थे, तभी उन्हें उनके चाहने वालों से मिलने का मौका मिला।

कई कलाकारों वाली फिल्में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करती हैं : ऋतिक रोशन

ऋतिक रोशन की दो अभिनेताओं वाली फिल्म 'विक्रम वेधा' सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है। ऋतिक का कहना है कि कई कलाकारों के अभिनय से सजी फिल्में उन्हें बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करती हैं। 'विक्रम वेधा' में ऋतिक के साथ सैफ अली खान भी अहम किरदार निभाते नजर आएंगे। इससे पहले, ऋतिक 'मिशन कश्मीर', 'कभी खुशी कभी गम', 'धूम-2', 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' और 'वॉर' जैसी कई कलाकारों वाली फिल्मों में अभिनय कर चुके हैं। 48 वर्षीय अभिनेता ने एक साक्षात्कार में कहा, "मुझे कई कलाकारों वाली फिल्में करना पसंद है। जितना ज्यादा, उतना बेहतर। जैसा कि मैंने 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' और 'वॉर' में किया। और अब मैं सैफ के साथ काम कर रहा हूं। इससे आप बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित होते हैं, क्योंकि आपको शानदार अभिनय देखने को मिलता है।"

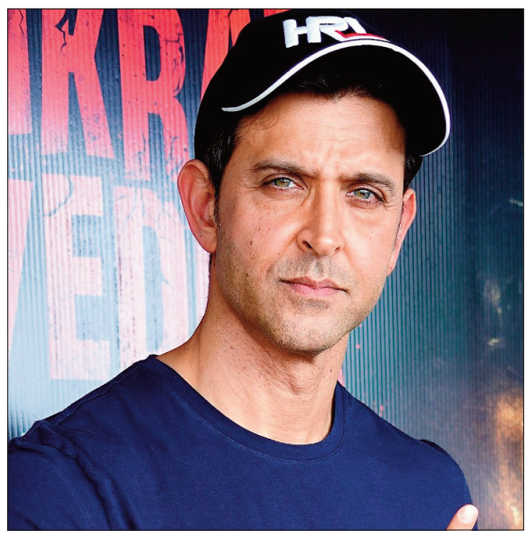

उन्होंने कहा, "जब भी मैंने दो अभिनेताओं वाली या कई कलाकारों के अभिनय से सजी फिल्में की हैं, मेरा अनुभव कहीं बेहतर और मजेदार रहा है।" 'विक्रम वेधा' इसी शीर्षक से बनी सुपरहिट तमिल फिल्म की हिंदी संस्करण है। इसमें ऋतिक खूंखार गैंगस्टर वेधा का किरदार निभाते नजर आएंगे। 2017 में प्रदर्शित मूल फिल्म में राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेता विजय सेतुपति ने वेधा की भूमिका अदा की थी। भारतीय लोककथा 'विक्रम-बेताल' से प्रेरित इस एक्शन फिल्म की कहानी एक सख्त पुलिस अधिकारी विक्रम (सैफ) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो कुख्यात गैंगस्टर वेधा को गिरफ्तार करने के मिशन पर मिशन पर निकलता है। हालांकि, वेधा की गिरफ्तारी के बाद सही और गलत को लेकर उसकी अवधारणा में बदलाव आने लगता है। 'विक्रम वेधा' से पहले ऋतिक 2002 में प्रदर्शित रोमांटिक फिल्म 'न तुम जानो न हम' में ऋतिक के साथ स्क्रीन साझा कर चुके हैं। ऋतिक ने कहा, "सैफ हमेशा से 'रियल' रहे हैं। उन्होंने कभी ऐसा बनने की कोशिश नहीं की, जो वह हैं नहीं। जब बाकी कलाकार हीरो बनने की कोशिश कर रहे थे, उस 'स्वैग' को हासिल करने की कोशिशों में जुटे थे, तब सैफ 'रियल' सैफ ही बने रहे।" पुष्कर और गायत्री द्वारा निर्देशित 'विक्रम वेधा' शुक्रवार को प्रदर्शित होगी। इसमें ऋतिक और सैफ के अलावा राधिका आप्टे, रोहित सराफ और योगिता बिहानी भी अहम किरदार निभाते नजर आएंगे।

बर्थडे पार्टी से छोटी ड्रेस में मौनी रॉय का ग्लैमरस लुक वायरल, कातिलाना अदाओं से अभिनेत्री ने लूटी महफिल

अभिनेत्री मौनी रॉय, टेलीविज़न के छोटे पर्दे से लेकर बॉलीवुड की सिल्वर स्क्रीन तक अपनी एक्टिंग का परचम लहरा चुकी हैं। हाल ही में अभिनेत्री सुपरहिट फिल्म 'ब्रह्मास्त्र' में नजर आई थीं, जिसमें उन्होंने शानदार अभिनय किया। फिल्म में उनकी एक्टिंग देखकर हर कोई हैरान रह गया और सोशल मीडिया पर उनकी जमकर प्रशंसा की गई। करियर की नयी उच्चाईयों को छूने वालीं मौनी रॉय ने बीते दिन यानी 28 सितंबर को अपना 37वां जन्मदिन मनाया। जन्मदिन के ख़ास मौके पर अभिनेत्री अपने पति के साथ बीती रात मुंबई में पार्टी करती नजर आईं। इस दौरान वह बड़ी ही ग्लैमरस ड्रेस पहनें मीडिया के कैमरों में कैद हुईं, जिसमें

मौनी काफी सेक्सी लग रही थीं। अभिनेत्री के सेक्सी लुक ने फैंस के होश उड़ा दिए है और अब वह सोशल मीडिया पर जमकर चर्चा बटोर रही हैं। ब्रह्मास्त्र की ग्रैंड सक्सेस के बाद मौनी रॉय ने अपने पति सूरज नाम्बियार के साथ मिलकर 28 सितंबर की रात को बर्थडे की ग्रैंड पार्टी की। अभिनेत्री की ग्रैंड बर्थडे पार्टी में टेलीविज़न के कई नामी चेहरे शामिल हुए। इस दौरान मौनी व्हाइट कलर की मिनी ड्रेस पहने नजर आईं, जिसमें वह काफी हॉट और सेक्सी लग रही थीं। सेक्स लुक के साथ अभिनेत्री की कातिलाना अदाओं ने फैंस के दिल धड़कानें में कोई कसर नहीं छोड़ी। बर्थडे पार्टी की कई वीडियो और तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। तस्वीरों और वीडियो पर कमेंट कर कई लोग मौनी को जन्मदिन की बधाईयां देते नजर आए तो कुछ उनके हुस्न की तारीफ करते दिखाई दे रहे हैं। वर्क फ्रंट की बात करें तो मौनी रॉय गणपथः पार्ट वन में अतिथि भूमिका निभाएंगी। इसके अलावा उन्होंने संजय गुप्ता के स्पोर्ट्स ड्रामा फिल्म भी साइन की है, जिसमें वह हर्षवर्धन राणे और मिजान जाफरी के साथ मुख्य भूमिका निभाएंगी। फिल्मों के अलावा अभिनेत्री वेब शो में भी दिखाई देंगी। यह वेब शो अर्नब रे की किताब सुल्तान ऑफ़ डेल्हीः एसेंशन पर आधारित है, जिसमें ताहिर राज भसीन और नेहा शर्मा भी हैं।

सलमान खान के बॉडी डबल का हुआ निधन, भावुक पोस्ट लिखकर दी श्रद्धांजलि

बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान ने अपने बॉडी डबल (सितारों के स्थान पर एक्शन दृश्य करने वाले कलाकार) सागर पांडे को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके लिए एक भावुक पोस्ट लिखी है। मीडिया में प्रकाशित खबरों के मुताबिक, पांडे की शुक्रवार को मुंबई के एक जिम में दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई थी।

वह 'बजरंगी भाईजान', 'ट्यूबलाइट' और 'दबंग' सहित कई अन्य फिल्मों में सलमान के बॉडी डबल के रूप में काम कर चुके थे। खबरों के अनुसार, दिल का दौरा पड़ने के बाद पांडे को पास के एक अस्पताल में ले जाया गया था, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। सलमान ने 2015 में प्रदर्शित फिल्म 'बजरंगी भाईजान' के सेट पर पांडे के साथ खिंचवाई गई एक तस्वीर साझा कर उन्हें याद किया। उन्होंने तस्वीर के साथ लिखा, "मेरे साथ रहने के लिए आपका दिल से शुक्र अदा कर रहा हूं। ऊपरवाला आपकी आत्मा को शांति दे सागर भाई।

शुक्रया सागर पांडे।" अभिनेता अनुपम खेर और रॉनित रॉय, अभिनेत्री संगीता बिजलानी सहित कई अन्य हस्तियों ने सलमान के पोस्ट पर प्रतिक्रिया देते हुए पांडे की मौत पर शोक जताया।

सबसे ज्यादा फीस लेने वाली एक्ट्रेस थी आशा पारेख

1960 और 70 के दशक का फैशन आइकन, गुज़रे ज़माने की बेहतरीन अदाकारा आशा पारेख को भारतीय सिनेमा के सबसे बड़े सम्मान 'दादा साहेब फाल्के' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू ने यहां विज्ञान भवन में आयोजित 68वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार समारोह में 79 वर्षीय आशा पारेख को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया। वरिष्ठ अभिनेत्री ने कहा कि वह अपने 80वें जन्मदिन से एक दिन पहले यह पुरस्कार पाकर धन्य महसूस कर रही हैं। आशा पारेख मासूम चेहरे वाली बॉलीवुड की वेटरन एक्ट्रेस हैं। जिन्होंने कई दशकों तक हिंदी फिल्म सिनेमा पर राज किया है। आज भी उनके कई चाहने वाले हैं जो उनकी एक झलक पाने के लिए तरसते हैं। लेकिन अब वह फिल्मों से दूर हैं। आशा पारेख ने ढेर सारी हिंदी फिल्में दी हैं।

जिन्हें पद्म श्री पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है और आज भी लोग उनके कायल हैं। आइए आपको बताते हैं आशा पारेख के बचपन के किस्से। आशा पारेख ने 60-70 के दशक में बहुत सारी फिल्में कीं। उनका जन्म 2 अक्टूबर 1942 को गुजरात में हुआ था। उन्होंने छोटी उम्र में ही इंडस्ट्री में काम करना शुरू कर दिया था। दस साल की उम्र में, उन्होंने फिल्म माँ में एक बाल कलाकार के रूप में काम करना शुरू कर दिया था। हालांकि बतौर एक्ट्रेस उनकी पहली फिल्म 'दिल दे के देखो' (आशा पारेख डेब्यू) थी। इसके बाद उन्होंने बैक टू बैक कई फिल्मों में काम किया और एक समय ऐसा आया कि वह इंडस्ट्री में सबसे ज्यादा फीस लेने वाली हीरोइन बन गईं। वैसे आशा पारेख अभी भी कुंवारी हैं। लेकिन उनका नाम आमिर खान के चाचा नासिर हुसैन के साथ कई बार जुड़ा था। आशा पारेख ने एक बार निर्देशक नासिर हुसैन के साथ अफेयर पर दिल खोलकर बातचीत की थी। उन्होंने बताया था कि वह नासिर से प्यार करती थी लेकिन वह कभी नहीं चाहती थी कि नासिर हुसैन अपने परिवार से अलग हो जाए या उनकी शादी में किसी तरह की परेशानी आए। इसलिए मैंने कभी शादी नहीं की। लव लाइफ का ज़िक्र आशा पारेख ने खालिद मोहम्मद की बायोग्राफी द हिट गर्ल में भी किया है। उन्होंने यह भी कहा है कि कपल ऊपर से आते हैं। लेकिन मेरे मामले में भगवान जोड़ी बनाना भूल गए और मैं कभी शादी नहीं कर सकी। 1960-1970 के दशक में पारेख की शौहरत उस दौर के अभिनेता राजेश खन्ना, राजेंद्र कुमार और मनोज कुमार के बराबर थी। अपने पांच दशक लंबे करियर में अभिनेत्री ने 95 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। इनमें 'दिल देके देखो', 'कटी पतंग', 'तीसरी मंजिल', 'बहारों के सपने', 'प्यार का मौसम' और 'कारवां' जैसी फिल्में शुमार हैं। उन्होंने 1952 में आई फिल्म 'आसमान' से 10 साल की उम्र में एक बाल कलाकार के रूप में अपना करियर शुरू किया था और वह दो साल बाद बिमल रॉय की 'बाप बेटी' से चर्चा में आई थीं।

स्वामित्व, मुद्रक, प्रकाशक एवं RNI No. DELHIHIN/2010/37009 संपादक मो हनीफ द्वारा अरावली प्रिंटर्स -WA30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली से मुद्रित करवाकर, जी-12/276 , संगम विहार, नई दिल्ली-62 से प्रकाशित। फोन:8888883968, 9811111715 किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली न्यायालय में ही होगा।